संरक्षक सदस्य

श्रीमहन्त पू. स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती, श्रीमहन्त विद्यानंद सरस्वती, स्वामी रविन्द्रानन्द सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, श्री प्रवीन अग्रवाल, श्री अनिल चौधरी, श्री बी.एन. तिवारी, डॉ. संजय सिन्हा, श्री नरेन्द्र सोमानी, श्री आर.के. सिंह, श्री प्रशान्त सोमानी, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शशिधर सिंह, श्री ब्रजकिशोर सिंह, डॉ. संजय पासवान (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), स्वामी विवेकानन्द,

प्रधान सम्पादक/संस्थापक

महामंडलेश्वर

डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रबन्ध सम्पादक - प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

कार्यकारी सम्पादक - **श्री प्रेमशंकर ओझा**

सम्पादक मण्डल - शत्रुघ्न प्रसाद, बालकृष्ण शास्त्री, श्रीमती राखी सिंह, अभिजीत तुपदाले, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. हरेश प्रताप सिंह, श्री कुलदीप श्रीवास्तव, डॉ. सुखेन्दु कुमार, दिनेशचन्द्र शर्मा

आवरण सज्जा - आनन्द शुक्ला

व्यवस्था मण्डल - श्री वीरेन्द्र सोमानी, श्री संजय अग्रवाल, राजेन्द्र प्र. अग्रवाल (मथुरा वाले), श्री सुभाषचन्द्र त्यागी, श्री गोपाल सचदेव, श्री रविशरण सिंह चौहान, श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, श्री राजनारायण सिंह, श्री अश्विनी शर्मा, श्री सुरेश रामबर्ण (मॉरीशस)

वित्तीय सलाहकार - श्री वेगराज सिंह

विधि सलाहकार - श्री अशोक चौबे

परामर्श एवं सहयोग-श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री श्यामबाबू गुप्ता, श्री शिलेश्वर मानिकतला, श्री नरेन्द्र वाशनिक (निक्की), श्रीमती नैना बेनबीड़ीवाला

विज्ञापन व्यवस्था - श्री दयाशंकर वर्मा

प्रमुख संवाददाता - श्री मोहन सिंह

(प्रकाशन में लगे सभी व्यक्ति अवैतनिक है)

मूल्य - 25/-

वार्षिक चन्दा - 300/-

आजीवन - 5000/-

दिल्ली सम्पर्क सूत्र : 305-308, **प्लाट नं.** 9, **विकास सूर्या गैलेक्सी, सेक्टर-**4, **सेन्ट्रल मार्केट, द्वारका, नई दिल्ली-**110075

मोबाईल +91-8010188188

सम्पर्क सूत्र :

महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)

फोन- 01334-2626 00, मोबाइल-09897034165

E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com, swamiumakantanand@gmail.com

शाश्वत ज्योति

शाश्वत दर्पण

- **अर्न्तमन से** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज 2
- **पाठकों के अनुभव** 3
- शिव कथा- **अविरल अमृत प्रवाह** ❑ म.म.स्वामी जी महाराज 4
- गीता काव्य- **गीता महिमा** ❑ माधव पाण्डेय निर्मल 12
- इतिहास-संस्कृति-**सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय** ❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता 13
- ऐतिहासिक-**ये हैं प्रभु श्रीराम के वंशज जो आज भी जिंदा हैं** ❑ अनिरूद्ध जोशी..... 17
- आयुर्वेद-**घरेलू शाक व स्वास्थ्य सृजन** ❑ वैद्य दीपक 19
- ऋषि चिन्तन-**धन के लिए परेशान हर व्यक्ति को पढ़ना चाहिए ये 6 मंत्र** ❑ आचार्य श्रीराम शर्मा 22
- ज्योतिष शास्त्र-**पसंदीदा रंग के अनुसार जानिए स्वभाव से जुड़ी खास बातें** ❑ कौशल पाण्डेय (ज्योतिष) ... 23
- सुविचार-❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज ... 25
- इतिहास-**भारत का इतिहास किसने सबसे पहले भारत पर आक्रमण किया** ❑ साभार 26
- आयुर्वेद दोहे- ❑ साभार 29
- आत्म शक्ति- **दुख एवं नुकसान का मुकाबला कैसे करें मानसिक स्वास्थ्य** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी 30
- सच्चा इतिहास-**इस मंदिर में मूर्तियों से निकलती हैं आवाजें, वैज्ञानिकों ने जांच की और.** ❑ साभार 33
- पौराणिक -**एक राक्षस 'गयासुर' के कारण गया बना है मोक्ष स्थली** ❑ प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल 34
- कहानी- **दो तानाशाह** ❑ देवेन्द्र कुमार मिश्रा 35
- ऐतिहासिक गाथा-**कालयवन को नहीं मार सकते थे श्री कृष्ण तब कैसे मरा यह म्लेच्छ प्रमुख?** ❑ अनिरूद्ध जोशी 37
- रपट-**सामाजिक सरोकार और युवाओं की भूमिका** ❑ उमाशंकर मिश्र 39
- जानकारी-**बगदाद को बसाया था भगदत्त ने?** ❑ साभार..... 44
- **प्रकृति के नियम हॅपी थॉट** ❑ सुरेश मेहरा 44
- प्रेरक प्रसंग-**एक राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ती के लिये आशा लगाये बैठा थौ** ❑ बृजेश सिंह 45
- मर्म स्पर्शी-**बेइज्जती का बदला लेने के लिए इस शख्स ने बना दी थी ये सुपर कार** ❑ साभार 46
- **व्रत त्यौहार** 48

स्वामित्व-डिवाइन श्रीराम इण्टरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक- डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती द्वारा माँ गायत्री ऑफसेट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड) से मुद्रित तथा आदर्श आयुर्वेद फार्मेसी कनखल, हरिद्वार से प्रकाशित। साज सज्जा: स्वामिनारायण प्रिंटर्स, फोन- 09560229526, 011-45076240

अंतर्मन से.....

आत्मीय पाठकों/भक्तों,

जो परमात्मा का स्वरूप है वही आत्मा का स्वरूप होता है। सत्-चित्-आनन्द। इसीलिये उसे सच्चिदानन्द कहा जाता है। यहाँ हम आपसे आत्मा के केवल सत् स्वरूप और उसकी प्राप्ति पर चर्चा कर रहे हैं। परमात्मा को भागवत् महापुराण में सत्य ही माना गया है। इसीलिये कहा गया है-सत्य परम धीमहि- परमात्मा सत्य है। जब परमात्मा सत्य है तो इसका अर्थ है-जीवात्मा भी सत्य है। जब हम सत्य स्वरूप ही है तो पाना किसको है? और पहुँचना कहाँ है?

वास्तव में प्रभु के इस लीला भूमि जगत में जीव के प्रवेश करते ही माया या यूं कहें जगत प्रपंच का आवरण जीव के ऊपर छा जाता है जिसके कारण वह आत्मस्वरूप को भूलकर एक झूठे भ्रमजाल में फंसकर एक काल्पनिक स्वरूप को अपना स्वरूप मानने लगता है। संसार में चीजें बहुत सारी जीव के अनुकूल और प्रतिकूल दिखाई पड़ती है। परन्तु ये जो मायावी भ्रम जंजाल है वो विचारों का है, जिसे हम विकृत विचारों के तरंगों का आवरण कह सकते हैं।

चाहे व्यक्ति कितनी भी साधना-तपश्चर्या कर ले परन्तु जब तक विकृत चिन्तन से मुक्ति नहीं मिलती तब तक वह अपने स्वरूप को नहीं पहचान सकता और इसे हटाने का तरीका है सत्चिन्तन, सद्चेतन के द्वारा आत्म स्वरूप की ओर एक सही दिशा निर्देश मिलती है। असद्चिन्तनों से छुटकारा मिलता है। फिर अन्ततः सद्चिन्तन का भी त्याग करना पड़ता है।

इसी सद्चित्त के मार्ग पर बढ़ने को सत्संग कहा जाता है। सत्संग का मतलब है-उत्कृष्ट विचारों और उदात्त भावनाओं का सान्निध्य। सत्संग की स्वभाविक परिणति विवेक का जागरण है। गोस्वामी जी महाराज ने लिखा है- 'बिनु सत्संग विवेक न होई' -सामान्यतया हमारा मन कई छद्म विश्वासों, मान्यताओं और ग्रन्थियों का पिटारा है। हमारे विचार मन के इन्हीं वर्तुलों में चक्कर काटते रहते है। इसी कारण हमारी चेतना इनसे उपजी अनगिनत ग्रन्थियों से बंधी रहती है। इनसे मुक्त होने के लिये हमें किसी आध्यात्मिक चिकित्सक, मानवीय प्रकृति के ज्ञान में निष्णात सन्त, योगी के सम्पर्क की आवश्यकता होती है। ऐसे संतों द्वारा बोले गये वचन, संप्रेषित विचार व भावनाएं हमारे मन को जड़ता, प्रमाद कुवृत्तियों से मुक्त करने में सहायक होते है। इनकी संगति से जहाँ पुराने विषम संस्कार दूर होते है। वहीं सात्विक संस्कार बढ़ते जाते है। मन शुद्ध और अन्तःकरण पवित्र और शीतल हो जाता है।

जिस भी सन्त-महात्मा के सान्निध्य में हमें अच्छा लगता है, शान्ति महसूस होती है वही हमारे लिये अनुकूल है। सन्त तो सभी महान होते हैं परन्तु हमारी प्रकृति के अनुकूल न होने से हम उनके प्रति ग्रहणशील नहीं होते और उनके शुभ प्रभाव को ग्रहण नहीं कर पाते। अतः अपने अनुकूल श्रेष्ठ संत के सम्पर्क में रहना और उनके विचारों को धारण करना चाहिये।

अच्छा संग न केवल व्यक्ति के चेतन बल्कि अवचेतन में भी परिवर्तन लाता है। कई नए आयाम व क्षितिज खुलते है। नई-नई प्रेरणाएं मिलती है। जिससे हमारा समग्र दृष्टिकोण बदल जाता है। हम जीवन को नये अर्थों व नई सम्भावनाओं के साथ देखने लगते है। धीरे-धीरे हमारी अपनी सत्ता अपने अस्तित्व के प्रति सोच-समझ बदलने लगती है। जाग्रत-विवेक जीवन को नई दिशा देता है।

स्वामी शिवानन्द ने अपनी पुस्तक 'मन रहस्य और निग्रह' में लिखा है कि मन का स्वभाव और स्वरूप को जाने बिना आप उसका संयम नहीं कर सकते। अतः आवश्यक है कि सात्विक मनुष्यों की संगति की जाय और नीच मनुष्यों की संगति से बचा जाय।

प्राचीन यूनान में भी सत्संग का प्रचलन था। प्लेटो की पुस्तकों का आधार प्रायः महात्मा सुकरात के प्रवचन रहे हैं. एपीक्यूरस डेमोक्रिटस, डायेजिनिस आदि सभी के दार्शनिक सूत्र प्रायः उनके द्वारा सत्संग में दिए उद्बोधन मात्र हैं। ग्रीक सन्तों को फिलासकर्स कहा जाता है या जिसका अर्थ होता था सत्य के प्रेमी। सुकरात के सत्संग ने अनेकानेक लोगों के जीवन में ऐतिहासिक परिवर्तन लाकर एथेन्स में क्रान्ति ला दी थी। ईसामसीह के सत्संग में अनपढ़ मछुवारों, उच्चवर्ग द्वारा उपेक्षित गड़रियों को युगपुरुष, महामानव बना दिया। बाईबिल में इस तरह के परिवर्तन की अनेकों कथाएं पढ़ी जा सकती है।

महापुरुषों के विचारों को यदि पूरी श्रद्धा, विश्वास एवं हृदय की गहराइयों से पढ़ा जाय तो धीरे-धीरे हमारी चेतना उस महान व्यक्तित्व से जुड़ने लगती है। फिर तो वह महान व्यक्ति ही हमारी उंगली पकड़कर उस परमात्मा तक पहुँचा देता है। ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं, जहाँ सत्य तथ्य बनकर प्रकट हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी देह छोड़ने के वर्षों बाद श्री अरविन्द को अतिमानस के रहस्य से अवगत कराया था। ईसा मसीह के देह त्यागने के लगभग ढाई सौ वर्ष बाद सेटपाल ने उनके विचारों को पूरी श्रद्धा से अपनाकर प्रभु यीशु का साहित्य ही सत्संग जीवन का आधार है। लक्ष्य प्राप्ति का मूल आधार सत्संग ही है। अतः चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हो सत्संग के लिये अवश्य समय निकालना चाहिये।

स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती

(स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती)

पाठकों के अनुभव

शीला झा जी लगभग 11 साल से मैं गुरु जी से जुड़ी हुई हूं और शाश्वत ज्योति पत्रिका का अध्ययन कर रही हूं यह पत्रिका नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है एवं भूले-भटके राही को मार्गदर्शन करती है अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर जाती है एवम व्यक्ति की दशा एवं दिशा में उजाला लाती है

-शीला झा

बी-12, जगत अमरावती अपार्टमेन्ट,
बेली रोड, पटना,

विगत 8 वर्षों से मैं शाश्वत ज्योति का अध्ययन कर रहा हूं हमारे पास बहुत प्रकार की संसारिक बुराइयां थी इस पत्रिका के सान्निध्य में आकर हमारा जीवन बदल गया गुरुदेव महामंडलेश्वर स्वामी उमाकांतानंद महाराज जी का पावन सान्निध्य मिला जीवन धन्य है आज हर प्रकार से हमारा परिवार संतुष्ट है

नीलम विश्वकर्मा

जोड़ापोखर सुंदरपुर पोस्ट जेल गोरा
जिला धनबाद, झारखंड पिन कोड

पहली बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमारी अपनी शाश्वत ज्योति के बारे में कुछ लिखने के लिए। इस पत्रिका के बारे में जितना लिखु मेरे शब्द कम है। हम बड़े किस्मत वाले है जो इस पत्रिका को पाने का हमें भी गुरुजी ने अवसर दिया है। इतनी ज्ञान की बातें कहा मिलती है। आज की पत्रिकाओं में जिन्दगी को कैसे जीआ जाए और परेशानी आए तो उनसे कैसे लड़ा जाय। ये सीख इस पत्रिका से मिलती है। जब से हम गुरुदेव के सम्पर्क में आए है। तब से हमारे परिवार का जीने का नजरिया ही बदल गया है। गुरुदेव से जितना हमें मिला मैं उसको पूरी तरह से शब्दों में बया नहीं कर सकती। हम लोग गुरुदेव के आभारी है।

-मोनिका सिंह

आर. 152, नेहरू इनक्लेव,
गोमती नगर, लखनऊ

पत्रिका संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान के लिए सम्पर्क करें।

***बृजेश सिंह*, हरिद्वार**

मोबाइल नं.

9557509556

सर्वप्रथम परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में शीश नवाता हूँ।

शाश्वत ज्योति पत्रिका हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह पत्रिका हमें हमारे जिम्मेदारियों का एहसास दिलाती है कि मानव जीवन का उद्देश्य क्या है। गुरुदेव के द्वारा लिखा हुआ प्रत्येक अंक का संपादकीय 'अंतर्मन' से हमें नई ऊर्जा प्रदान करती है। मेरा मानना है कि मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन हमारे विचारों को उत्कृष्ट बनाता है, जिससे हम अपने व्यक्तित्व एवं समाज का सृजन अच्छे से करने की प्रेरणा मिलती है। मेरा मानना है कि मेरे जीवन को सार्थक बनाने में गुरुदेव के द्वारा प्रकाशित शाश्वत ज्योति पत्रिका का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है।

सादर धन्यवाद ।

-1मुकेश कुमार सिंह

अध्यक्ष
विलेज डेवलपमेंट फाउंडेशन,
राष्ट्रीय एन.जी.ओ.
प्लैट नं. 1102,
हाईलैण्ड अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं. 22, सेक्टर-12,
द्वारका, नई दिल्ली-78

अविरल अमृत प्रवाह

-महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

गतांक से आगे

शिव का सुन्दर स्वरूप दर्शन

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उस समय मैंने ही तुमको तथा विष्णु को शंकर के पास भेजा। तुम वहाँ जाकर उनकी स्तुति करने लगे। अन्तर्यामी भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर एवं अद्भुत स्वरूप बनाकर आपको दर्शन दिए। तब आप प्रसन्न होकर मैना के पास भागते आये। आकर मैना से बोले-हे मैनाजी! अब चलकर भगवान् शंकर के दर्शन करो। कितने सुन्दर एवं उत्तम स्वरूप हैं। अभी वह आपके घर ही आ रहे हैं। यह सुनकर हिमाचल की रानी आपको साथ लेकर वहाँ गई। तब मैना को परम आनन्ददायक शिव के दर्शन हुए। वे करोड़ों सूर्य के समान प्रकाशवान, अंग-उपांगों से सुन्दर, भड़कीले वस्त्र तथा रत्नजटित आभूषण धारण किए हुए, सुन्दर मुख, कमल से मन्द-मधुर मुस्कान करते हुए, श्वेत वर्ण के शरीरवाले, प्रसन्नचित्त, सुन्दर वृषभ पर सवार होकर आ रहे हैं। उनके विशाल मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित है। विष्णु आदि देवता सेवा करते आ रहे हैं। सूर्य ने उनके सिर पर छत्र धारण कर रखा है। चन्द्रमा आभूषणों को शोभित कर रहा है। गंगा, यमुना चँवर ढुला रही हैं। इस प्रकार पधारते हुए भगवान् शंकर के पीछे सुन्दर

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उस समय मैंने ही तुमको तथा विष्णु को शंकर के पास भेजा। तुम वहाँ जाकर उनकी स्तुति करने लगे। अन्तर्यामी भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर एवं अद्भुत स्वरूप बनाकर आपको दर्शन दिए। तब आप प्रसन्न होकर मैना के पास भागते आये।

एवं अनेकों रूपों वाले गण, सिद्ध, मुनि, देवता जय-जयकार करते आ रहे हैं। विश्वावसु अप्सराओं के साथ शिव के आगे गाते हुए चल रहे हैं।

ब्रह्माजी बोले-तब तो मैना चित्र लिखित-सी होकर क्षणभर अवाक् हो गई। फिर बोलीं-हे मेरी पुत्री पार्वती! धन्य हो, धन्य हो! तुम्हारे तप के प्रताप से परम कल्याणकारी सदाशिव मेरे घर पधारे हैं। हे भगवान् शंकर! मैं बहुत ही अपराध कर बैठी हूँ। आपकी अतिशय निन्दा की है। आप मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे क्षमा करें।

हे नारदजी! उस समय पुर-निवासिनी स्त्रियाँ सभी की सभी घर के कामों को छोड़कर बाहर निकल आईं। चक्की पीसनेवाली ने चक्की छोड़ दी, पति की सेवा में लगी हुई पति की सेवा छोड़कर भाग आई। कोई-कोई तो दूध पीते हुए बच्चे को छोड़कर भाग आई। बछड़ा बाँधते हुए किसी ने बछड़ा भी न बाँधा। इसी प्रकार के आवश्यक कार्यों को छोड़कर भगवान् शिव के दर्शन के लिए दौड़ आईं। भगवान् शंकर का दर्शन करते ही सबकी सब मोहित हो गईं। तब शिव की सुन्दर मूर्ति हृदय में धारण करके आपस में बोलीं-हे सखियों! आज हिमाचलपुर में रहनेवाले नर-नारियों के नेत्र सफल हैं एवं जन्म भी आज सफल है। हे पार्वतीजी! तुम्हारे भाग्य धन्य हैं। तुम्हारा जप करना भी धन्य है। साक्षात् भगवान् शंकर की पत्नी बन रही हो।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इस प्रकार पुर की निवासिनी सभी स्त्रियों ने चन्दन एवं चावलों से कल्याणरूप भगवान् का पूजन किया और फूलों की भगवान् पर वर्षा करने लगीं।

वर-आगमन वर्णन

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इसके बाद भगवान् शंकर सबको आनन्दित करते हुए गण, देवता, सिद्ध-मुनियों के साथ हिमाचल के घर के निकट पहुँच गये। इधर मैना भी सभी स्त्रियों के साथ मिलकर झटपट घर आ गई। तब भगवान् शंकर के लिए आरती सजाने लगी। आरती सज गई। स्त्रियों के साथ मिलकर द्वार पर आई। भगवान् शंकर पहुँच गये। उस समय उनकी शोभा करोड़ों कामदेवों के समान थी।

शिव ने प्रथम पार्वती के बताए हुए स्वरूप को मैना को दिखाया। प्रेम से मैना ने आरती की। आरती की रीति करके आनन्दपूर्वक मैना भीतर चली गई। लड़कियाँ महेशजी की शोभा देखकर बोलीं-सखियों इस प्रकार सुन्दर वर तो हमने किसी के भी विवाह में नहीं देखा। पार्वतीजी धन्य हैं, जिनको सुन्दर पति प्राप्त हो रहा है। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उस समय हिमाचल के घर आनन्द ही आनन्द था। उसके बाद श्रीमहादेवजी के साथ आये हुए सभी बारातियों को उपयुक्त स्थान रहने के लिए दिए गये। फिर हिमाचल अपने घर पहुँचे। उसके बाद जगत की माता श्रीपार्वतीजी सभी देवताओं को पूजने के लिए घर से बाहर चलीं। श्रीपार्वतीजी के दर्शन कर समस्त देवताओं ने सिर झुकाकर नमस्कार की। भगवान् शंकर ने भी पार्वतीजी को देख लिया। उन्हीं को श्रीपार्वतीजी साक्षात् सती के रूप में दिखाई दीं। उधर श्रीपार्वतीजी कुल देवों का पूजन कर ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ लौटकर घर आ गईं।

शिव-हिमगृह-गमन

ब्रह्माजी बोले-अब शैलराज ने वेद-मन्त्र द्वारा शंकर का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया, जिसमें विष्णु आदिक सब देवता और मुनि कुतूहलपूर्वक सम्मिलित हुए। इसके बाद शिवजी के दिए हुए भूषणों से पार्वतीजी को अलंकृत कराया गया और शंकर-प्रिया ने निर्मल वस्त्र धारण किए। त्रिजगद्धात्री ने मन में भगवान् शंकर का ध्यान किया। दोनों ओर आनन्दवर्द्धक

भगवान् शंकर सबको आनन्दित करते हुए गण, देवता, सिद्ध-मुनियों के साथ हिमाचल के घर के निकट पहुँच गये। इधर मैना भी सभी स्त्रियों के साथ मिलकर झटपट घर आ गई। तब भगवान् शंकर के लिए आरती सजाने लगी। आरती सज गई। स्त्रियों के साथ मिलकर द्वार पर आई। भगवान् शंकर पहुँच गये। उस समय उनकी शोभा करोडों कामदेवों के समान थी।

उत्सव होने लगे। ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के दान दिए गये तथा और भी याचकों को दान दिया गया। गीत-वाद्य के उत्सव मनाए गये। सभी देवता भक्तिपूर्वक शिव और पार्वती को प्रणाम कर हिमाचल की आज्ञा से अपने-अपने आसन पर बैठ गये।

तब ज्योतिषाचार्य गर्गजी ने पर्वतराज हिमाचल से कहा कि हे धराधीश हिमाचल! हे काली के पिता! अब तुम पाणिग्रहण के लिए शंकरजी को अपने घर में ले आओ। कन्यादान का यही उचित समय है। पर्वतराज ने ब्राह्मणों को भेजकर शिवजी को अपने घर में बुलाया। बाजे बजने लगे। वेद-ध्वनि और गीत तथा नृत्यादिकों से उत्सव होने लगा। उसी समय हर्ष से देवताओं सहित कन्यादान का समय जानकर शिवजी अपने वृषभ पर बैठ यज्ञ-मण्डप में आये। पर्वतोत्तम ने वृष से शंकरजी को गृह में प्रवेश कराया। फिर सब देवताओं को प्रणाम एवं उनका सम्मान कर आँगन में रत्नजटित सिंहासन पर बिठाया। ब्राह्मणियों तथा अन्य पुरन्ध्रियों के साथ मैना ने हर्षपूर्वक उनका नीराजन कर मधुपर्क दिया। पुरोहित ने मांगलिक कृत्य कराये।

इधर शिवजी की ओर से लग्न को देख वृहस्पतिजी ने कन्यादान का परमोत्सव आरम्भ किया। उधर से शुभ घड़ी को विचार कर एक घड़ी रात शेष रहने पर गर्गजी ने प्रणव भाषण किया। पुण्याह-वाचन कर पार्वती के हाथ में चावलों की अंजलि दी जिसे भगवती ने शिवजी के ऊपर धारण किया तथा पार्वती ने दधि, अक्षत, कुश और जलों से परम मोद और रुचिपूर्वक लोकाचार किया। उभय पूजन से वहाँ एक परम शोभा छा गई। लक्ष्मी आदि स्त्रियों ने विशेष रूप से नीराजन (आरती आदि मांगलिक कृत्य) किया। फिर शिवा शंकर को और शंकर पार्वती को देखते हुए बड़े ही आनन्दित हुए।

शिव को हिमाचल का कन्यादान

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उसके बाद कन्यादान का समय हुआ। गर्गजी ने हिमाचल एवं मैना से कहा। पर्वतराज की पत्नी अलंकृत होकर स्वर्ण कलश लिए हिमाचल की बाईं ओर आकर बैठ गईं तब हिमाचल ने शिव को वस्त्राभूषण देकर पूजन करके ब्राह्मणों से कहा-हे ब्राह्मण देवताओं! समय हो गया। अब संकल्प आदि कराइए। इतना सुनकर ब्राह्मण लोग संकल्प पढ़ने लगे।

हिमाचल ने सदाशिव से कहा-हे शम्भो! आप अपना गोत्र, प्रबर, कुल, नाम, वेद, शाखा आदि सब कुछ ब्राह्मणों को कह दें जिससे यह संकल्प में पढ़ें। यह सुनकर महादेवजी तो विचार में पड़ गये। श्रीमहादेवजी को चुप हुआ देखकर ऋषि हँसने लग गये। तब हे नारदजी ! तुम भगवान् शंकर की प्रेरणा से वीना बजाने लगे। इसमें हिमाचल ने रोका भी नहीं। तब हे नारदजी! तुमने हिमाचल से कहा-हे हिमाचल ! आप क्या मूढ़ता कर रहे हो? भगवान् शंकर से गोत्र आदि पूछते हो। इसमें इनका अपमान है। उनका गोत्र कुल आदि ब्रह्मा-विष्णु आदि भी नहीं जान सकते, दूसरा कोई क्या जानेगा? यह तो अपनी इच्छा से अनेकों लीलाएं करने के लिए अवतार धारण किया करते हैं उनका गोत्र, कुल क्या होगा? हे हिमाचल! अब तो जो कुछ भी हैं कुलीन हैं तो, अकुलीन हैं तो, तुम्हारी कन्या पार्वती के पति ही बन गये हैं। जब भगवान् शंकर ने अपना रूप लिंग का बनाया था, तब इनके मस्तक को कोई नहीं देख सका। ब्रह्माजी उसका आदि देखने को ऊपर तथा विष्णु अन्त देखने को नीचे की तरफ चले गये। किन्तु बहुत-सी खोज करने पर भी पता न लगा सके। अतएव इनका गोत्र-कुल तो नाद ही है। शिव स्वयं नादमय हैं और नादमय स्वयं शिव हैं। इन दोनों में कोई भेद नहीं।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उसके बाद कन्यादान का समय हुआ। गर्गजी ने हिमाचल एवं मैना से कहा। पर्वतराज की पत्नी अलंकृत होकर स्वर्ण कलश लिए हिमाचल की बाईं ओर आकर बैठ गईं तब हिमाचल ने शिव को वस्त्राभूषण देकर पूजन करके ब्राह्मणों से कहा-हे ब्राह्मण देवताओं! समय हो गया। अब संकल्प आदि कराइए। इतना सुनकर ब्राह्मण लोग संकल्प पढ़ने लगे।

हे नारदजी! आपसे इतना सुनते ही हिमाचल आश्चर्य में पड़ गये। इधर देवता एवं ऋषि आश्चर्य में पड़कर भी जय-जयकार करने लगे। तब मेरु आदि पर्वतों ने कहा-हे हिमाचलजी! क्यों देर कर रहे हो, कन्यादान क्यों नहीं करते, क्या सोच रहे हो? तब पर्वतों की बात सुनकर हिमाचल विधि पूर्वक कन्यादान

करने लगे। प्रतिज्ञा संकल्प करते हुए हिमाचल ने कहा-हे सकल ईश्वर सदाशिव! आपको मैं अपनी कन्या दान करता हूँ। इसे धर्मपत्नी के रूप में स्वीकार करें। इस प्रकार कहकर जल तथा कन्या का हाथ सदाशिव के हाथ में अर्पण कर दिया। तब सदाशिव भी वेद-वचानुसार मन्त्र बोलते हुए श्रीपार्वतीजी का हाथ लेकर पृथ्वी का स्पर्श करते हुए लौकिक रीति दिखाकर ''का दातू'' इस मन्त्र को प्रसन्नता पूर्वक पढ़ने लगे। तब चारों ओर जय-जयकार की ध्वनि गूँज उठी। गन्धर्वजन गाने लगे। अप्सरा नृत्य करने लगीं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि अतीव प्रसन्न हुए। उसके बाद हिमाचल ने भगवान् शिव को अनेकों वस्तुएं प्रदान कीं। रत्न-जटित स्वर्ण के आभूषण तथा पात्र एवं दूध देने वाली बहुत सुन्दर सजी हुई जवान लाख गौएं, सजे-सजाए सुन्दर सौ घोड़े। रूपवती सजी-सजाई युवती, एक लाख दासियाँ। एक करोड़ हाथी, सोने तथा जवाहरातों से जड़े एक करोड़ रथ। यह सब दहेज में दिए। उसके बाद माध्यन्दिनी के कहे हुए स्तोत्र द्वारा हाथ जोड़कर शिव की स्तुति की। तब मुनिजन भगवान् शंकर तथा पार्वतीजी के सिर पर अभिषेक करने लगे।

ब्रह्माजी को मोह होना

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उसके बाद मेरी आज्ञा पाकर ब्राह्मणों ने अग्नि स्थापन कराया फिर ऋग, यजु, सामवेद के मन्त्रों द्वारा सदाशिव से हवन कराने लगे। उस समय पार्वतीजी के भ्राता मैनाक ने आकर श्रीपार्वतीजी को खीलें दीं फिर लोक मर्यादा के अनुसार अग्नि की परिक्रमा करने लगे। हे नारदजी! उस समय मैं शिवमाया से मोहित होकर श्रीपार्वती के चरणों को देखते ही काम-पीड़ित हुआ। तब तो मेरा वीर्यपात होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। मैं अत्यन्त लज्जित होकर उसे अपने पाँवों से ढकने लग गया। मेरे इस कर्म को शंकर ने देख लिया। तब तो कुपित होकर मुझे मारने की इच्छा की। मैं भय से काँपने लगा। उपस्थित देवता भी भयभीत हो गये। देवता

ब्राह्मणों की आज्ञा से शिवजी ने पार्वती के सिर में सिन्दूर लगाया। अब पार्वतीजी की अद्‌भुत शोभा हो गई। शिवा-शिव एक आसन पर बैठे। फिर मैंने आज्ञा दी तो दोनों ने अपने स्थान पर आकर मिष्ठान्न का भोजन किया। लौकिक रीति से विवाह का सब कृत्य हुआ। शिवजी ने विधिपूर्वक आचार्य के लिए गोदान किया।

बोले-हे सदाशिव ! क्षमा करें, आप सत्‌चित आनन्दस्वरूप हो, प्रसन्न हो मुक्ति पाने की इच्छा से मुनिजन आपके चरण कमलों का आश्रय ग्रहण करते हैं। मन, वाणी से अतीत हो। हे परमेश्वर! आपके तत्त्व को कौन जान सकता है? ब्रह्माजी बोले-तब इस प्रकार देवताओं की स्तुति सुनकर क्षमा कर दिया और ब्रह्माजी को निर्भय कर दिया। हे नारदजी! मैंने अपने वीर्य को पाँव से मसल दिया। उसके अनेकों कण हो गये। जिनसे हज़ारों बालखिल्य ऋषि हो गये। वे बड़े तेजस्वी थे। उठकर मेरे पास पहुँचकर हे पिताजी! हे पिताजी! पुकारने लगे। नारदजी उस समय तुम भगवान् की इच्छा से क्रोध में आकर उनसे कहने लगे-हे ऋषियो! अब तुम्हारा यहाँ रहने का कोई काम नहीं। शीघ्र ही गन्धमादन पर्वत पर जाकर सूर्य के शिष्य होकर तप करो। तब भगवान् शंकर को प्रणाम कर गन्धमादन पर चले गये।

शिवजी द्वारा सिन्दूरदान तथा कोहबर और स्त्रियों द्वारा हास-विलास वर्णन

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! फिर तो मैंने मुनियों को साथ लेकर शिवाज्ञा से पार्वती और शंकर के विवाह का शेष कार्य कराया। उनका अभिषेक कर ब्राह्मणों को दर्शन कराया। हृदयस्पर्शी कार्य कराया। बड़े उत्साह से स्वस्तिवाचन हुआ। ब्राह्मणों की आज्ञा से शिवजी ने पार्वती के सिर में सिन्दूर लगाया। अब पार्वतीजी की अद्‌भुत शोभा हो गई। शिवा-शिव एक आसन पर बैठे। फिर मैंने आज्ञा दी तो दोनों ने अपने स्थान पर आकर मिष्ठान्न का भोजन किया। लौकिक रीति से विवाह का सब कृत्य हुआ। शिवजी ने विधिपूर्वक आचार्य के लिए गोदान किया। अनेकों मांगलिक वस्तुओं का दान हुआ। अनेकों रत्न और करोड़ों प्रकार के द्रव्य तथा सौ-सौ सोने की मुद्राएं ब्राह्मणों

को दान दी गईं। सभी देवता और चराचर जीव मन में प्रसन्न हो जय-जयकार करने लगे। चारों ओर से मंगल-गान और आनन्दवर्द्धक बाजों की ध्वनि हो रही थी। मैं तथा विष्णु आदिक देवता अपने-अपने स्थान को चले गये। फिर हिमाचल के नगर की स्त्रियाँ शिव और पार्वती कोहबर स्थान में ले गईं। लोकाचार कर अनेकों उत्सव किया। फिर सब कृत्यों से निवृत्त हो सुन्दर घर में लिवा ले गईं। कुछ पुलकित हँसी हुई। जय-ध्वनि के साथ कटाक्ष करती हुई स्त्रियों ने गाँठ खोली। अपने घर में शिवजी को स्थित देख सब अपने भाग्य की प्रशंसा करने लगीं। नव-दम्पतियों को देखने के लिए स्त्रियों का भारी जमाव हो गया। लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री, जाह्नवी, अदिति, शची, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अहिल्या, तुलसी, स्वाहा, रोहिणी और वसुन्धरा और संज्ञा तथा रति प्रभृति देवताओं की स्त्रियाँ और देवताओं, नागों और मुनियों की कन्यायें अगणित संख्या में आकर शिव के पास बैठ गईं तथा क्रमपूर्वक वे देवियाँ शिवजी से हँसी की बातें करने लगीं।

कोई कहती-हे महादेव! इस समय प्राणप्यारी सती तो तुम्हारे समीप ही स्थित हैं, इनके चन्द्रमुख को देखकर अब तो विरह संकट का त्याग कीजिये। अब आप इस सती से आलिंगन कर अपना समय बिताइये। अब तुम्हारा इनसे वियोग न होगा। लक्ष्मी देवी ने कहा कि हे देवेश! अब लज्जा को छोड़ इस पार्वती को गोद में बैठाइए जिसके लिए आपका दम घुटा जा रहा था। अब इसके प्रति क्या लज्जा है ? सावित्री ने कहा-हे शम्भो! अब पार्वती को भोजन कराके आप भी भोजन कीजिए। इसमें कुछ भी दु:ख न मानिएगा। फिर उनको आचमन कराकर आदर सहित पान खिलाइए। जाह्नवी ने कहा-अब कंघी लेकर अपनी प्राणेश्वरी के बालों को सुलझाइए। सुहागिन स्त्रियों के लिए इससे बढ़कर और कौन-सा सुख है? इसी प्रकार सब श्रेष्ठ स्त्रियों ने शिवजी से हँसी की। तब शिवजी बोले-हे देवियों! आप सभी साध्वी जगत् की माता हैं।

तब तो रति का रुदन सुनकर सरस्वती आदि देव-नारियाँ रुदन करती हुई शिव से प्रार्थना करने लगीं। हे दीनानाथ! अवश्य काम को जीवित करें तभी तो आपको रति विहार का सुख मिलेगा। इतना सुनकर भगवान् शंकर ने कृपादृष्टि द्वारा ज्योंही उस भस्म पोटली की ओर देखा तो उसी समय कामदेव जीवित होकर बाहर निकल आया। यह देखकर रति को परम आनन्द की प्राप्ति हुई।

मैं तो आपका पुत्र हूँ। फिर आप मुझसे यह सब क्या कहती हैं। शंकरजी का ऐसा वचन सुन देवताओं की स्त्रियाँ लज्जित हो चुप साध पुतली के समान चित्रलिखित-सी रह गईं और शिवजी ने मिष्ठान्न का जलपान कर ताम्बूल ग्रहण किया।

शिव द्वारा कामदेव को जीवनदान

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उस समय रति शंकर के समीप आकर बोली-हे शंकरजी! आप तो श्रीपार्वतीजी के पति बन गये, किन्तु मेरा पति तो आपने भस्म कर दिया। अब मुझे भी मेरा पति देकर मेरा ताप हरण करो। आपके इस शुभ विवाह में सभी प्रसन्न हैं। मैं ही केवल क्यों दु:खी हूँ? इसलिए प्रार्थना है कि इस मंगलमय समय में मेरा पति जीवित करें, फिर श्रीपार्वतीजी के साथ विहार का आनन्द लें।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इस प्रकार कहकर रति कामदेव की भस्म की पोटली महादेवजी के आगे रखकर प्रार्थना करने लगी-हे नाथ! हे स्वामिन्! मेरा कल्याण करो और साथ में विलाप भी करने लगी। तब तो रति का रुदन सुनकर सरस्वती आदि देव-नारियाँ रुदन करती हुई शिव से प्रार्थना करने लगीं। हे दीनानाथ! अवश्य काम को जीवित करें तभी तो आपको रति विहार का सुख मिलेगा। इतना सुनकर भगवान् शंकर ने कृपादृष्टि द्वारा ज्योंही उस भस्म पोटली की ओर देखा तो उसी समय कामदेव जीवित होकर बाहर निकल आया। यह देखकर रति को परम आनन्द की प्राप्ति हुई।

कामदेव ने सदाशिव को प्रणाम किया। प्रसन्न होकर भगवान् शंकर बोले-मैं तुम दोनों पर प्रसन्न हूँ, मनचाहा वर माँग लो। इतना सुनकर कामदेव बोला-हे भगवन्! यदि आप प्रसन्न हैं तो पहले मेरे अपराध को क्षमा करें, फिर आपके भक्तों से मेरा प्रेम हो और आपके चरणों में मेरी भक्ति हो, बस यह वरदान दें।

कामदेव के वचन सुनकर सदाशिव कहने लगे-हे कामदेव! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम

निर्भय विचरण करो और इस समय श्रीविष्णुजी के पास बाहर जाकर बैठो।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! यह सुनकर जब कामदेव बाहर आये, देवताओं ने उसे देखकर प्रसन्नतापूर्वक कहा-हे कामदेव! तुम धन्य हो। सदाशिव ने प्रसन्न होकर तुम्हें जीवित कर दिया। इस प्रकार काम का सम्मान करके विष्णु आदि अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये। उसके बाद भगवान् शंकर ने श्रीपार्वतीजी के साथ बैठकर मिष्ठान्न भोजन किया। तब मैना एवं हिमाचल से आज्ञा पाकर सदाशिव वहाँ से जनवासे

बढ़हार तथा शिव शयन

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! हिमाचल ने अपना आँगन साफ कराया और लिपवाया। उसके बाद अपने पुत्र एवं अन्य पर्वतों को भगवान् शंकर के पास भेजा। वे जाकर कहने लगे-हे परमेश्वर! आप कृपा करके विष्णु, ब्रह्मा आदि सभी देवताओं एवं ऋषि-मुनियों को साथ लेकर भोजन के लिए पधारें। तब इस प्रकार की प्रार्थना सुनकर सभी देवताओं को साथ लेकर सदाशिव भोजन करने पधारे। तब हिमाचल ने आये हुए सभी देवताओं एवं भगवान् शंकर का आदर-सत्कार किया, भोजन के लिए बिठाया। नाना प्रकार के भोजन परोसकर सबसे भोजन करने के लिए प्रार्थना की। तब तो भगवान् शंकर के साथ हँसी करते भोजन करने लगे। उस समय इन्द्र आदि लोकपालों की अलग पंक्ति थी। भृगु आदि ऋषिगणों ने भी अलग पंक्ति बना ली। ब्रह्मा-विष्णु शंकर के पास बैठे हुए थे। हे नारदजी! सभी बारातियों ने तृप्ति के साथ भोजन किया, फिर आचमन आदि करके अपने विश्रामस्थल पर चले गये। तब मैना की आज्ञा लेकर नगरस्त्रियों ने वासाख्य महोत्सव करने के लिए भगवान् शंकर को न जाने दिया। तब सदाशिव रत्नजटित सिंहासन पर बैठे और निवास भवन की ओर देखने लगे। वहाँ सैंकड़ों रत्नों के दीपक जगमगा रहे थे एवं रत्नजटित कुम्भ तथा पात्रादि स्थापित थे। इस प्रकार के सुन्दर भवन को देखकर

पश्चात् सप्तर्षियों ने जाकर मैना और हिमाचल को बहुत समझाया। शिवतत्त्व का वर्णन किया तथा शिवजी को विदा करने का अनुरोध किया। तब हिमाचल ने स्वीकार कर बड़े आदर से सबको विदा किया। जब शिवजी कैलाश को चले तो मैना उच्च स्वर से रोती हुई शिवजी से बड़ी स्तुति कर उनकी कृपा माँगने लगीं।

शंकर वहाँ रत्नजटित पलंग पर सो गये। हे नारदजी! वह रात्रि इसी प्रकार बीत गई। जब प्रात:काल हुआ तब अनेकों प्रकार के बाजे बजने लगे। सारे देवता उठे, वे आनन्दित होकर अपनी-अपनी सवारियाँ सजाकर कैलाश चलने की तैयारी में लग गये। तब भगवान् शंकर के पास श्रीविष्णुजी ने धर्म को भेजा। धर्म जाकर सदाशिव से प्रार्थना करने लगे। हे महेश्वर! कृपा करके आप जनवासे में पधारें। देवतागण आपकी बाट देख रहे हैं। इतना सुनकर सदाशिव धर्म से कहने लगे-हे धर्मदेव! तुम जाओ, मैं अभी आ रहा हूँ। यह कहकर उसे भेजा और अपने मन में जाने की इच्छा करने लगे। नगर की स्त्रियों को जब पता लगा तो वे सब वहाँ गईं और मंगल गीत गाने लगीं। भगवान् शंकर ने अपना प्रात:काल का नित्यकर्म करके मैना से आज्ञा माँगकर जनवासे में गमन किया। वहाँ ऋषि-मुनियों को एवं मुझे प्रणाम कर बैठ गये।

हिमाचल के गृह से वर की विदाई

ब्रह्माजी बोले-अब विष्णु आदिक सब देवता और तपोधन मुनि वहाँ से विदा के लिए उद्यत हुए। हिमाचल अपने बन्धुओं के साथ जनवासे में आया। शिवजी की अनेक प्रार्थना कर कृतज्ञता प्रकट की और निवेदन किया कि कुछ दिन और यहाँ निवास कीजिये। यह सुन विष्णु आदिक देवताओं ने गिरि शार्दूल को धन्यवाद दिया और कहा कि तुम्हारे समान त्रिलोकी में पुण्यधारी कोई नहीं है। इस प्रकार परस्पर एक ने दूसरे की प्रशंसा की। जय-ध्वनि, वेद-ध्वनि और साधुवाद की ध्वनि से आकाश मुखरित हो गया। अप्सराएं नाचने लगीं, मागध स्तुति-पाठ करने लगे और बहुत-सा द्रव्य दान दिया गया। हिमाचल ने फिर शंकरजी को आमन्त्रण कर बारातियों सहित सबको घर बुला कर उनके चरण धोए। फिर शिवजी सहित सबको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन कराया। भोजन कराते समय नगर की स्त्रियाँ सबको देख हँस-हँस कर मधुर वाणी में सुन्दर गालियाँ देने लगीं। पश्चात् भोजन कर सबने आचमन कर प्रसन्नता और तृप्ति पा अपने स्थान को प्रस्थान किया। तीसरे दिन भी सबका सम्मान

हुआ। गिरीश ने विधिपूर्वक दान-मान सहित सबका आदर किया। चौथे दिन सविधि चतुर्थी कर्म किया और इस अवसर पर भी साधुवाद और जय-ध्वनि सहित बड़ा उत्सव हुआ और हिमाचल ने बहुत-सा दान दिया। पाँचवें दिन सबने फिर चलने का प्रस्ताव भेजा, परन्तु हिमाचल ने आग्रह कर सबको पुनः रोका और कुछ दिन तक शिवजी सहित सब देवता वहीं टिके रहे। पश्चात् सप्तर्षियों ने जाकर मैना और हिमाचल को बहुत समझाया। शिवतत्त्व का वर्णन किया तथा शिवजी को विदा करने का अनुरोध किया। तब हिमाचल ने स्वीकार कर बड़े आदर से सबको विदा किया। जब शिवजी कैलाश को चले तो मैना उच्च स्वर से रोती हुई शिवजी से बड़ी स्तुति कर उनकी कृपा माँगने लगीं। पुनः पुत्री को सौंप कर मैना उच्चे स्वर से रोने लगीं और दोनों के आगे गिर पड़ीं। तब शंकरजी मैना को समझा देवताओं सहित मौन हो वहाँ से चल दिए। पुर के बाहर अपने एक उपवन में हिमाचल ने उन्हें ठहराया। पश्चात् वहाँ से देवताओं सहित शिवजी विदा हुए। आगे पार्वती का विरहोत्सव ध्यान से सुनो।

पतिव्रता धर्म वर्णन

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! तब सप्तऋषियों ने कहा कि हे हिमाचलजी! पुत्री पार्वती को शीघ्र ही तैयार करके भगवान् शंकर के साथ भेजने की कृपा करें। इतना सुनकर पर्वतराज अत्यन्त व्याकुल हो गये कुछ समय तक विरह में व्याकुल रहे। फिर मैना से पार्वतीजी को भेजने के लिए कहा। मैना को हर्ष भी हुआ और उदासीनता भी। तब उत्सव के कार्य करने लगीं। श्रीपार्वतीजी का सुन्दर श्रृंगार किया गया।

तभी मैना के कहने से एक ब्राह्मण की पत्नी आकर पार्वतीजी को पतिव्रता के धर्म की शिक्षा देने लगी। उसने कहा-हे पार्वतीजी ! जो स्त्रियाँ पतिव्रत धर्मवाली होती हैं, वे धन्य हैं। समस्त पापों को नाश करके अपने दोनों कुलों को तार देती हैं। जो भी स्त्री अपने पति

तभी मैना के कहने से एक ब्राह्मण की पत्नी आकर पार्वतीजी को पतिव्रता के धर्म की शिक्षा देने लगी। उसने कहा-हे पार्वतीजी ! जो स्त्रियाँ पतिव्रत धर्मवाली होती हैं, वे धन्य हैं। समस्त पापों को नाश करके अपने दोनों कुलों को तार देती हैं। तभी मैना के कहने से एक ब्राह्मण की पत्नी आकर पार्वतीजी को पतिव्रता के धर्म की शिक्षा देने लगी।

को साक्षात् ईश्वर समझकर उसकी सेवा करती रहती हैं, उन्हें इस लोक में आनन्द की प्राप्ति होती है। अन्त में सद्गति होती है। हे पार्वतीजी! पतिव्रता स्त्री पति के भोजन कर चुकने के बाद भोजन करे, पति के सोने के बाद सोवे। क्रोध से एवं प्रसन्नता से पति का नाम मुख से न बोले। कभी पति क्रोध में आकर कुछ मार भी बैठे तो उसे सहन करे, उत्तर में मरो या मारो, ऐसा शब्द न कहे। इतना ही कहे-हे स्वामिन्! मेरा अपराध क्षमा करो। इसी प्रकार कहती रहे। पति के बुलाने पर सभी कामों को छोड़कर पति के पास चली जाये। उसकी आज्ञा का बड़े प्रेम से पालन करे। पतिव्रता कभी द्वार पर न खड़ी हो। किसी दूसरे के घर जाकर बिना कारण न बैठे। अपनी घर की चीजें ठीक समय यथा स्थान सम्हाल कर रखे, फिर अपने कामकाज में भी चतुर रहे। पति की आज्ञा के बिना तीर्थयात्रा, खेल-तमाशे किसी स्थान पर न जाये। तीर्थस्थान की इच्छा से पति के चरण धोकर उसके पान करने से उसका तीर्थस्नान हो जाता है। अपने पति की आज्ञा पाकर पति के झूठे अन्न को परम प्रसाद समझकर ग्रहण करे। श्राद्ध आदि पर्वों में भी बाँटकर न खायें, किन्तु पति की झूठन खाना ही सर्वोत्तम है। किसी चीज के लिए भी पति से झगड़े नहीं और न बहुत खर्च कराये। ऐसी स्त्री उत्तम होती है।

हे पार्वतीजी! पति की आज्ञा के बिना पतिव्रता कोई भी उपवास-व्रत आदि न करे। अपने हठ से व्रत आदि करनेवाली स्त्रियों को कोई फल नहीं मिलता। फिर अन्त होने पर नरक में जाती हैं। सुख से बैठे, सोते पति को कभी न उठाए। दुःखी, नपुंसक, धनहीन, दीन, रोगी, वृद्ध किसी अवस्था में पति क्यों न हो, पतिव्रता उसका त्याग न करे। मासिक धर्म में आकर स्त्री अपने पति को तीन दिन मुख न दिखाए। जब तक वह शुद्ध स्नान नहीं कर लेती तब तक पति उसका वचन भी न सुन सके। तीसरे दिन के बाद शुद्ध होकर पहिले पति का दर्शन करे। पति यदि कहीं चला गया हो तो उसके रूप का ध्यान करके सूर्य नारायण का दर्शन करे। सिन्दूर आदि सुहाग की वस्तुएं धारण कर अपने पति की दीर्घ आयु के लिए कामना करती रहे। धोबिन, शूद्रा, व्यभिचारिणी आदि नीच स्त्रियों को अपनी सहेली न बनाए। पति से लड़ने वाली एवं शत्रुता करनेवाली स्त्री से बोले तक नहीं। एकान्त में कभी अकेली न रहे। कभी नंगी न होने पाये। स्नान भी

वस्त्रहीन हो कभी न करे। रमण समय में पति से ढीठता कर सकती है और समय में नहीं। सदा पति के अनुकूल चले। उसके उदास होने पर उदास और सुखी रहने पर सुखी रहे। सुख-दु:ख दोनों में ही पति से विमुख न हो। वह ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी अपने पति को विशेष समझे। जो भी स्त्री पति की आज्ञा के बिना व्रत-उपवास अथवा विषय आदि करती है, वे अपने पति की आयु का हरण करती है और अन्त में नरक में जाती है। जो स्त्री पति के कुछ कहने पर क्रुद्ध होकर तीखा कटु उत्तर देती है, ऐसी स्त्रियां निर्जन वन में गीदड़ी का जन्म पाती हैं। पति से ऊँची होकर न बैठे। व्यभिचारी दुष्टों से दूर रहे। पति से कभी कुटिलता से न बोले। सासु, ससुर, जेठ, जिठानी आदि बड़ों के सामने कभी ऊँचा न बोले, न हँसे। बाहर से आये हुए अपने पति के आदर पूर्वक चरण धोये। हे पार्वतीजी! इस प्रकार की पतिव्रता नारियाँ लोकों को पवित्र कर देती हैं। तीनों देवों की प्रार्थना से अत्रि की पत्नी ने शाप द्वारा वाराह से मरे हुए एक ब्राह्मण को जीवित कर दिया था। हे देवी पार्वतीजी ! आप तो सर्वश्रेष्ठ हो, सबका कल्याण करनेवाली हो। आपके सामने तो केवल लोकोपकार के लिए इतना कहना पड़ा। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इस प्रकार शिक्षा देकर ब्राह्मणी श्रीपार्वतीजी को आशीष देकर वहाँ बैठ गई।

शिव-कैलाश गमन

हे नारदजी! इसके बाद उस ब्राह्मण की पत्नी ने मैना से श्रीपार्वतीजी को भेज देने के लिए कहा। यह सुनकर प्रेम विवश होकर मैना ने उसके वचनों के अनुसार श्रीपार्वतीजी को हृदय से लगा धैर्य के साथ विदा करने लगी, किन्तु धैर्य का बाँध टूट गया और ऊँचे स्वर से रुदन करने लगीं। उसी प्रकार अन्य स्त्रियाँ अचेतन हो गईं। स्वयं योगीश्वर श्रीमहादेवजी चलते समय रुदन करने लगे। पशु-पक्षी आदि का तो कहना ही क्या? उस समय पर्वतराज हिमाचल अपने पुत्रों, मन्त्रियों, ब्राह्मणों के

इसके बाद उस ब्राह्मण की पत्नी ने मैना से श्रीपार्वतीजी को भेज देने के लिए कहा। यह सुनकर प्रेम विवश होकर मैना ने उसके वचनों के अनुसार श्रीपार्वतीजी को हृदय से लगा धैर्य के साथ विदा करने लगी, किन्तु धैर्य का बाँध टूट गया और ऊँचे स्वर से रुदन करने लगीं। उसी प्रकार अन्य स्त्रियाँ अचेतन हो गईं।

साथ वहाँ आ गये। मोह के कारण अपनी पुत्री को हृदय से लगाकर रोने लगे। उसके बाद तत्त्वज्ञानी पुरोहितों ने सबको अध्यात्म ज्ञान द्वारा समझाया जिससे कुछ समय के लिए शान्त हुए जब कि पार्वतीजी ने भक्ति के साथ माता-पिता एवं गुरुजनों को प्रणाम किया, फिर लोकनीति के अनुसार अचानक ही रोने लग गईं। श्रीपार्वतीजी का ऊँचे स्वर से रुदन सुनकर अन्य स्त्रियाँ भी रोने लग गईं। तब ब्राह्मण लोगों ने उनको धैर्य दिया और यात्रा का शुभ लग्न बताते हुए कहा-इस समय रोना अच्छा नहीं। तब हिमाचलजी ने मैना को धैर्य बँधाया। श्रीपार्वतीजी के लिए पालकी मंगाकर उस पर उन्हें बैठा दिया। सबने श्रीपार्वतीजी को शुभ आशीर्वाद दिये। हिमाचल तथा मैना ने शुभ आशीर्वाद देते हुए श्रीपार्वतीजी को अमूल्य आभूषण, वस्त्र एवं असंख्य धन दिया। फिर पार्वतीजी ने ब्राह्मण, पुरोहित एवं अन्य पूज्य स्त्रियों को प्रणाम किया, फिर उनकी पालकी चली। श्रीपार्वती के चलते समय हिमाचल ने श्रीमहादेवजी को जाकर प्रणाम किया और विष्णु आदि देवताओं से गले लगकर मिले। इस प्रकार श्रीपार्वतीजी की आज्ञा से घर लौटे। ब्रह्माजी बोले-तब भगवान् शंकर सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत पर पधारे। लोकरीति के अनुसार सदाशिव ने विष्णु आदि सभी बारातियों को भोजन कराया। तब बारातीगण सदाशिव की आज्ञा लेकर अपने-अपने लोकों में चले गये। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! यह भगवान् शंकर के शुभ विवाह का वर्णन है। यह शोक का नाश करता है और हर्ष को बढ़ाता है।

-शेष अगले अंक में -क्रमशः

**सबको गिला है,
बहुत कम मिला है।
जरा सोचिए..
जितना आपको मिला है
उतना कितनों को मिला है।**

चौथा अध्याय

द्रव्य, तपस्या, योग, अहिंसा व्रत भी होते यज्ञ हैं।
ज्ञानयज्ञ स्वाध्याय करे वह ज्ञानी है, सर्वज्ञ है।।
ज्ञानयज्ञ ही सर्वोत्तम है, सत्य मार्ग पा जाने का।
अन्तरतम में व्याप्त तिमिर को मन से दूर भगाने का।।

कई अन्य योगी अपान में प्राणवायु का करें हवन।
कई दूसरे प्राणवायु में करें हवन अपान पवन।।
कितने प्राण-अपान गति रोकें, प्राण प्राण में करें हवन।
यज्ञों के वे ज्ञानी साधक पाप मिटायें होकर पावन।।

यज्ञ-सुधा जो बच जाती है उसका जो करता है पान।
उसको मिलते सत्य सनातन परमब्रह्म ईश्वर भगवान।।
यज्ञ नहीं करने वालों को दोनों लोक बिगड़ जाते हैं।
कर्म बंधनों में जकड़े वे पुनर्जन्म को ही पाते हैं।।

सभी यज्ञ वेदोक्त रीति से मन, इन्द्रिय, तन से करना।
उन्हें तत्त्व से जान अनुष्ठानों में हरदम रत रहना।।
छुटकारा मिल जायेगा सारे कर्मों के बंधन से।
अगर हृदय में भाव विमल हो, करे शुद्ध तन-मन से।।

द्रव्ययज्ञ से भी उत्तम है ज्ञानयज्ञ संसार में।
सब कर्मों का अंत समझ लो सत्य ज्ञान के सार में।।
ज्ञान उदय होने से अन्तरतम का तम मिट जाता है।
दिव्य ज्योति ले सूर्य हृदय में भासित हो उग आता है।।

तत्त्वज्ञानियों से मिलकर श्रद्धा से करके नमस्कार।
छोड़ कपट-छल सेवा करना, प्रेम-भाव से कर सत्कार।।
जिज्ञासा से युक्त प्रश्न हों तो उत्तर तुम पाओगे।
वैसे गुरु से तत्त्वज्ञान पाकर कृतार्थ हो जाओगे।।

ज्ञान प्राप्त होने से तेरे मोह-भरम सब कट जायेंगे।
घटाकाश से माया-विभ्रम से बादल सब हट जायेंगे।।
तब जग के संपूर्ण प्राणियों को अपने अंदर देखेगा।
साथ-साथ अपनी आत्मा में मुझको भी निरखेगा।।

यदि पापी या महापातकी हो तब भी तर जायेगा।
ज्ञान नाव पर चढ़ पापों के सागर पार उतर जायेगा।।
जैसे आग जलाये ईंधन, क्षण में उसको भस्म करें।
ज्ञान-अग्नि में वैसे ही प्राणी के सारे कर्म जरें।।

मन, इन्द्रिय और देहकर्म सब ज्ञान अग्नि में जल जाते।
ऐसे प्राणी पुनर्जन्म के चक्कर से हैं बच जाते।।
मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं वे, ब्रह्मलीन हो जाते हैं।
मूल स्त्रोत से मिल जाते हैं, अमर तत्त्व को पाते हैं।।

ज्ञानवान ही कर्मयोग का तत्त्व समझने वाला है।
और ज्ञान से ही मनुज विभ्रम में रहने वाला है।।
ज्ञानयज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ है, मोह तिमिर छँट जाता है।
कर्मजनित भव का बंधन भी पल में ही कट जाता है।।

-क्रमशः

सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे....)

❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता

संस्कार

भौतिक वस्तुओं की लालसा: संस्कारों का एक उद्देश्य भौतिक सुखों को प्राप्त करना था। प्राय: सभी संस्कारों के अवसर पर यज्ञों तथा पूजन के माध्यम में देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता था, क्योंकि लोगों का विश्वास था कि आराधना तथा प्रार्थना के माध्यम से देवता हमारी आवश्यकताओं को जान लेते हैं और फिर पशु, सन्तान, दीर्घायु, सम्पत्ति, समृद्धि, शक्ति तथा बुद्धि के रूप में हमारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। इस प्रकार संस्कारों के माध्यम से जहाँ एक ओर व्यक्ति अपने परलोक को सुरक्षित करते थे वही दूसरी ओर इस लोक में भी अधिकतम् सुख-समृद्धि की कामना करते थे। आज भी लोग सुख-समृद्धि की कामना से बड़े-बड़े यज्ञों तथा कर्मकाण्डों का आयोजन करते हैं।

व्यक्ति का समाजीकरण-संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक बनाना भी था। संस्कार व्यक्ति को सामाजिक मूल्यों, प्रतिमानों तथा आदर्शों से परिचित करवाते थे और उन्हें अनुशासित एवं शिक्षित करते

संस्कारों का एक उद्देश्य भौतिक सुखों को प्राप्त करना था। प्राय: सभी संस्कारों के अवसर पर यज्ञों तथा पूजन के माध्यम में देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता था, क्योंकि लोगों का विश्वास था कि आराधना तथा प्रार्थना के माध्यम से देवता हमारी आवश्यकताओं को जान लेते हैं।

थे। इतना ही नहीं, संस्कारों के द्वारा व्यक्ति कुछ विशेष स्थिति को प्राप्त करता था और कुछ निश्चित कर्त्तव्यों को पूरा करने योग्य माना जाता था। उदाहरणार्थ यह सिद्धान्त प्रचलित था कि जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है चाहे व किसी भी वर्ण का क्यों न हो। परन्तु उपनयन संस्कार सम्पादित होने के बाद से वह 'द्विज' कहलाता था। इससे उसको समाज में विशेषाधिकार एवं सुविधाएं मिल जाती थीं। नामकरण संस्कार व्यक्ति को एक विशिष्ट नाम प्रदान करता था जो उसके लिए सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होता था। समावर्त्तन संस्कार ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति का सूचक था जिसके माध्यम से उसे गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का अधिकार मिलता था। इसी प्रकार विवाह संस्कार के द्वारा व्यक्ति को सन्तानोत्पादन एवं रति सुख तथा सभी प्रकार के यज्ञों के अनुष्ठान का अधिकार मिलता था। इतना ही नहीं, संस्कार के अवसर पर आयोजित होने वाले समारोहों से व्यक्ति का समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होता था जो उसके समाजीकरण में सहायक होता था।

नैतिकता का संवर्द्धन-संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में नैतिकता का विकास करता था और ऐसे जीवन-मूल्यों तथा प्रतिमानों का संवर्द्धन करता था जिससे उसका नैतिक उत्थान होता था। गौतम चाली संस्कारों का वर्णन करने के पश्चात् दया, क्षमा, दान, पवित्रता, सच्चरित्रता, निर्लिप्तता, अस्तेय तथा अहिंसा इन आठ गुणों का उल्लेख करते हैं। उनके अनुसार जिस व्यक्ति ने चालीस संस्कारों का अनुष्ठान तो किया है किन्तु उसमें उक्त आठ गुण नहीं हैं वह ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त नहीं कर सकता। किन्तु जिस व्यक्ति ने केवल कतिपय संस्कारों का ही अनुष्ठान किया है

जिस प्रकार चित्रकर्म में सफलता प्राप्त करने के लिए विविध रंग अपेक्षित होते हैं उसी प्रकार ब्राह्मण्य या चरित्र-निर्माण भी विभिन्न संस्कारों के द्वारा होता है। वास्तव में संस्कार प्रारम्भ से ही व्यक्ति के जीवन पर अनुकूल प्रभाव थे। इनके द्वारा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता था। ये संस्कार इस प्रकार व्यवस्थित किये गये थे कि जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति उनके प्रभाव में आ जाता था।

और वह उक्त आठ गुणों से सुशोभित हैं तो वह ब्रह्मलोक में ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त कर लेता है। संस्कारों में जीवन के हर एक सोपान के लिए व्यवहार के नियम निर्धारित हो चुके थे, जैसे गर्भिणी धर्म, अनुपनीत धर्म, ब्रह्मचारी धर्म एवं स्नातक धर्म आदि। निःसंदेह, उनमें अनेक बातें धार्मिक एवं अन्धविश्वासपूर्ण हैं किन्तु व्यक्ति के नैतिक विकास के प्रयत्न भी प्रत्यक्ष हैं। इस प्रकार संस्कारों का यह स्वरूप निश्चय ही संस्कारों से प्राप्त होने वाले वैयक्तिक हित की अपेक्षा उच्चतर नैतिक प्रगति को सूचित करता है।

व्यक्तित्व का निर्माण और विकास-संस्कारों का एक प्रमुख उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण और समग्र विकास करना था। अंगिरा चित्रकर्म से तुलना करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार चित्रकर्म में सफलता प्राप्त करने के लिए विविध रंग अपेक्षित होते हैं उसी प्रकार ब्राह्मण्य या चरित्र-निर्माण भी विभिन्न संस्कारों के द्वारा होता है। वास्तव में संस्कार प्रारम्भ से ही व्यक्ति के जीवन पर अनुकूल प्रभाव थे। इनके द्वारा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता था। ये संस्कार इस प्रकार व्यवस्थित किये गये थे कि जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति उनके प्रभाव में आ जाता था। इस प्रकार से ये संस्कार व्यक्ति के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करते थे जिससे उसके लिए अनुशासित जीवन व्यतीत करना आवश्यक हो जाता था तथा उसकी शक्तियाँ सुनियोजित एवं सोद्देश्य धारा में प्रवाहमान रहती थीं। इस प्रकार संस्कारों के प्रभाव से मनुष्य का व्यक्तित्व शुद्ध एवं परिष्कृत होता था और वह लौकिक तथा पारलौकिक अभिव्यक्तियों को समुन्नत करता था।

आध्यात्मिक विकास-संस्कारों का एक उद्देश्य आध्यात्मिक विकास भी था। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने शारीरिक, बौद्धिक एवं सामाजिक जीवन को परिष्कृत,

परिशुद्ध एवं पवित्र बनाने का प्रयत्न करता था जिससे उसकी आध्यात्मिक उन्नति स्वत: हो जाती थी। मनु के अनुसार गर्भ होम (गर्भाधान के अवसर पर किया जाने वाला होम), जातकर्म, चूड़ाकरण और उपनयन संस्कार के अनुष्ठान से द्विजों के गर्भ तथा बीज सम्बन्धी दोष दूर हो जाते हैं। साथ ही उनका कथन है कि द्विजों को गर्भादान आदि शारीरिक संस्कार वैदिक कर्मों के साथ करने चाहिए जो इहलोक तथा परलोक दोनों को पवित्र करते हैं। लोगों का विश्वास था कि बीज और गर्भावास अपवित्र एवं अशुद्ध हैं और जातकर्म आदि संस्कारों के द्वारा ही इस मल या पाप से छुटकारा पाया जा सकता है। आत्मा के निवास के लिए शरीर को उपयुक्त माध्यम बनाने के लिए सम्पूर्ण शरीर का संस्कार भी आवश्यक समझा जाता था। शंख के अनुसार संस्कारों से संस्कृत तथा आठ आत्मगुणों से युक्त व्यक्ति ब्रह्मलोक में पहुँचकर ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है जिससे फिर वह कभी च्युत नहीं होता। हारीत के अनुसार बाह्य संस्कारों से संस्कृत व्यक्ति ऋषियों की स्थिति को प्राप्त कर उनके समान हो जाता है और उनके निकट निवास करता है तथा दैव संस्कारों से संस्कृत व्यक्ति देवों की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। चूंकि प्राचीन समय में हिन्दुओं के जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष माना जाता था। अत: संस्कारों को भी उस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक माना जाने लगा। डॉ. राजबली पाण्डेय के अनुसार संस्कार हिन्दू के लिए सजीव धार्मिक अनुभव थे केवल बाहरी उपचार मात्र नहीं। संस्कार जीवन की आत्मवादी और भौतिकवादी धारणाओं के बीच मध्यममार्ग का कार्य करते थे। संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा की क्रमिक सीढ़ियों का कार्य करते थे। उनके द्वारा संस्कृत व्यक्ति यह अनुभव करता कि सम्पूर्ण जीवन वस्तुत: संस्कारमय है और सम्पूर्ण दैहिक क्रियाएँ आध्यात्मिक ध्येय से अनुप्राणित हैं। यही वह मार्ग था जिससे क्रियाशील सांसारिक जीवन का समन्वय आध्यात्मिक तत्वों के साथ स्थापित किया जाता था। जीवन की इस पद्धति में शरीर और उसके कार्य बाधा नहीं, पूर्णता की प्राप्ति में सहायक हो सकते थे। इन संस्कारों के अनुष्ठान से हिन्दुओं का सामान्य जीवन, जो अन्यथा समय-समय पर होने वाले अनुष्ठानों के बिना पूर्णत: भौतिक बन जाता, एक विशाल संस्कार ही बन गया। इस प्रकार हिन्दुओं का यह विश्वास था कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से वे दैहिक बन्धन से मुक्त होकर मृत्यु सागर को पार कर लेंगे।

इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। जहाँ ये संस्कार मानव जीवन को परिष्कृत एवं शुद्ध करते थे। वही उनकी भौतिक और आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति भी करते थे। अनेक सामाजिक समस्याओं के समाधान में भी इन्होंने अपना योगदान दिया था। लेकिन धीरे-धीरे संस्कारों का मूल प्रयोजन समाप्त होता गया और वे मात्र कर्मकाण्डीय संस्कार बनते गये। आज के इस वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के कारण संस्कार निष्प्रयोजन एवं निर्जीव संस्था मात्र बनकर रह गये हैं।

संस्कारों का विस्तार एवं संख्या- वैदिक साहित्य में यद्यपि संस्कार शब्द का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु इससे सम्बंधित कुछ धार्मिक क्रियाओं का उल्लेख अवश्य मिलता है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद में गर्भाधान, विवाह तथा अत्येष्टि से सम्बंधित कुछ धार्मिक क्रियाओं का उल्लेख मिलता है। लेकिन अथर्ववेद में इनका पहले से अधिक

इन संस्कारों के अनुष्ठान से हिन्दुओं का सामान्य जीवन, जो अन्यथा समय-समय पर होने वाले अनुष्ठानों के बिना पूर्णत: भौतिक बन जाता, एक विशाल संस्कार ही बन गया। इस प्रका हिन्दुओं का यह विश्वास था कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से वे दैहिक बन्धन से मुक्त होकर मृत्यु सागर को पार कर लेंगे।

विस्तृत वर्णन मिलता है। गोपथ तथा शतपथ ब्राह्मण में उपनयन और गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य द्वारा दीक्षान्त दीक्षा का उल्लेख मिलता है। संस्कारों के विषय में विस्तृत जानकारी हमें सर्वप्रथम गृह्यसूत्रों से प्राप्त होती है परन्तु यहाँ भी संस्कार शब्द का प्रयोग उसके वास्तविक अर्थ में न होकर 'यज्ञ के पवित्र एवं निर्मल कार्यों' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार वे समाप्त गृह्य विधि-विधानों का वर्गीकरण विभिन्न यज्ञों के नामों के माध्यम से करते हैं।

गृह्यसूत्रों में संस्कारों का वर्णन दो अनुक्रमों में मिलता है। प्राय: अधिकांश गृह्यसूत्र विवाह से लेकर समावर्त्तन पर्यन्त दैहिक संस्कारों का ही उल्लेख करते हैं। जबकि हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र, भारद्वाज गृह्यसूत्र और मानव गृह्यसूत्र संस्कारों का प्रारंभ उपनयन से करते हैं। लेकिन उनमें से भी अधिकांश अन्त्येष्टि का उल्लेख नहीं करते। केवल आश्वलायन, पारस्कर तथा बौधायन आदि ही इसका वर्णन करते हैं। इन संस्कारों की संख्या के विषय में भी सूत्रकारों में बड़ा मतभेद है। आश्वलायन जहाँ 11 संस्कारों का उल्लेख करते हैं वहाँ पारस्कर, बौधायन तथा वाराह गृह्यसूत्र में 13 संस्कारों का उल्लेख मिलता है। वैखानस ने 16 संस्कारों का उल्लेख किया है लेकिन इनमें उत्थान, प्रवासागमन और पिण्डवर्धन ऐसे संस्कार है जिनका उल्लेख अन्यत्र नहीं मिलता। धर्मसूत्रों में गौतम धर्मसूत्र में बे अधिक चालीस संस्कारों का उल्लेख मिलता है। ये हैं-1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. अन्नप्रासन, 7. चौल, उपनयन, 9-12. वेदों के चार व्रत, 13. स्नान, 14. विवाह, 15-19. पंच दैनिक महायज्ञ (ब्रह्म, देव, पितृ, भूत तथा मनुष्य), 20-26. सात पाक यज्ञ (अष्टका, पार्वण (स्थालीपाक), श्राद्ध श्रावणी, आग्रहायणी, चैत्री और आश्वयुजी), 27-23. सात हावियज्ञ (अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध और सौत्रामणि), 34-40. सात सोमयज्ञ (अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडश, वाजपेय, आतिरात्र और आप्तोर्याम)। राजबली पाण्डेय के अनुसार गौतम द्वारा उद्धत संस्कारों की इस सूची में हमें संस्कारों और यज्ञों में कोई स्पष्ट विभेद दृष्टिगत नहीं होता। सभी गृह्यकृत्यों और श्रौतयज्ञों को, जिनका ब्राह्मणों और श्रौतसूत्रों में विशद् वर्णन मिलता है। उपरिलिखत सूची में संस्कारों के साथ संयुक्त कर दिया गया। यहाँ संस्कार शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से समस्त धार्मिक कृत्यों के अर्थ में किया गया है। परवर्ती धर्मशास्त्रकार हारीत के अनुसार यज्ञों का समावेश दैव संस्कारों और मनुष्य जीवन के विभिन्न अवसरों पर किये जाने वाले संस्कारों का समावेश ब्राह्म संस्कारों के अन्तर्गत करा चाहिए। केवल ब्राह्म संस्कारों को ही यथार्थ में संस्कार समझना चाहिए। नि:संदेह यज्ञ भी परोक्ष रूप से पूत करने वाले माने जाते थे, किन्तु उनका मुख्य प्रयोजन था देवों की आराधना, जबकि संस्कारों का प्रधान ध्येय संस्कार्य व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा देह को संस्कृत करना था।

-क्रमश:

लेकिन उनमें से भी अधिकांश अन्त्येष्टि का उल्लेख नहीं करते। केवल आश्वलायन, पारस्कर तथा बौधायन आदि ही इसका वर्णन करते हैं। इन संस्कारों की संख्या के विषय में भी सूत्रकारों में बड़ा मतभेद है। आश्वलायन जहाँ 11 संस्कारों का उल्लेख करते हैं वहाँ पारस्कर, बौधायन तथा वाराह गृह्यसूत्र में 13 संस्कारों का उल्लेख मिलता है।

ये हैं प्रभु श्रीराम के वंशज, जो आज भी जिंदा हैं

अनिरुद्ध जोशी

भरत के दो पुत्र थे-तार्क्ष और पुष्कर। लक्ष्मण के पुत्र-चित्रंगद और चन्द्रकेतु और शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु और शूरसेन थे। मथुरा का नाम पहले शूरसेन था। लव और कुश राम तथा सीता के जुड़वां बेटे थे। जब राम ने वानप्रस्थ लेने का निश्चय कर भरत का राज्याभिषेक करना चाहा तो भरत नहीं माने। अत: दक्षिण कोसल प्रदेश (छत्तीसगढ़) में कुश और उत्तर कोसल में लव का अभिषेक किया गया।

राम ने कुश को दक्षिण कौशल, कुशस्थली (कुशावती) और अयोध्या राज्य सौंपा तो लव को पंजाब दिया। लव ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। आज के तक्षशिला में तब भरत पुत्र तक्ष और पुष्करावती (पेशावर) में पुष्कर सिंहासनारुढ़ थे। हिमाचल में लक्ष्मण पुत्रों अंगद का अंगदपुर और चंद्रकेतु का चंद्रावती में शासन था। मथुरा में शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु का तथा दूसरे पुत्र शत्रुघाती का भेलसा (विदिशा) में शासन था।

राम के काल में भी कोशल राज्य उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल में विभाजित था। कालिदास के रघुवंश अनुसार राम ने अपने पुत्र लव को शरावती का और कुश को कुशावती का राज्य दिया था। शश्ररावती को श्रावस्ती मानें तो निश्चय ही लव का राज्य उत्तर भारत में था और कुश का राज्य दक्षिण कोसल में। कुश की राजधानी कुशावती आज के बिलासपुर जिले में थी।

राम के काल में भी कोशल राज्य उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल में विभाजित था। कालिदास के रघुवंश अनुसार राम ने अपने पुत्र लव को शरावती का और कुश को कुशावती का राज्य दिया था। शरावती को श्रावस्ती मानें तो निश्चय ही लव का राज्य उत्तर भारत में था और कुश का राज्य दक्षिण कोसल में। कुश की राजधानी कुशावती आज के बिलासपुर जिले में थी। कोसला को राम की माता कौशल्या की जन्मभूमि माना जाता है। रघुवंश के अनुसार कुश को अयोध्या जाने के लिए विंध्याचल को पार करना पड़ता था इससे भी सिद्ध होता है कि उनका राज्य दक्षिण कोसल में ही था।

राजा लव से राघव राजपूतों का जन्म हुआ जिनमें बड़गुजर, जयास और सिकरवारों का वंश चला। इसकी दूसरी शाखा थी सिसोदिया राजपूत वंश की जिनमें बैछला (बैसला) और गैहलोत (गुहिल) वंश के राजा हुए। कुश से कुशवाह राजपूतों का वंश चला।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार लव ने लवपुरी नगर की स्थापना की थी, जो वर्तमान में पाकिस्तान स्थित शहर लाहौर है। यहां के एक किले में लव का एक मंदिर भी बना हुआ है। लवपुरी को बाद में लौहपुरी कहा जाने लगा। दक्षिण-पूर्व एशियाई देश लाओस, थाई नगर लोबपुरी, दोनों ही उनके नाम पर रखे गए स्थान हैं।

कुश के वंशज कौन?

राम के दोनों पुत्रों में कुश का वंश आगे बढ़ा तो कुश से अतिथि और अतिथि से, निषधान से, नभ से, पुण्डरीक से, क्षेमन्धवा से, देवानीक से, अहीनक से, रुरु से, पारियात्र से, दल से, छल से, उक्थ से, वज्रनाभ से, गण से, व्युषिताश्व से, विश्वसह से, हिरण्यनाभ से, पुष्य से, धरुवसंधि से, सुदर्शन से, अग्निवर्ण से, पद्मवर्ण से, शीघ्र से, मरु से, प्रयुश्रुत से, उदावसु से, नंदिवर्धन से, सकेतु से, देवरात से, बृहदुक्थ से, महावीर्य से, सुधृति से, धृष्टकेतु से, हर्यव से, मरु से, प्रतीन्धक से, कुतिरथ से, देवमीढ़ से, विबुध से, महाधृति से, कीर्तिरात से, महारोमा से, स्वर्णरोमा से और स्वरोमा से सीरध्वज का जन्म हुआ।

कुश वंश के राजा सीरध्वज को सीता नाम की एक पुत्री हुई। सूर्यवंश इसके आगे भी बढ़ा जिसमें कृति नामक राजा का पुत्र जनक हुआ जिसने योग मार्ग का रास्ता अपनाया था। कुश वंश से ही कुशवाह, मौर्य, सैनी, शाक्य संप्रदाय की स्थापना मानी जाती है। एक शोधानुसार कुश की 50वीं पीढ़ी में शल्य हुए, जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से लड़े थे। यह इसकी गणना की जाए तो कुश महाभारत काल के 2500 वर्ष पूर्व से 3000 वर्ष पूर्व हुए थे अर्थात आज से 6,500 से 7,000 वर्ष पूर्व।

इसके अलावा शल्य के बाद बहत्क्षय, ऊरुक्षय, बत्सद्रोह, प्रतिव्योम, दिवाकर, सहदेव, धरुवाश्च, भानुरथ, प्रतीताश्व, सुप्रतीप, मरुदेव, सुनक्षत्र, किन्नराश्रव, अन्तरिक्ष, सुषेण, सुमित्र, बृहद्रज, धर्म, ख्रतज्जय, व्रात, रणज्जय, संजय, शाक्य, शुद्धोधन, सिद्धार्थ, राहुल, प्रसेनजित, क्षुद्रक, कुलक, सुरथ, सुमित्र हुए। माना जाता है कि जो लोग खुद को शाक्यवंशी कहते हैं वे भी श्रीराम के वंशज हैं।

तो यह सिद्ध हुआ कि वर्तमान में जो सिसोदिया, कुशवाह (कछवाह), मौर्य, शाक्य, बैछला (बैसला) और गैहलोत (गुहिल) आदि जो राजपूत वंश हैं वे सभी भगवान प्रभु श्रीराम के वंशज है। जयपूर राजघराने की महारानी पद्मिनी और उनके परिवार के लोग की राम के पुत्र कुश के वंशज है। महारानी पद्मिनी ने एक अंग्रेजी चौनल को दिए में कहा था कि उनके पति भवानी सिंह कुश के 309वें वंशज थे। इस घराने के इतिहास की बात करें तो 21 अगस्त 1921 को जन्में महाराज मानसिंह ने तीन शादियां की थी। मानसिंह की

इसी तरह मेवात में दहंगल गोत्र के लोग भगवान राम के वंशज हैं और छिरकलोत गोत्र के मुस्लिम यदुवंशी माने जाते हैं। राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि जगहों पर ऐसे कई मुस्लिम गांव या समूह हैं जो राम के वंश से संबंध रखते हैं। डीएनए शोधाधुसार उत्तर प्रदेश के 65 प्रतिशत मुस्लिम ब्राह्मण बाकी राजपूत, कायस्थ, खत्री, वैश्य और दलित वंश से ताल्लुक रखते हैं।

पहली पत्नी मरुधर कंवर, दूसरी पत्नी का नाम किशोर कंवर था और मानसिंह ने तीसरी शादी गायत्री देवी से की थी। महाराजा मानसिंह और उनकी पहली पत्नी से जन्में पुत्र का नाम भवानी सिंह था। भवानी सिंह का विवाह राजकुमारी पद्मिनी से हुआ। लेकिन दोनों का कोई बेटा नहीं है एक बेटी है जिसका नाम दीया है और जिसका विवाह नरेंद्र सिंह के साथ हुआ है। दीया के बड़े बेटे का नाम पद्मनाभ सिंह और छोटे बेटे का नाम लक्ष्यराज सिंह है।

मुसलमान भी राम के वंशज हैं?

हालांकि ऐसे कई राजा और महाराजा हैं जिनके पूर्वज श्रीराम थे। राजस्थान में कुछ मुस्लिम समूह कुशवाह वंश से ताल्लुक रखते हैं। मुगल काल में इन सभी को धर्म परिवर्तन करना पड़ा लेकिन ये सभी आज भी खुद को प्रभु श्रीराम का वंशज ही मानते हैं।

इसी तरह मेवात में दहंगल गोत्र के लोग भगवान राम के वंशज हैं और छिरकलोत गोत्र के मुस्लिम यदुवंशी माने जाते हैं। राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि जगहों पर ऐसे कई मुस्लिम गांव या समूह हैं जो राम के वंश से संबंध रखते हैं। डीएनए शोधानुसार उत्तर प्रदेश के 65 प्रतिशत मुस्लिम ब्राह्मण बाकी राजपूत, कायस्थ, खत्री, वैश्य और दलित वंश से ताल्लुक रखते हैं। लखनऊ के एसजीपीजीआई के वैज्ञानिकों ने "लोरिडा और स्पेन के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर किए गए अनुवांशिकी शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला था। ❑

सूचना

समस्त पाठकों/ लेखकों, विचारकों तथा चिन्तकों से प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख आमंत्रित हैं। लेख, कविता, लघुकथा, आलेख, लघु-नाटिका, आध्यात्मिक प्रसंग, उवाच, समीक्षा, इतिहास-प्रमाण रचना, आधुनिक विज्ञानबद्ध, मानव धर्म एवं शुद्ध स्वच्छ रमणीय/ मानव धर्मी, प्रशासन-व्यवस्था, ज्योतिष विज्ञान, स्वास्थ संबंधी, योगदर्शन, भारतविद्या (इंडोलॉजी) आदि विषयों पर होने चाहिए। हो सके तो कम्प्यूटर टाईपिंग करके मेल कर दें। लेख पूर्व-प्रकाशित नहीं होने चाहिए। लेख के साथ अपना नाम, शाखा सदस्यता, फोन-नंबर अवश्य दें।

घरेलु शाक व स्वास्थ्य सृजन

डॉ. दीपक वैद्य

शाक-सब्जियाँ हमारे दैनन्दिन प्रयोग में आती हैं वे लागत की दृष्टि से अन्न की तुलना में सस्ती भी हैं एवं उपलब्ध स्थान पर घर, आँगन, छत पर थोड़े से साधनों से ही उगाई जा सकती हैं। पोषक तत्वों की इनमें बहुलता होती है एवं विविधता के कारण ही वे रुचिकर भी होती हैं। भारत जैसे विकासशील मूलतः शाकाहारी कृषि प्रधान राष्ट्र के लिए जहाँ हरीतिमा को देवोपम मानकर उनकी अभ्यर्थना की जाती है।

निरोग काया जिन गिने-चुने नियमों पर निर्भर है उनके विषय में बहुसंख्यक व्यक्तियों को अपरचित ही देखा जाता है। स्वास्थ्य रक्षा संबंधी यह अज्ञान आहार के विषय में अधिक है। यही कारण है कि हमारे राष्ट्र में कुपोषण संबधी रोग अधिक होते हैं। इससे अगणित बच्चे व बड़े अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं तो दूसरी ओर जीवन शक्ति के गड़बड़ा जाने के कारण रोगों का बाहुल्य भी पाया जाता है।

बहुत कम जानते हैं कि आहार की पूर्ति कुछ ऐसे साधनों से भी हो सकती है जो सर्वसुलभ हैं अथवा न्यूनतम श्रम से जिन्हें उपजाया जा सकता है। शाक-सब्जियाँ हमारे दैनन्दिन प्रयोग में आती हैं वे लागत की दृष्टि से अन्न की तुलना में सस्ती भी हैं एवं उपलब्ध स्थान पर घर, आँगन, छत पर थोड़े से साधनों से ही उगाई जा सकती हैं। पोषक तत्वों की इनमें बहुलता होती है एवं विविधता के कारण ही वे रुचिकर भी होती हैं। भारत जैसे विकासशील मूलतः शाकाहारी कृषिप्रधान राष्ट्र के लिए जहाँ हरीतिमा को देवोपम मानकर उनकी अभ्यर्थना की जाती है इनका महत्व आँका जाना चाहिए।

खाद्यान्न-दालें कभी भी सब्जी का विकल्प नहीं बन सकतीं । इनका उत्पादन एवं आयात भी एक सीमा तक हो सकता है। फिर उनसे सभी प्रमुख घटकों की पूर्ति कहाँ हो पाती है जो जीवनी शक्तिवर्धन हेतु उत्तरदायी माने जाते हैं। संतुलित पोषक आहार तो हरी सब्जियाँ एवं अन्न के परस्पर संतुलन से बनता है। हरी सब्जियों की उपलब्धि यदि प्रचुर मात्रा में हो तो वे अन्न का विकल्प भी बन सकती हैं कम से कम अन्न के उपभोग की मात्रा इससे घट सकती है। इस प्रयोजन हेतु एक ही मार्ग है घर-घर में शाकवाटिका प्रचलन।

पोषण समुचित रूप से होता रहे संतुलित आहार का व्यक्ति स्वयं चयन कर सके, इसके लिए अनिवार्य है कि जनमानस में संव्याप्त वे भ्रान्तियाँ मिटें जिनके कारण ग्राह्य आहार भी तल भूनकर पोषक तत्व रहित कर दिया जाता है। हरी वनस्पतियाँ कच्चे सलाद के रूप में अथवा उबालकर साधारण से मसालों के सम्मिश्रण से अपने गुण भी नहीं खोतीं स्वाभाविक रूप से शरीर में पहुँचकर बलवर्धन ही करती है। बासी-गली काफी दिनों की रखी शीतगृह में सहेजी गई सब्जियाँ भले बाहर से ताजी नजर आयें वीर्य व प्रभाव की दृष्टि से हीन होती हैं। उनसे वह उद्देश्य पूरा नहीं होता जो सुपोषण के सिद्धान्तों

में निहित है। अच्छा यही है कि सब्जियाँ अपने घर, आँगन, छत, छप्पर जो भी स्थान उपलब्ध हो वहाँ लगा ली जायें। यहाँ उनकी समुचित देखभाल होती रह सकती है। थोड़े से परिश्रम से वर्ष भर घर के सदस्यों के लिए प्रयोग जितनी मात्रा में पैदा हो सकती है तथा बागवानी एक श्रेष्ठ व्यायाम की उक्ति भी सार्थक होती रह सकती है। कन्द लकड़ी के बक्सों में क्षुप छोटी पॉलीथीन की थैलियों में तथा बेलें घर की बाड़ या छप्पर छत पर चढ़ाकर पैदा की जा सकती हैं। न्यूनतम स्थान हो तो भी काफी कुछ बागवानी उसमें हो सकती है।

अपवाद वश कहीं स्थान उपलब्ध न हो तो वहाँ सहकारी स्तर पर चार-पाँच परिवार मिलकर साझे की जमीन में शाकवाटिका लगा सकते हैं

अपवाद वश कहीं स्थान उपलब्ध न हो तो वहाँ सहकारी स्तर पर चार-पाँच परिवार मिलकर साझे की जमीन में शाकवाटिका लगा सकते हैं सम्मिलित श्रम में जो आनंद है वह अकेले में नहीं। पारस्परिक सहकार तो इससे बढ़ता ही है उत्पादन भी इस स्तर का हो सकता है कि न केवल उनकी पूर्ति होती रहे। खाद निराई-गुड़ाई के उपकरण हेतु अर्थ उपलब्धि भी होती रहे।

सम्मिलित श्रम में जो आनंद है वह अकेले में नहीं। पारस्परिक सहकार तो इससे बढ़ता ही है उत्पादन भी इस स्तर का हो सकता है कि न केवल उनकी पूर्ति होती रहे। खाद निराई-गुड़ाई के उपकरण हेतु अर्थ उपलब्धि भी होती रहे।

महात्मा गाँधी ने खादी एवं स्वदेशी वस्त्र आन्दोलन द्वारा एक जिहाद छेड़ा था जिसका मूल उद्देश्य था राष्ट्र को स्वावलम्बी बनाना। न्यूनतम कार्यक्रम बीज रूप में विकसित होकर कितना बड़ा स्वरूप बन गया यह सभी जानते हैं। आज की विश्वव्यापी खाद्य समस्या के परिप्रेक्ष्य में हमें इस न्यूनतम कार्यक्रम **"साग भाजी उगाओ स्वास्थ्य बनाओ" "अन्न बचाओ जीविका कमाओ"** को आन्दोलन का स्वरूप देना होगा। इसकी फलश्रुतियाँ अपरिमित हैं राष्ट्रीय विकास एवं स्वावलम्बन की गरिमा जैसे पक्ष तो साथ जुड़े ही हैं। शुभारम्भ हेतु एक या डेढ़ रुपये के बीज, थोड़ी सी जमीन एवं सर्वसुलभ घरेलू खाद के प्रयोग से इस आन्दोलन को गति दी जा सकती है। पानी की सिंचाई के बड़े साधनों की भी आवश्यकता नहीं। इतने छोटे स्थान के लिए तो बाल्टी या फुहारे से अल्प समय में ही सिंचाई की जा सकती है। इस प्रकार सब्जी की खेती का लाभ एक या डेढ़ माह के अन्दर ही मिलने लगता है। बुवाई पौध द्वारा भी हो सकती है एवं बीज को सीधे भूमि में बोकर भी। अंकुरित बीज के साथ पॉलीथीन की थैलियों में पौधे के रूप में तैयार किए जाते हैं। ऐसी पौधे एक साथ एक स्थान पर तैयार कर वितरित की जा सके तो उत्तम है। यदि बीज ही लगाने पड़े तो लकड़ी का बक्सा, गमले, क्यारी में रखी मिट्टी की अच्छी तरह गुड़ाई करके उसमें पहले खाद मिला लेनी चाहिए। आँगन में उपलब्ध जमीन को क्यारियों में विभाजित कर मिट्टी समतल कर बीज छोड़ देना चाहिए। बीजों के बीच में क्षुप के बढ़ने पर फैलने योग्य स्थान अवश्य रखना चाहिए। यह सावधानी जरूरी है कि वर्षा अथवा सिंचाई से एकत्रित पानी के निकास की समुचित व्यवस्था हो। उपकरण जो किसी भी घरेलू शाक वाटिका के लिए अनिवार्य माने जाते हैं वे है-फावड़ा, खुरपी, कुदाली, जमीन को समतल करने के लिए करहा, कैंची, चाकू, हजारा एवं बाल्टी टोकनी जैसी रोजमर्रा के प्रयोग की वस्तुएँ।

जनवरी माह में लगाई जा सकने योग्य सब्जियाँ है गाजर, मूली, शलजम, गांठगोभी एवं चुकन्दर पहले पखवाड़े में तथा ककड़ी, लौकी, मिर्च, तोरई, खीरा, परवल, बैंगन दूसरे पखवाड़े में। फरवरी में पहले पखवाड़े में वे सब सब्जियाँ लगाई जा सकती हैं फरवरी के दूसरे पखवाड़े एवं मार्च के पूरे माह में करेला, टिण्डा, भिण्डी, काशीफल, बैंगन, पोदीना जैसी सब्जियाँ लगाई जाा सकती हैं। अप्रैल के पहले पखवाड़े में भिण्डी, खीरा, ककड़ी, पालक, ग्वार, लौकी तथा दूसरे पखवाड़े में चौलाई के साथ पहले वर्णित सभी औषधियाँ लगाई जा सकती हैं। मई के पूरे माह में मूली, खीरा, मिण्डी, पालक, चौलाई लगाई जा सकती है। जून में भिण्डी, करेला, सेम व अरबी के अलावा टमाटर, काशीफल, फूलगोभी माह भर लगाई जा सकती है। जुलाई का प्रथम पखवाड़ा भिण्डी, फूलगोभी, सेम, मूली, ग्वारफली तथा द्वितीय पखवाड़ा शलजम, गाँठगोभी, मिर्च, टमाटर के लिए उपयुक्त है। वर्षा लगभग हर स्थान पर इस माह में आरंभ हो जती है। अतः इनके रखरखाव, वृद्धि हेतु कुछ अधिक नहीं करना पड़ता। अगस्त माह में फूलगोभी, गाँठगोभी, भिण्डी, बैंगन, सेम, टमाटर, सलाद, मिर्च आसानी

से पैदा किए जा सकते हैं। जबकि सितम्बर माह कन्द यथा आलू, प्याज, लहसुन एवं टमाटर, मिर्च, सलाद के लिए सही माना गया है। इसी माह के दूसरे पखवाड़े में परवल, मटर, टिण्डा भी लगाये जा सकते हैं अक्टूबर में उपरोक्त सब्जियों के अतिरिक्त शलजम, गाजर, चुकन्दर, सिमला मिर्च, शकरकंद भी लगाई जा सकती है। नवम्बर का महा शीत के आगमन का समय है इसमें गाजर, मूली के अतिरिक्त सलाद, मटर सेम मुख्य सब्जियाँ हैं जिनकी बुवाई की जाती है। दिसम्बर में सेम, लौकी, तोरई, पोदीना, करेला प्रथम पखवाड़े में तथा तोरई, शकरकंद, चुकन्दर, सलाद, टमाटर दूसरे पखवाड़े मे लगाये जाने वाली सब्जियाँ हैं। यह एक मोटा सिद्धान्त हुआ। बुवाई का समय एक सप्ताह इधर-उधर भी हो सकता है। लेकिन बीज व पौध लगाते समय इन समय विशेषों का ध्यान रखना जरूरी है। इन सभी में बीजों के बीच में से 7 इंच का तथा कतारों के बीच में भी यही अंतर रखना ठीक है। काशीफल, लौकी, परवल, तोरई फलवाली तथा सेम ऐसी फली वाली तरकारियाँ हैं जिन्हें बेल के रूप में छप्पर पर या छत पर छाया या चढ़ाया जा सकता है। बरामदे में पोर्च में, खम्भों के सहारे भी ये चढ़ जाती हैं। मटर, ग्वार, मिर्च, टमाटर, भिण्डी, बैंगन, करैला, टिण्डा, खीरा ऐसी तरकारियाँ हैं जिन्हें सीमित स्थान पर लकड़ी के बक्सों में पालीथिन के बैगों में रखकर छत पर अथवा आँगन पर लगाया जा सकता है। यों तो मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर,के साथ, अदरक, लहसुन भी लगाये जा सकते हें पर इन्हें, आलू, अरबी, गांठगोभी व पात गोभी की तरह क्यारियों में लगाया जाना ज्यादा उपयुक्त माना जाता है। जो भी सब्जी अधिक तादाद में लगानी

हो स्थान उपलब्ध हो तथा कन्द प्रधान सब्जियों को प्रधानता देनी हो तो क्यारियां बनाकर बीच में उपयुक्त जगह छोड़ते चलना ही ठीक रहता है। कुछ बीज कड़े होते हैं और जमने में अधिक समय लेते हैं। अतः इन्हें पहले पानी में भिगो लेना चाहिए। बीजों को कुछ देर बाद निकाल कर सतह से चौथाई या आधा इंच नीचे रखकर ऊपर मिट्टी भुरभुरा दें। हल्का सा पुआल बिछाकर आवश्यकतानुसार थोड़ा पानी छिड़क दें। पौधे जैसे-जैसे अंकुरित होने लगे पुआल को धीरे-धीरे हटा देना चाहिए। पानी फुहारे से देना ही ठीक है। छोटे- छोटे गमलों में इन पौधों को 6-7 इंच लम्बे होने व जड़े मोटी हो जाने पर स्थानान्तरित किया जा सकता है। लगाते ही पानी दे दिया जाये। पर्याप्त स्थान छोटे खेत की आकृति में उपलब्ध हो तो शाक भाजी की फसल एक बार ही खेतों में बोकर उगाई जा सकती है। जुताई-बुवाई खाद देने का ढंग ठीक वैसा ही है जैसा कि बड़े खेतों में किया जाता है। निराई-गुड़ाई समय-समय पर होती रहे इसका ध्यान रखना जरूरी है। जो सब्जियाँ रबी की (अक्टूबर-नवम्बर) होती है उनमें पानी की आवश्यकता पड़ सकती है। खरीफ वाली फसलों को सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है।

विभिन्न प्रकार की शाक-सब्जियों में दैनन्दिन प्रयोग के लिए वर्ष भर कोई न कोई ऐसी तरकारी उपलब्ध हो सकती है जिससे पोषक आहार की पूर्ति भली प्रकार होती रहे। स्टार्च-विटामिन्स की प्रधानता की दृष्टि से आलू, शलजम, चुकन्दर, गाजर, काशीफल भली प्रकार अपनी भूमिका निभा सकते हैं। पाचन संस्थान की दृष्टि से मूली, गाजर, पालक, चौलाई, बथुआ बड़े उपयुक्त हैं शकरकंदी भारतवर्ष की मुख्य वनस्पति है जो अन्न की कमी को पूरा करती है। इसे ऋषि अन्न माना जाता है। इसके आटे से पकवान बनते हैं व गरीब जन समुदाय इसे भून कर बड़े चाव से खाता है। अदरक, धनिया, प्याज, लहसुन, मिर्च चटनी की जरूरत पूरी करते हैं। आहार को संतुलित बनाने के लिए इससे अधिक स्वादिष्ट सस्ता सुपाच्य सम्मिश्रण और हो क्या सकता है। अदरक क्षुधावर्धक होने के साथ पाचक रसों को उत्तेजित करने वाली उपयुक्त औषधि भी है। सुण्ठी इसी को सुखाकर बनाई जाती है जो मसालों व वातरोगों में काम आती है।

टमाटर हर मौसम में पैदा होने वाला समग्र आहार है जो विटामिन्स से भरपूर है एवं सर्वसुलभ है। वैज्ञानिक इसके गुण गाते हुए नहीं थकते। पुष्टिवर्धक होने के साथ ही यह सुस्वाद सुपाच्य एवं एक औषधि भी है। उसके अलावा मटर, पत्तागोभी, सेम, करोंदा, चने की भाजी, मेथी, सोआ सभी गुणों की दृष्टि से भरी पूरी हैं।

इन सभी की महत्ता को समझाया जा सके तो कोई कारण नहीं कि पोषण की समस्या से जूझा न जा सके। बागवानी को नियमित व्यायाम रूप में अपनाया जा सकता है एवं रखरखाव के तरीकों की मामूली सी जानकारी में रुचि लेकर हरीतिमा संवर्धन के इस शाक वाटिका आंदोलन को चलाया जा सके तो अन्न का विकल्प साग बनाया जा सकता है।

❑

धन के लिए परेशान हर व्यक्ति को पढ़ना चाहिए ये 6 मंत्र

-आचार्य श्रीराम शर्मा

☞ देखने पर सदाचारी पुरुष निर्धन और दु: खी मालूम होते हैं, पर वास्तव में यह बात नहीं है। सदाचारी पुरुष में असाधारण दैवी शक्ति है, वह दु:खी कैसा। सदाचारी पुरुष निर्धन तो हो ही नहीं सकता।

☞ सच पूछा जाए तो सच्चा खजाना सदाचारी के ही पास है। उसका वह खजाना कभी खाली नहीं होता, उसे खर्च करने पर बढ़ता ही जाता है। सदाचार के विचारों का चिंतन करने से ही आत्मा को अपार शांति और शीतलता प्राप्त होती है।

☞ जो मनुष्य अपने कर्तव्यों का यथोचित रीति से पालन करता है, उस सदाचारी मनुष्य को कभी भी कोई दु:ख नहीं सहन करना पड़ता। क्योंकि वह ईश्वर की इच्छानुसार कार्य करता है, इसलिए ईश्वर सदैव उस पर दया दृष्टि रखते हैं।

☞ जिन कार्यों को करने की हृदय स्वीकृति दे, वही मनुष्य का कर्तव्य अथवा धर्म है और हृदय जिन कार्यों को करने की सलाह न दे, उन्हें नहीं करना चाहिए क्योंकि वे अधर्म या अकर्तव्य हैं।

☞ दुष्टों को सदा अपने दुश्मनों का भय बना रहता है कि कहीं कोई हमारा अनिष्ट न कर दे, पर सदाचारी के पास ये सब बातें कहां? वहां न कोई दोस्त है न दुश्मन। उसके लिए तो सारा संसार एक-सा है।

☞ ईश्वर चाहता है कि प्राणी इस जगत में अच्छे-अच्छे कार्य करें और अंत में परम मोक्ष को प्राप्त हो।

☞ असफलता यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं किया गया। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में हर क्षेत्र में सफल होना चाहता है चाहे नौकरी हो या व्यापार, विद्यार्जन हो, प्रतियोगी परीक्षा हो, चाहे कोई कलाकार, संगीतकार, वैज्ञानिक, व्यवसायी हो या कृषक। लड़का हो या लड़की, विवाहित हो या अविवाहित, सभी सफलता चाहते हैं। लेकिन सफलता ख्याली पुलाव पकाने वाले या कोरी कल्पनाओं में सोए रहकर सपने देखने वालों को नहीं मिलती। सफलता की कहानी लिखी जा सके इससे पहले कुछ सूत्रों को अपनाना होगा। दुनिया के सफलतम व्यक्तियों जिन्होंने अपने जीवन में कामयाबी हासिल की उन्होंने कुछ सूत्रों को जीवन में स्थान दिया। सफलता के शिखर को जिन्होंने छुआ, उस पर प्रतिष्ठित हुए ऐसे महापुरुषों के जीवन में अपनाए गए प्रयोगों से हम प्रेरणा लें।

दृढ़ इच्छा शक्ति-सफलता का मूल मनुष्य की इच्छाशक्ति में सन्निहित होती है। समुद्र से मिलने की प्रबल आकांक्षा करने वाली नदी की भांति वह मनुष्य भी अपनी सफलता के लिए मार्ग निकाल लेता है, जिसकी इच्छाशक्ति दृढ़ और बलवती होती है, उसके मार्ग में कोई भी रुकावट बाधा नहीं डाल सकती। संसार के सभी छोटे-बड़े कार्य किए जा सकने के माध्यम शक्ति है। लेकिन वास्तविक शक्ति मनुष्य की इच्छा शक्ति है। इच्छा की स्फुरण से कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। प्रेरणा से व्यक्ति कर्म करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।

परिश्रम एवं पुरुषार्थ-जो व्यक्ति अपने शरीर से हमेशा अपने लक्ष्य के अनुरूप श्रम करने को तत्पर रहता है, अपनी शक्तियों का समुचित उपयोग करता है, वह कृतकृत्य हो जाता है। सक्रियता ही जीवन है और निष्क्रियता ही मृत्यु। श्रम से जी चुराने वाले, आलस्य और प्रमाद में पड़े रहने वाले युवा को युवा तो क्या जीवित भी नहीं कहा जा सकता। श्रम करने से शरीर स्वस्थ एवं स्फूर्तिवान बनता है। जिससे वांछित सफलता की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

आत्म विश्वास एवं आत्म निर्भरता-कोई व्यक्ति परिश्रमी पुरुषार्थी तो है किन्तु उसमें आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता की भावना का अभाव है, तो भी उसका पुरुषार्थ व्यर्थ चला जायेगा। अपने आपको दीन हीन नहीं शक्तिशाली समझें। विश्वास करें कि बीज रूप में मेरे भीतर सारी शक्तियां विद्यमान है। मैं सब कुछ कर सकता हूँ, जो अन्य सफल व्यक्तियों ने किया है।

निरन्तर प्रयास-जो व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति तक बिना रुके निरन्तर चलते रहते हैं, चाहे कछुए की भांति धीरे-धीरे ही क्यों न हो, सफल हो जाते हैं। जिन्हें अपने ध्येय, लक्ष्य के प्रति लगन है, निष्ठा है, उसके मार्ग में ऐसा कौन सा अवरोध हो सकता है जो उसे रोक सके? लेकिन आज का सोया हुआ कल बदल गया या चार दिन परिश्रम करने के बाद पानी के बुलबुले की भांति लक्ष्य देने के बाद कुछ दिन लक्ष्य के प्रति समर्पण दिखाने के बाद आराम करने लग गए तो खरगोश की भांति (कछुए व खरगोश की कहानी की भांति) असफलता ही हाथ लगेगी। लक्ष्य के प्रति समर्पित व्यक्ति का सूत्र होता है-कोई छुट्टी नहीं, किसी से कोई अपेक्षा नहीं, कोई भेदभाव नहीं।

नकारात्मक सोच से बचें-नकारात्मक सोच अर्थात् निराशा, भय, सन्देह, उद्विग्नता, अविश्वास के भाव, घुटन भरी सोच। चिन्ता और चिता एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं, जो व्यक्ति की जीवनी शक्ति एवं कार्यक्षमता को घटाते- घटाते समाप्त कर देती है। अतीत या भविष्य को लेकर चिन्तित न हों बल्कि स्वस्थ चिन्तन करें।

समय का प्रबन्धन-''जो जीवन से प्यार करते हों वे आलस्य में समय न गंवायें।'' समय ही जीवन है। हम समय की कीमत चुकाकर ही सफल विद्यार्थी, कलाकार, संगीतकार, धनपति, आविष्कारक, किसी विषय का विशेषज्ञ हो सकते हैं।

❑

पसंदीदा रंग के अनुसार जानिए स्वभाव से जुड़ी खास बातें

कौशल पाण्डेय (ज्योतिष)

रंगों की पसंद के अनुसार भी किसी व्यक्ति का स्वभाव, अच्छी-बुरी आदतें मालूम की जा सकती हैं। ज्योतिष के अनुसार जैसा हमारा स्वभाव होता है, वैसे ही कलर हमारी पसंद होते हैं। रंगों का ग्रहों से भी गहरा संबंध होता है। ग्रहों के दोषों को दूर करने के लिए अलग-अलग रगों के रत्न धारण किए जाते हैं। व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह अधिक प्रभावी होता है, उसके अनुसार ही व्यक्ति का स्वभाव और पसंद-नापसंद बनती है। यहां कुछ रंगों के नाम दिए जा रहे हैं। इनमें से अपना पसंदीदा रंग चुनिए और जानिए किसी भी व्यक्ति के स्वभाव से जुड़ी अच्छी-बुरी बातें।

रंगों के नाम-

गुलाबी (Pink), कत्थई (Brown)
जामुनी (Purple), लाल (Red)
सफेद (White), काला (Black)
नीला (Blue), हरा (Green)
पीला (Yellow)

इन रंगों में से कोई एक रंग चुनें और जानिए स्वभाव से जुड़ी खास बातें।

गुलाबी रंग-जिन लोगों को गुलाबी रंग अधिाक पसंद होता है, वे जीवन साथी के प्रति काफी भावुक होते हैं और जीवन साथी का ध्यान रखने वाले होते हैं। इनके मित्रों की संख्या भी अधिक रहती हैं। मित्रों से विशेष स्नेह प्राप्त करते हैं। सभी लोगों से प्रेम से मिलते हैं। इनका स्वभाव काफी रोमांटिक होता है। ये लोग दूसरों के गुणों पर अधिक ध्यान देते हैं और बुराइयों को अधिकतर नजरअंदाज करते हैं। ये लोग कभी-कभी अधिक शर्मीले भी हो जाते हैं। सुंदरता की ओर अधिक आकर्षित होते हैं।

रंगों की पसंद के अनुसार भी किसी व्यक्ति का स्वभाव, अच्छी-बुरी आदतें मालूम की जा सकती हैं। ज्योतिष के अनुसार जैसा हमारा स्वभाव होता है, वैसे ही कलर हमारी पसंद होते हैं। रंगों का ग्रहों से भी गहरा संबंध होता है। ग्रहों के दोषों को दूर करने के लिए अलग-अलग रगों के रत्न धारण किए जाते हैं। व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह अधिक प्रभावी होता है, उसके अनुसार ही व्यक्ति का स्वभाव और पसंद-नापसंद बनती है।

इन्हें हिंसा पसंद नहीं होती है। किसी भी वाद-विवाद का निपटारा शांतिपूर्ण तरीके से करना पसंद करते हैं।

हरा रंग-जिन लोगों को हरा रंग प्रिय है, वे डाउन टू अर्थ स्वभाव वाले होते हैं। हर परिस्थिति में अपने स्वभाव को बनाए रखते हैं। सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद भी सामान्य इंसान की भांति बने रहते हैं। ये लोग किसी भी दुखी नहीं देख पाते हैं। यदि इनके आसपास कोई दुखी व्यक्ति होता है तो उसके दुख बांटने का प्रयास करते हैं। ये बहुत शांतिप्रिय इंसान होते हैं। लड़ाई-झगड़ों से दूर ही रहते हैं। जिस प्रकार हरा रंग आंखों को सुखद अहसास देता है, ठीक वैसा ही स्वभाव हरा रंग पसंद करने वाला भी होता है। ये लोग इनके प्रिय जनों के बीच काफी महत्व रखते हैं।

नीला रंग-जो लोग नीला रंग पसंद करते हैं, वे स्वाभिमानी होते हैं। किसी से मदद लेना इन्हें पसंद नहीं होता है। प्रेमी को पूरा समय देते हैं और उसकी जरुरतों का ध्यान रखते हैं। इन्हें भरोसेमंद माना जा सकता है। किसी का विश्वास नहीं तोड़ते हैं और किसी अन्य व्यक्ति पर आसानी से विश्वास भी नहीं करते हैं। मित्रता करने से पहले पूरी सावधानी रखते हैं और जब इन्हें

यह सुनिश्चित हो जाता है कि व्यक्ति मित्रता करने योग्य है, तब ही मित्रता करते हैं। किसी भी काम को अपने ही तरीके से करते हैं और जिम्मेदारी का निर्वाह करते हैं।

काला रंग–जिन लोगों को काला रंग बहुत अधिक प्रिय है, वे थोड़े रूढ़िवादी हो सकते हैं। साथ ही, इन लोगों को गुस्सा भी बहुत जल्दी आता है। इन्हें किसी भी काम में कोई बदलाव पसंद नहीं होता है। जो काम जैसा चल रहा है, ये लोग उस काम को वैसा ही चलाना चाहते हैं। किसी भी प्रकार का बदलाव आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते हैं। काला रंग पसंद करने वाले लोग दूसरों से मान–सम्मान पाना चाहते हैं। साथ ही, ये लोग अपनी शक्ति बढ़ाने भी चाहते हैं। इन्हें लोगों से उचित दूरी बनाए रखना पसंद होता है। हर किसी से बहुत अधिक निकटता नहीं रखते हैं।

सफेद रंग–जिन लोगों को सफेद रंग अधिक पसंद है, सामान्यत: वे दूरदर्शी और आशावादी होते हैं। ये लोग योजना बनाने में काफी पारंगत होते हैं, इसी वजह से अधिकतर कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। ये लोग घर–परिवार और कार्य क्षेत्र में अच्छा सामंजस्य बनाए रखते हैं। कभी–कभी ये घमंड का शिकार भी हो सकते हैं। सफेद रंग शांति का प्रतीक है और इसी वजह से जो लोग स्फेद रंग पसंद करते हैं, वे भी शांति प्रिय होते हैं। नए लोगों से एकदम मित्रता नहीं बढ़ाते हैं। इनके स्वभाव में लज्जा यानी शर्म भी रहती है। किसी भी नए स्थान पर या नए लोगों के बीच एकदम सहज महसूस नहीं करते हैं।

लाल रंग–जिन लोगों को लाल रंग पसंद होता है, वे बहुत सावधान रहने वाले होते हैं। इनके जीवन प्रेम का बहुत अधिक महत्व होता है। ये लोग बहुत अच्छे प्रेमी सिद्ध हो सकते हैं। लाल रंग उत्साह और जोश का प्रतीक है और इसी वजह से जो लोग ये रंग पसंद करते हैं, वे भी जोशीले होते हैं। इन्हें अपना काम पूरे जोश के साथ करने में ही आनंद प्राप्त होता है। ये लोग जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीते हैं। सामान्यतरू ये लोग दूसरों के स्वभाव को बहुत जल्दी समझ लेते हैं।

ब्राउन कलर–जिन लोगों को ब्राउन कलर प्रिय होता है, वे लोग आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। लगातार सफलता मिलने के बाद भी अपने स्वभाव में बने रहते हैं। घमंड और अहंकार से दूर रहने का प्रयास करते हैं। इनका स्वभाव मित्रतापूर्ण और विनम्र रहता है, इस कारण अधिक सफल होने के बाद के लोग इनसे आसानी से मिल सकते हैं। घर–परिवार हो या मित्रता, दूसरों की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। भावुक स्वभाव के कारण दूसरों के दुखों को दूर करने का प्रयास करते रहते हैं। मिलनसार स्वभाव के कारण दूसरों को आपका साथ बहुत प्रिय होता है। जीवन की कठिन परिस्थितियों को काबू करने के लिए धैर्य और मेहनत का सहारा लेते हैं। सुझ–बुझ से विपरीत हालातों से बाहर आ जाते हैं।

जामुनी रंग–जामुनी (Purple) रंग पसंद करने वाले लोग दूरदर्शी होते हैं। भविष्य में किन कामों से लाभ मिलेगा और किन कामों में नुकसान हो सकता है, ये लोग पहले से ही अंदाजा लगा सकते हैं। इनके स्वभाव में रचनात्मकता रहती है, इस कारण किसी भी काम को अलग–अलग तरीके से करने में इन्हें मजा आता है। इन्हें घर सजाने की और ड्रेस डिजाइन्स अच्छी समझ होती है। ये लोग अधिक जिम्मेदारियों से घबराते हैं और परेशानियों को हल करने में भी कभी–कभी नाकाम हो जाते हैं। इन्हें भीड़ का हिस्सा बनना पसंद नहीं होता है। भीड़ से अलग काम करने पर अधिक विश्वास रखते हैं। ये लोग दूसरों की नकल करना पसंद नहीं करते हैं और ना ही ये चाहते हैं कि कोई इनके कामों की नकल करें।

पीला रंग–पीला रंग पसंद करने वाले लोग हंसमुख स्वभाव वाले होते हैं। जीवन को सकारात्मक रूप में जीते हैं। ये लोग नए विचारों के साथ आगे बढ़ते हैं और कार्यों में सफलता पाने का प्रयास करते हैं। ये हमेशा खुश रहने वाले इंसान होते हैं। दूसरों को सही मार्गदर्शन देते हैं। सभी की मदद के लिए तैयार रहते हैं। जीवन में जब भी विपरीत समय आता है तो उस समय भी ईमानदारी के साथ कार्यों में लगे रहते हैं। कड़ी मेहनत से बुरा समय टल जाता है और सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

ध्यान रखें– यहां एक–एक रंग के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव से जुड़ी बातें बताई गई हैं। यदि किसी व्यक्ति को एक से अधिक रंग प्रिय हैं तो उसके स्वभाव में परिवर्तन भी हो सकता है। साथ ही, कुंडली में स्थिति ग्रहों की स्थिति के आधार पर भी व्यक्ति के स्वभाव में भिन्नता हो सकती है। ❑

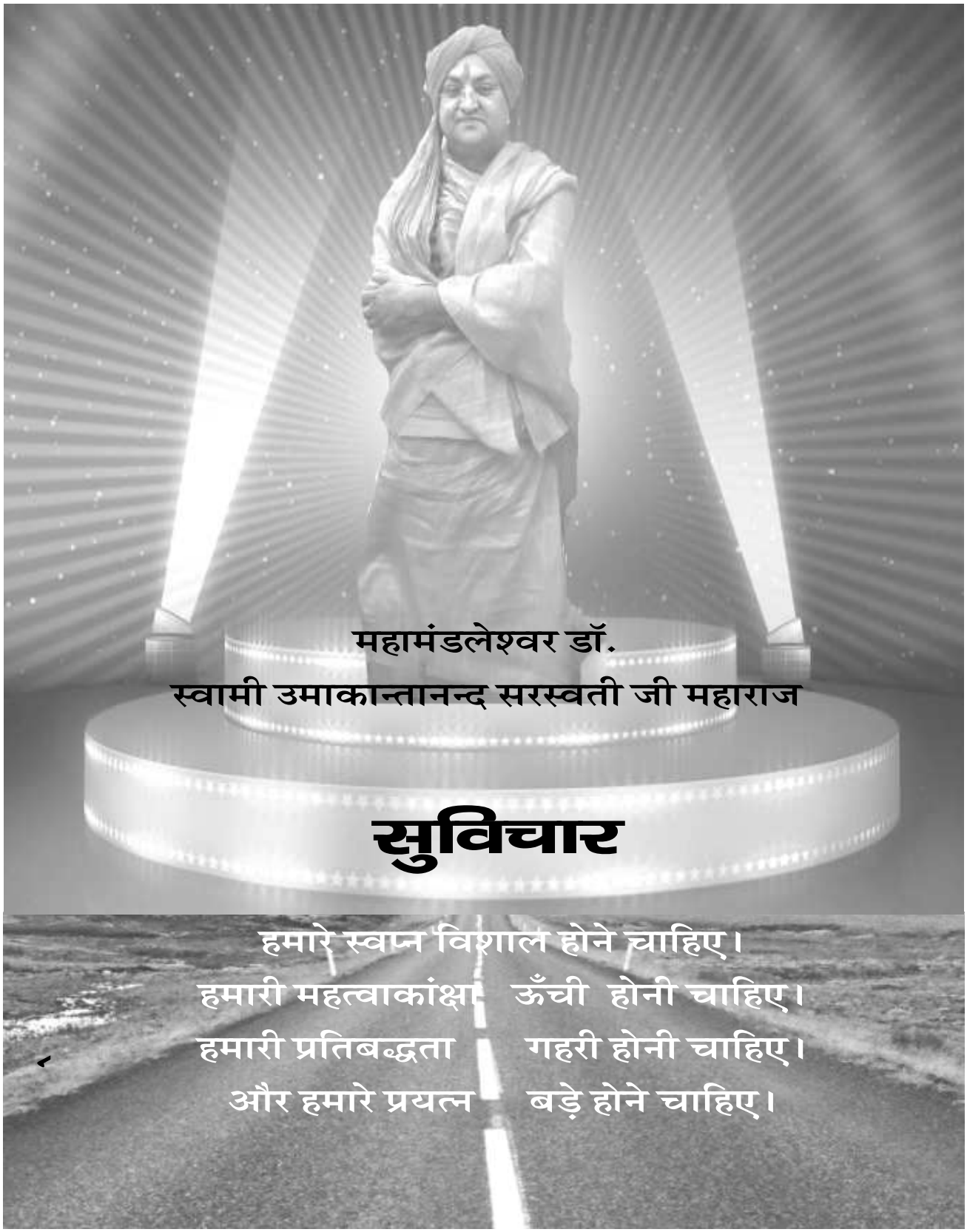
महामंडलेश्वर डॉ.
स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज
सुविचार
हमारे स्वप्न विशाल होने चाहिए।
हमारी महत्वाकांक्षा ऊँची होनी चाहिए।
हमारी प्रतिबद्धता गहरी होनी चाहिए।
और हमारे प्रयत्न बड़े होने चाहिए।

भारत का इतिहास किसने सबसे पहले भारत पर आक्रमण किया

बहुतायत की भूमि भारत ने अपने समृद्ध इतिहास में समय-समय पर विभिन्न उभरती हुई शक्तियों द्वारा कई आक्रमण देखे हैं। इनमें से भारत पर पहले बड़े पैमाने के आक्रमण के लिए सिकंदर महान अलेक्जेंडर द ग्रेट को जिम्मेदार ठहराया गया है।

अपने विशाल धन, सोने, हीरे, मसालों, पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों, उपजाऊ भूमि और अनुकूल मौसम की स्थिति के कारण भारत को प्राचीन समय से सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता है। नतीजतन यह हमेशा दुनिया भर में उभरती हुई ताकतों के निशाने पर बना रहा है। हालांकि उस समय में विदेशी सेना का सबसे बड़ा आक्रमण सिकंदर महान ने 327 ईसा पूर्व में किया था।

अपने विशाल धन, सोने, हीरे, मसालों, पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों, उपजाऊ भूमि और अनुकूल मौसम की स्थिति के कारण भारत को प्राचीन समय से सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता है। नतीजतन यह हमेशा दुनिया भर में उभरती हुई ताकतों के निशाने पर बना रहा है।

'सिकंदर महान अलेक्जेंडर द ग्रेट' मैसेडोन, मैसिडोनिया में स्थित यूनानी का प्राचीन साम्राज्य, का राजा था। 356 ईसा पूर्व पेला में जन्मे सिकंदर अलेक्जेंडर को शीर्षक 'महानधग्रेट' मिला क्योंकि वे एक ऐसे शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी सैन्य कमांडर थे जो अपने जीवन काल में लड़े सभी युद्धों में अपराजित रहे।

उन्हें अपने पिता राजा फिलिप से मैसेडोन का कटर साम्राज्य केवल बीस वर्ष की छोटी सी उम्र में विरासत में मिला और उसने बिना समय गवाएँ सीरिया, मिस्र और फारस समेत सभी पड़ोसी राज्यों पर विजय प्राप्त की। सेंट्रल एशिया, जिसे बैक्ट्रिया के रूप में जाना जाता है, के संपूर्ण क्षेत्र को जीतने के बाद उसने हिंदुकुश के पहाड़ों को पार किया और मास्गागा पहुंच कर इसे भी जीत लिया तथा अलेक्सेन्ड्रिया शहर की स्थापना की। वहां एक यूनानी सेना की टुकड़ी छोड़ने के तुरंत बाद उसने 326 ईसा पूर्व में अपनी मजबूत सेना के साथ भारत पर आक्रमण कर दिया।

दरअसल सिंधु नदी पार करने के बाद सिकंदर अलेक्जेंडर समृद्ध शहर तक्षशिला पहुंचा जिस पर राजा अंभी शासन कर रहा था। राजा अंभी ने सिकंदर अलेक्जेंडर के समक्ष आत्मसमर्पण किया और उसे बहुत सारे उपहारों के साथ सम्मानित किया और बदले में उन्होंने सिकंदर अलेक्जेंडर की सेना को समर्थन दिया और इस तरह उन्होंने सभी पड़ोसी शासकों-चेनूब, अबिसारा और पोरस को धोखा दिया।

बाद में सिकंदर अलेक्जेंडर को वर्तमान पंजाब में झेलम नदी के पास पौराव साम्राज्य के राजा पोरस का सामना करना पड़ा। शुरुआत में उसको झेलम नदी को उन सभी घोड़ों के साथ पार करना और दूसरी ओर खड़ी पोरस की सेना का सामना करना असंभव दिख रहा था लेकिन सिकंदर अलेक्जेंडर जैसे एक सामरिक सेना कमांडर के लिए कुछ भी असंभव नहीं था। बहुत जल्द सिकंदर अलेक्जेंडर

ने एक सटीक योजना तैयार की और तूफान की रात में उस नदी को पार कर दिया। राजा पोरस अपने क्षेत्र में सिकंदर अलेक्जेंडर की सेना को देखकर बहुत आश्चर्यचकित था लेकिन फिर भी उसने आत्मसमर्पण नहीं किया बल्कि सिकंदर को लड़ाई में कड़ी टक्कर दी।

सिकंदर अलेक्जेंडर राजा पोरस के राजसी व्यक्तित्व और उसकी बहादुरी से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने राजा पोरस के राज्य को जितने के बावजूद उसे वापिस दे दिया। इतना ही नहीं सिकंदर अलेक्जेंडर ने वे छोटे पड़ोसी क्षेत्रों को भी पोरस राज्य में जोड़ दिया जो उसने पहले जीते थे।

वहां से फिर सिकंदर अलेक्जेंडर आसन्न आदिवासी क्षेत्रों की तरफ बढ़ गया तथा 'ग्लेनसीज' और 'काथोस' राज्यों को जीता और उन्हें पोरस साम्राज्य में जोड़ा। बाद में वह आगे बढ़कर मगध साम्राज्य की सीमा रेखा, ब्यास नदी के किनारे, तक पहुंच गया लेकिन मगध की अत्यंत शक्तिशाली सेना, जो उसका इंतजार कर रही थी, को देखने के बाद वह आगे बढ़ने का साहस नहीं कर सका। इसके अलावा उस समय तक उसके सैनिक भी, जो लगातार युद्ध लड़ रहे थे, बहुत थक गए थे। सैनिक अपनी मातृभूमि में वापस लौटने के लिए दृढ़ता से इच्छुक थे। नतीजतन सिकंदर अलेक्जेंडर को वहां से वापस लौटना पड़ा हालांकि दुर्भाग्यवश 323 ईसा पूर्व में बेबीलोन पहुंचने के बाद सिकंदर अलेक्जेंडर की मृत्यु हो गई।

सिकंदर अलेक्जेंडर का आक्रमण- एक ऐतिहासिक घटना

सिकंदर अलेक्जेंडर का आक्रमण भारत के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना

सिकंदर अलेक्जेंडर राजा पोरस के राजसी व्यक्तित्व और उसकी बहादुरी से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने राजा पोरस के राज्य को जितने के बावजूद उसे वापिस दे दिया। इतना ही नहीं सिकंदर अलेक्जेंडर ने वे छोटे पड़ोसी क्षेत्रों को भी पोरस राज्य में जोड़ दिया जो उसने पहले जीते थे।

के रूप में मशहूर हो गया क्योंकि इस आक्रमण ने भारत की सीमा रेखाओं और सिकंदर अलेक्जेंडर के फारसी साम्राज्य को एक दूसरे के करीब ला दिया। सिकंदर अलेक्जेंडर के आक्रमण के बाद भारत में लगभग सभी छोटे राज्य एक झंडे के तहत एकजुट हो गए थे हालांकि जल्द ही वे फिर से स्वतंत्र राज्य बन गए। 327 ईसा पूर्व में पोरस राज्य ने चेनुब और झेलम नदियों के बीच पूरे क्षेत्र को घेर लिया था।

हालांकि भारतीय संस्कृति भी अपनी संस्कृति पर ग्रीक प्रभाव या इसकी सैन्य तैयारी के कौशल से काफी हद तक अप्रभावित रही लेकिन अपने पड़ोसियों के साथ देश के राजनीतिक संबंध निश्चित रूप से इस आक्रमण के परिणामों से प्रभावित थे। सिकंदर अलेक्जेंडर के अपने देश में वापस चले जाने के बाद पूरे देश के सभी राज्यों में एकीकरण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। नतीजतन भारत के उत्तरी राज्यों ने चंद्रगुप्त मौर्य के उभरते हुए सबसे शक्तिशाली साम्राज्य के तहत एकजुट होने की उनकी इच्छा को प्रदर्शित करना शुरू कर दिया था जो उन दिनों हर राज्य को जीतते जा रहे थे। बहुत जल्द चंद्रगुप्त मौर्य ने भारत के अधिकांश राज्यों पर कब्जा कर लिया और उनका मौर्य साम्राज्य में विलय कर दिया।

सिकंदर अलेक्जेंडर के आक्रमण द्वारा लाया गया एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन यह था कि संस्कृतियों का आदान-प्रदान भारत और यूनानियों के बीच शुरू हुआ। सिकंदर अलेक्जेंडर ने यूरोप और भारत

के बीच कई समुद्री और भूमि मार्गों की स्थापना की थी ताकि भारतीय और यूरोपीय सभ्यता को एक-दूसरे के करीब आने के लिए पर्याप्त अवसर मिले। इसके अलावा पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में एक सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिला था।

एक सैन्य कमांडर होने के अलावा सिकंदर अलेक्जेंडर एक मजबूत प्रशासक भी था। भारतीय उपमहाद्वीप की ओर बढ़ने से पहले उसने दुनिया के इस हिस्से में यूनानियों के स्थायी निपटान के बारे में पहले से ही सभी चीजों की योजना बनाई थी। उसने पहले योजना बनाई थी और फिर सिंधु घाटी में सामरिक स्थानों पर बड़ी संख्या में शहरों की स्थापना की थी सिर्फ अपने तहत सभी नियंत्रण के उन सभी क्षेत्रों से संपर्क बनाए रखने के इरादे से उन्होंने अपने स्वयं की प्रशासनिक प्रणाली को भी साथ में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक प्रभावी योजना बनाकर पेश किया था।

यद्यपि भारत सिकंदर अलेक्जेंडर की ग्रीक सभ्यता के पूर्ण नियंत्रण में नहीं आया था लेकिन इसकी सीमा की उत्तर-पश्चिमी ओर क्षेत्र के आसपास में बड़ी संख्या में ग्रीक कालोनियों की स्थापना देखी गई। उनमें से कई यूनानी कालोनियों तब तक स्थापित रही जब तक मौर्य राजवंश ने उन पर कब्जा नहीं जमा लिया। हमारे पास पहले से ही पर्याप्त मौर्य साम्राज्य की सीमाओं के उत्तर-पश्चिमी भाग में कई यूनानियों या यवन और यूनानी शहरों के निपटान के बारे में पर्याप्त लिखित प्रमाण हैं।

इन सभी के बीच हमें यह याद रखना चाहिए कि भारत में सिकंदर अलेक्जेंडर केवल छोटे राज्यों के साथ लड़ने में व्यस्त रहा। सिकंदर अलेक्जेंडर के आक्रमण के समय वास्तविक निर्णायक शक्ति नंद साम्राज्य के हाथों में थी लेकिन सिकंदर अलेक्जेंडर उसके साथ लड़ने के लिए आगे नहीं बढ़ सका था। बाद में चंद्रगुप्त मौर्य, जिन्होंने नंद साम्राज्य जीतने के बाद मौर्य साम्राज्य की स्थापना की, उसने पूरे भारतीय उपमहाद्वीप से सभी यूनानियों को निकाल बाहर किया। चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने समय के सबसे शक्तिशाली यूनानी शासक सेलुकस निकोटर को हराया और पूरे एशिया में जल्द ही शक्तिशाली व्यक्ति बन गया।

❑

एक सैन्य कमांडर होने के अलावा सिकंदर अलेक्जेंडर एक मजबूत प्रशासक भी था। भारतीय उपमहाद्वीप की ओर बढ़ने से पहले उसने दुनिया के इस हिस्से में यूनानियों के स्थायी निपटान के बारे में पहले से ही सभी चीजों की योजना बनाई थी। उसने पहले योजना बनाई थी।

भाव के पुष्प

हम सभी ने एक भजन सुना है कि सब काम हो रहा है तेरी कृपा से करते हो तुम मेरा नाम हो रहा है सही पूछो तो इस भजन का जो सार है वही जीवन की सच्चाई है हम अहंकार के वश में होकर सब यही सोचते है कि जो कुछ कर रहे वो में ही कर रहा हूँ लेकिन अगर वो हमारी साँसे ही बंद कर दे तो फिर क्या करोगे चाहे हम कितने ज्ञानी हो कितने ही पद प्रतिष्ठा वाले हो जब तक वो शिव हमारे हदय में बैठा है तब तक ही हमारी जिंदगी है जहाँ उस परमात्मा ने शिव में से एक मात्र ई हटाते ही हम शव बन जाते है फिर कोई ज्ञान नाही पद प्रतिष्ठा सब धरे के धरे रह जाते है इसलिए कोई भी काम करे तो यही कहे कि मै नही वो ही सब काम कर रहा है में तो केवल निमित्तमात्र हूं हम तो केवल शरीर से सेवा कर रहे बाकी सब परमात्मा जाने यही सार है हम राम जी के राम जी हमारे है

आयुर्वेद दोहे

पानी में गुड डालिए, बीत जाए जब रात!
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात!!
धनियां की पत्ती मसल, बूंद नैन में डार!
दुखती अँखियां ठीक हों, पल लागे दो-चार!!
ऊर्जा मिलती है बहुत, पिएं गुनगुना नीर!
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर!!
प्रातः काल पानी पिएं, घूंट-घूंट कर आप!
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप!!
ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर प्रहार!
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाढार!!
भोजन करें धरती पर, अल्थी पल्थी मार!
चबा-चबा कर खाइए, वैद्य न झांकें द्वार!!
प्रातः काल फल रस लो, दुपहर लस्सी-छांस!
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश!!
प्रातः- दोपहर लीजिये, जब नियमित आहार!
तीस मिनट की नींद लो, रोग न आवें द्वार!!
भोजन करके रात में, घूमें कदम हजार!
डाक्टर, ओझा, वैद्य का , लुट जाए व्यापार !!
घूट-घूट पानी पियो, रह तनाव से दूर!
एसिडिटी, या मोटापा, होवें चकनाचूर!!
अर्थराइज या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रस!
पानी पीजै बैठकर, कभी न आवें पास!!
रक्तचाप बढने लगे, तब मत सोचो भाय!
सौगंध राम की खाइ के, तुरत छोड दो चाय!!
सुबह खाइये कुवंर-सा, दुपहर यथा नरेश!
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुजीत!!
देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल!
अपच, आंख के रोग सँग, तन भी रहे निढाल''
दर्द, घाव, फोडा, चुभन, सूजन, चोट पिराइ!
बीस मिनट चुंबक धरौ, पिरवा जाइ हेराइ!!
सत्तर रोगों को करे, चूना हमसे दूर!
दूर करे ये बांझपन, सुस्ती अपच हुजूर!!
भोजन करके जोहिए, केवल घंटा डेढ!
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड!!
अलसी, तिल, नारियल, घी सरसों का तेल!
यही खाइए नहीं तो, हार्ट समझिए फेल!
पहला स्थान सेंधा नमक, पहाड़ी नमक सुजान!
श्वेत नमक है सागरी, ये है जहर समान!!
अल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग!
आमंत्रित करता सदा, वह अडतालीस रोग!!
फल या मीठा खाइके, तुरत न पीजै नीर!
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर!!
चोकर खाने से सदा, बढती तन की शक्ति!
गेहूँ मोटा पीसिए, दिल में बढे विरक्ति!!
रोज मुलहठी चूसिए, कफ बाहर आ जाय!
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाय!!
भोजन करके खाइए, सौंफ, गुड, अजवान!
पत्थर भी पच जायगा, जानै सकल जहान!!
लौकी का रस पीजिए, चोकर युक्त पिसान!
तुलसी, गुड, सेंधा नमक, हृदय रोग निदान!
चैत्र माह में नीम की, पत्ती हर दिन खावे!
ज्वर, डेंगू या मलेरिया, बारह मील भगावे!!
सौ वर्षो तक वह जिए, लेते नाक से सांस!
अल्पकाल जीवें, करें, मुंह से श्वासोच्छ्वास!!
सितम, गर्म जल से कभी, करिये मत स्नान!
घट जाता है आत्मबल, नैनन को नुकसान!!
हृदय रोग से आपको, बचना है श्रीमान!
सुरा, चाय या कोल्ड्रिंक, का मत करिए पान!!
अगर नहावें गरम जल, तन-मन हो कमजोर!
नयन ज्योति कमजोर हो, शक्ति घटे चहुंओर!!
तुलसी का पत्ता करें, यदि हरदम उपयोग!
मिट जाते हर उम्र में, तन में सारे रोग।
कृपया इस जानकारी को जरूर आगे बढ़ाएं।

दुख एवं नुकसान का मुकाबला कैसे करें

मानसिक स्वास्थ्य

म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

दुख एवं नुकसान का मुकाबला कैसे करें। अपनी भावनाओं, क्रोध, अवसाद और डर की स्थितियों को कैसे संभाले।

अपने किसी प्रिय या नजदीकी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने से या व्यवसाय में नुकसान होने या मन मुताबिक परिणाम न मिलने से निश्चय ही इन्सान दुख के सागर में डूब जाता है। निश्चय ही इन सभी शोकदायक परिस्थितियों से गुजरने की वजह से इन्सान यह सोचने लगता है कि उसके दुख एवं दर्द का अब कोई अंत नहीं है। इन परिस्थितियों में किसी भी इन्सान की ऐसी ही प्रतिक्रिया होगी। यह भी सच है कि ऐसे दुख एवं असहनीय दर्द को व्यक्त करने का कोई सही या गलत तरीका नहीं होता, लेकिन इन परिस्थितियों से निपटने की कोशिश करने के कुछ सही तरीके निश्चित रूप से हैं जिनके द्वारा आप अपनी भावनाओं जैसे कि क्रोध, अवसाद एवं डर पर काबू पा सकते हैं एवं ऐसे असहनीय दर्द वाली परिस्थितियों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रख कर अपने जीवन को फिर से जीने लायक बना सकते हैं।

अपने किसी प्रिय या नजदीकी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने से या व्यवसाय में नुकसान होने या मन मुताबिक परिणाम न मिलने से निश्चय ही इन्सान दुख के सागर में डूब जाता है। निश्चय ही इन सभी शोकदायक परिस्थितियों से गुजरने की वजह से इन्सान यह सोचने लगता है कि उसके दुख एवं दर्द का अब कोई अंत नहीं है। इन परिस्थितियों में किसी भी इन्सान की ऐसी ही प्रतिक्रिया होगी।

भावनाओं को कैसे संभालें?

जीवन को खुशहाल एवं आकर्षक बनाने के लिए भावनाएं जरूरी हैं लेकिन वही भावनाएं आपके जीवन को कभी-कभी चुनौतीपूर्ण भी बना देते हैं। आपको अपनी भावनाओँ के विभिन्न रूपों का सामना करना पड़ सकता है। कभी भावनाएं सकारात्मक होती हैं तो कभी नकारात्मक। भावनाओं की तीव्रता भी बदलती रहती है जैसे कि कभी भावनाएं गहरी हो सकती हैं और कभी ये हल्की एवं क्षणिक होती है। अगर आप अपनी भावनाओं पर काबू पाने में नाकामयाब होंगे तो भावनाओं की वजह से आपके जीवन पर आपका नियंत्रण समाप्त भी हो सकता है।

दुख एवं नुकसान का मुकाबला कैसे करें

भावनात्मक जागरूकता

जब आप नकारात्मक भावनाओं में डूबे हुए होते हैं तो आपके शरीर के अंदर भी कई प्रकार के परिवर्तन हो रहे होते हैं जिनकी वजह से सीने में भारीपन महसूस हो सकता है, पेट में खोखलापन महसूस हो सकता है, चेहरा तनावपूर्ण हो जाता है और आंसूओं का सैलाब उमड़ पड़ता है। अगर आप बिना अपना आपा खोए इन परिस्थियों से निपटने में कामयाब हो जाते हैं तो आपको जिंदगी तुरंत बेहतर महसूस होने लगती है।

दुख एवं नुकसान से कैसे निपटें

भावनात्मक जागरूकता आपकी आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं उम्मीदों को समझने में आपकी मदद करता है। यह बेहतर रिश्तें बनाने में मदद करता है। अगर आप अपनी भावनाओं से भली-भांति परिचित होते हैं तो आप अपनी भावनाएं बेहतर तरीके से व्यक्त कर पाते हैं। आपको टकराव या मतभेद की परिस्थितियों से बचना चाहिए एवं उनका त्वरित समाधान करना चाहिए ताकि आप कठिन परिस्थितियों से जल्द से जल्द उबर सकें।

ये सभी कदम निश्चित रूप से आपको आपकी भावनाओं को समझने में मदद करेंगे। दिलचस्प रूप से ये सिर्फ नकारात्मक भावनाओं के साथ ही सही नहीं है बल्कि अगर आप सकारात्मक भावनाओं की भी पहचान करने कि क्षमता रखते हैं तो उनसे मिलनी वाली सकारात्मक ऊर्जा आपके तनाव को खत्म

करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

दुख से कैसे निपटें?

दुख नुकसान का एक स्वाभाविक रूप से मिलने वाला परिणाम है। यदि आपसे आपकी कोई प्यारी चीज छिन जाए या आपका कोई अपना गुजर जाए तो आपकी जिंदगी बिखर सी जाती है। जितना बड़ा नुकसान होता है उसका असर उतना ही बुरा होता है। अकसर ये सभी परिस्थितियां ही आपके दुखों का कारण होती हैं, हालांकि हम यह भी नहीं कह रहे हैं कि इनके अलावा दुख की कोई और वजह हो ही नहीं सकती। किसी को जल्दी और किसी को कुछ देर से, मगर जीवन की नश्वरता का सामना सबको एक न एक दिन करना ही पड़ता है और आप कोई अपवाद नहीं हैं। आपको भी यह चुनौती स्वीकार करनी ही पड़ेगी। आप अपने जख्मों का इलाज कैसे करते हैं, अपनी जिंदगी को कैसे फिर से सहेजते हैं और किस तरह जल्दी से जल्दी आगे बढ़ते हैं इन सभी बातों पर ही आपकी जिंदगी का दुबारा सामान्य होना निर्भर करता है। इन परिस्थितियों में आपको कई प्रकार से सहारा मिल सकता है, बस जरूरत सिर्फ इतनी है कि आप अपनी भावनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त करने में कोई संकोच ना करें।

अपने क्रोध को कैसे नियंत्रित करें?

हालांकि क्रोध एक सामान्य और सभी के द्वारा अनुभव की जाने वाली भावना है, लेकिन अगर आप इसे नियंत्रित रखना नहीं जानते तो कभी-कभी यह बेहद खतरनाक हो सकता है। जल्दी-जल्दी आने वाला एवं अनावश्यक क्रोध आपकी वर्षों की कमाई हुई प्रतिष्ठा को एक पल में नुकसान पहुंचा सकता है, आपके दोस्तों के साथ आपके रिश्तों को खत्म कर सकता है, आपको मिलने वाले अवसरों को सीमित कर सकता है और यहां तक कि यह आपके स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। ऐसे हालात में अगर आप नियमित रूप से व्यायाम करें तो उससे आपके तनाव का स्तर कम होगा और आप आराम महसूस करेंगें। व्यायाम के अलावा, दौड़ना, टहलना, तैराकी, योग एवं ध्यान लगाना इत्यादि कुछ अन्य गतिविधियां हैं जिनसे आपकी चिंता का स्तर कम हो सकता है। तनावपूर्ण क्षणों में धीरज रखें। हमेशा याद रखें कि गुस्से में आप कुछ भी कह सकते हैं लेकिन बाद में हो सकता है आपको इस क्षणिक उद्वेग की वजह से जीवन भर अफसोस करना पड़े। इसलिए क्रोध आने पर कुछ भी बोलने से पहले अच्छी तरह से सोच-समझ लें।

मानसिक अनुशासन बनाए रखने से आप अपने गुस्से से बेहतर तरीके से निपट सकते हैं। आप दूसरों से संबंधित अपनी चिंताओं को संबंधित व्यक्ति के साथ खुलकर साझा करें और अपने गुस्से को नियंत्रित रखते हुए बिना कोई पीड़ा पहुंचाए अपनी बात आप उसे समझाएं।

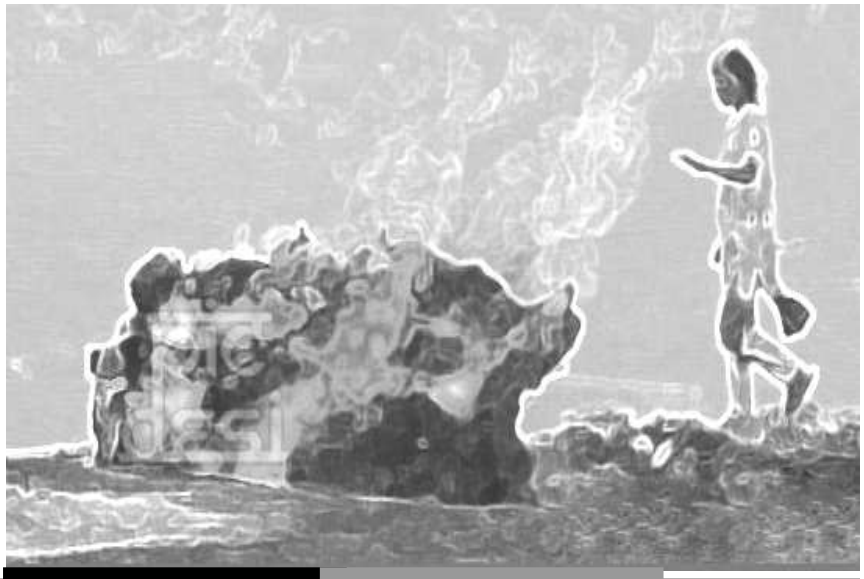

अवसाद एक ऐसी दर्दनाक स्थिति होती है जिसकी वजह से आपकी उम्मीदें एवं ऊर्जा दोनों ही खत्म हो जाती है और आपको यह समझ नहीं आता कि अच्छा महसूस करने के लिए क्या करें। इसकी वजह से आपकी कार्य करने की क्षमता, सोचने की क्षमता एवं महसूस करने की क्षमता सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं।

अवसाद को कैसे दूर करें?

अवसाद एक ऐसी दर्दनाक स्थिति होती है जिसकी वजह से आपकी उम्मीदें एवं ऊर्जा दोनों ही खत्म हो जाती है और आपको यह समझ नहीं आता कि अच्छा महसूस करने के लिए क्या करें। इसकी वजह से आपकी कार्य करने की क्षमता, सोचने की क्षमता एवं महसूस करने की क्षमता सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। आप गहरी निराशा के गर्त में डूबने लगते हैं और इसका असर लगातार रहने वाली उदासी, निराशा एवं लाचारी के रूप में सामने आती है। इन परिस्थितियों में आप आमतौर पर जीवन में कोई खुशी ढूढ़ने में असमर्थ हो जाते है। आप एक पीड़ादायक अकेलापन महसूस करते हैं, और किसी भी गतिविधि में आपकी रुचि खत्म हो जाती है। लंबे समय में अवसाद का असर और भी गहरा हो सकता है और इसकी वजह से आपका जीवन भी खतरें में आ सकता है।

अवसाद पर काबू पाना एक आसान एवं त्वरित प्रक्रिया तो बिल्कुल भी नहीं है। इस अवस्था से उबरने एवं अच्छा महसूस करने में काफी समय लग जाता है। हालांकि यदि हर दिन हम सकारात्मक विकल्पों का चयन

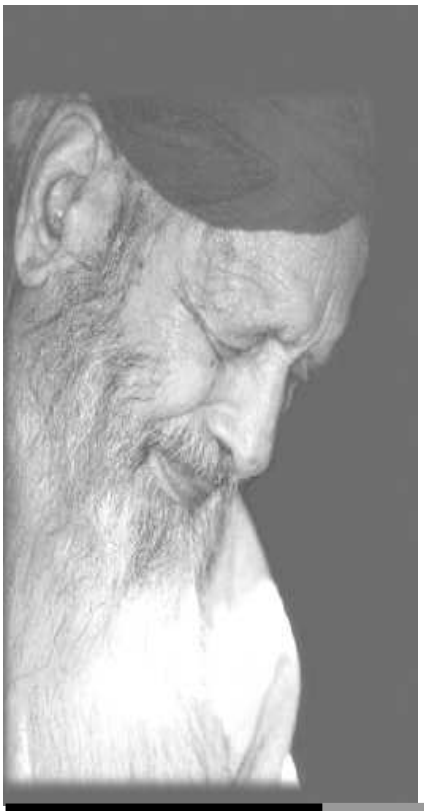

❑ स्वस्थ एवं पोषण युक्त भोजन करें।

❑ अपने सांसों पर ध्यान केंद्रित रखते हुए ध्यान लगाएं।

❑ आपको आवश्यकता महसूस हो या न हो आप वही चीजें करें जिनसे आप अच्छा महसूस करते हैं।

अपने डर से कैसे पाएं छुकारा?

यह पाया गया है कि मनुष्य की सभी भावनाओं में सबसे मजबूत भावना डर की होती है और अज्ञात डर सबसे भयानक होता है। यहाँ हम आपको बताएंगे कि किस प्रकार आप अपनी असफलताओं से डरने के बजाए उन्हें अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें। डर पर काबू पाने की कोशिश हम सबकी सबसे आम समस्याओं में से एक है क्योंकि हममें से हरेक को किसी ना किसी प्रकार का डर सताता रहता है। इसलिए इससे पहले कि आप अपने डर से निपटने की शुरूआत करें, आपके लिए डर को समझना जरूरी है। इस दिशा में

यह पाया गया है कि मनुष्य की सभी भावनाओं में सबसे मजबूत भावना डर की होती है और अज्ञात डर सबसे भयानक होता है। यहाँ हम आपको बताएंगे कि किस प्रकार आप अपनी असफलताओं से डरने के बजाए उन्हें अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें। डर पर काबू पाने की कोशिश हम सबकी सबसे आम समस्याओं में से एक है क्योंकि हममें से हरेक को किसी ना किसी प्रकार का डर सताता रहता है।

करें हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

क्या करें-

सहायता प्रदान करने वाले एवं समझदार लोगों से जुड़ कर रहें। ऐसे लोग जिनसे आपकी बातचीत होती है या जिनके साथ आप अच्छा महसूस करते हैं उनके साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताएं।

❑ नकारात्मक सोच पर काबू पाएं।

❑ आप अपने आपको अलग-थलग न पड़ने दें।

पहला कदम हैं। आप यह पता लगाए कि ऐसी कौन सी चीज है जिससे आप डर रहे हैं। आजकल का वैज्ञानिक विकास निश्चित रूप से आपकी इसमें सहायता करेगा। यह वैज्ञानिक रूप से साबित हो चुका है कि डर मानव के अस्तित्व का एक सामान्य हिस्सा है। डर की पैदाइश मस्तिष्क के उस हिस्से से होती है जो हमें जोखिमों से बचाना चाहता है। डर से निपटने के लिए किया जाने वाला प्रयास आपके नकारात्मक विचारों को खत्म करने के द्वारा ही सफल होता है।

आपको इन उपायों का पालन करना चाहिए जो डर से निपटने में आपके लिए कफी मददगार साबित होंगे।

❑ आप अपने दोस्तों एवं प्रियजनों का समर्थन प्राप्त करें।

❑ नई चीजें सीखने में अपने आपको व्यस्त रखें।

❑ आपके लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण क्या है यह जानने की कोशिश करें।

❑ अपने अंदर संघर्ष से जूझने की प्रवृत्ति का विकास करें।

इनके अलावा, यह भी पाया गया है कि योग और ध्यान का हमारे मन पर बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अगर आप नियमित रूप से योग का अभ्यास करते हैं, तो आपके तनाव का स्तर निश्चित रूप से गिरेगा रक्तचाप सामान्य होना शुरू हो जाएगा और पूरे शरीर का क्रिया विज्ञान अधिक व्यवस्थित एवं संतुलित हो जाएगा। तनाव की प्रतिक्रिया में बदलाव आने से मन में शांत, सामंजस्यपूर्ण एवं स्पष्ट विचारों का प्रादुर्भाव होता है। मन एवं शरीर के परस्पर संबंध के कारण योगाभ्यास का व्यापक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। यह मस्तिष्क को एक प्राकृतिक तरीके व्यवस्थित करता है। शुरूआत से ही यह मन एवं शरीर दोनों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है। उपर्युक्त उपायों को अपनाकर आप अपनी भावनाओं, क्रोध, अवसाद एवं डर की स्थितियों को संभालने एवं अपने जीवन को खुशहाल व शांतिपूर्ण बनाने में कामयाब हो सकते हैं।

❑

प्रजाजनों की सुविधा को प्राथमिकता

युधिष्ठिर ने किले से नीचे रस्सी के सहारे एक घंटा बाँध रखा था। प्रजाजनों में से किसी को न्याय चाहिए तो वह घंटा बजाता। युधिष्ठिर उसे तुरंत बुलाते और उसका फैसला करते। पांडवों ने इस पर आपत्ति की तो युधिष्ठिर ने कहा-''राजा का धर्म है कि उसे अपनी सुविधा को प्राथमिकता न देकर उन प्रजाजनों की समस्याओं पर ध्यान पर देना चाहिए जिनके लिए वह सिंहासन की न्यायपीठ पर बैठा है।''

इस मंदिर में मूर्तियों से निकलती हैं आवाजें, वैज्ञानिकों ने जांच की और.

साभार

कहते हैं कि पत्थर में भी जान होती है। निश्चित ही मूर्ति एक पत्थर की होती है, लेकिन जिस भी देवी या देवता की यह मूर्ति बनाई गई है उन देवी या देवताओं के अस्तित्व और उनकी शक्ति को नहीं नकारा जा सकता। आए दिन देवी या देवता अपने होने का अहसास कराते रहते हैं। इसी अहसास को चमत्कार कहा जाता है। ऐसा ही एक चमत्कार बिहार के बक्सर में स्थित देवी के एक मंदिर में देखने को मिला। यहां आकर आपको दुर्गा शक्ति के होने पर यकीन हो जाएगा क्योंकि यहां की मूर्तियां आपसे बात करती है। जब वैज्ञानिकों ने इसकी खोज की तो उन्होंने भी इस बात से इनकार नहीं किया।

यह मंदिर 400 वर्ष पुराना है। प्रसिद्ध तांत्रिक भवानी मिश्र ने करीब 400 वर्ष पहले इस मंदिर की स्थापना की थी। तब से आज तक इस मंदिर में उन्हीं के परिवार के सदस्य पुजारी बनते रहे हैं। तंत्र साधना से ही यहां माता की प्राण प्रतिष्ठा की गई है।

दरअसल, तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध बिहार के इस इकलौते राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर में यहां पर किसी के नहीं होने पर आवाजें सुनाई तेती हैं। इस मंदिर में दस महाविद्याओं काली, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, तारा, छिन्न मस्ता, षोडसी, मातंगड़ी, कमला, उग्र तारा, भुवनेश्वरी की मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अलावा यहां बंगलामुखी माता, दत्तात्रेय भैरव, बटुक भैरव, अन्नपूर्णा भैरव, काल भैरव व मातंगी भैरव की प्रतिमा स्थापित की गई है। यहां साधना करने वाले हर साधाकों की हर तरह की मनोकामना पूर्ण होती है। देर रात तक साधाक इस मंदिर में साधाना में लीन रहते हैं। मंदिर में प्रधान देवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी है।

तांत्रिकों की आस्था इस मंदिर के प्रति अटूट है। कहा जाता है कि यहां किसी के नहीं होने पर भी कई तरह की आवाजें सुनाई देती हैं। राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर की सबसे अनोखी मान्यता यह है कि निस्तब्धा निशा में यहां स्थापित मूर्तियों से बोलने की आवाजें आती हैं। मध्य-रात्रि में जब लोग यहां से गुजरते हैं तो उन्हें आवाजें सुनाई पड़ती हैं।

वैज्ञानिकों की मानें, तो यह कोई वहम नहीं है। इस मंदिर के परिसर में कुछ शब्द गूंजते रहते हैं। यहां पर वैज्ञानिकों की एक टीम भी गई थी, जिन्होंने रिसर्च करने के बाद कहा कि यहां पर कोई आदमी नहीं है। इस कारण यहां पर शब्द भ्रमण करते रहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी मान लिया है कि हां पर कुछ न कुछ अजीब घटित होता है, जिससे कि यहां पर आवाज आती है।

मानो या न मानो यह एक चमत्कार ही है कि यहां अजीब तरह के आवाजें आती है जो कि किसी मानव की आवाजों की तरह की है। माना जाता है कि संपूर्ण अखंड भारत में जहां भी माता के शक्तिपीठ हैं वे सभी जागृत और सिद्ध शक्तिपीठ हैं। मुगलों ने देश के कई मंदिरों को ध्वस्त किया लेकिन वे इन शक्तिपीठों को कभी खंडित नहीं कर पाए। ऐसा दुस्साहस करने वाले काल के मुख में समा गए हैं। उदाहणणार्थ माता हिंगलाज और माता ज्वालादेवी का शक्तिपीठ। ❑

एक राक्षस 'गयासुर' के कारण गया बना है मोक्ष स्थली

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

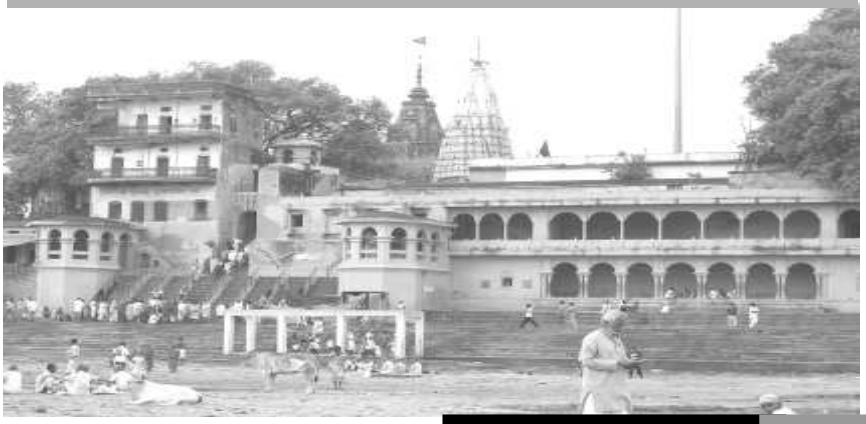

बिहार की राजधानी पटना से करीब 104 किलोमीटर की दूरी पर बसा है गया जिला। धार्मिक दृष्टि से गया न सिर्फ हिन्दुओं के लिए बल्कि बौद्ध धर्म मानने वालों के लिए भी आदरणीय है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इसे महात्मा बुद्ध का ज्ञान क्षेत्र मानते हैं जबकि हिन्दू गया को मुक्ति क्षेत्र और मोक्ष प्राप्ति का स्थान मानते हैं।

बिहार की राजधानी पटना से करीब 104 किलोमीटर की दूरी पर बसा है गया जिला। धार्मिक दृष्टि से गया न सिर्फ हिन्दुओं के लिए बल्कि बौद्ध धर्म मानने वालों के लिए भी आदरणीय है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इसे महात्मा बुद्ध का ज्ञान क्षेत्र मानते हैं जबकि हिन्दू गया को मुक्ति क्षेत्र और मोक्ष प्राप्ति का स्थान मानते हैं।

इसलिए हर दिन देश के अलग-अलग भागों से नहीं बल्कि विदेशों में भी बसने वाले हिन्दू आकर गया में आकर अपने परिवार के मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति और मोक्ष की कामना से श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान करते दिख जाते हैं। लेकिन क्या आप जानते है की गया को मोक्ष स्थली का दर्जा एक राक्षस गयासुर के कारण मिला है? आज हम आपको गयासुर से संबंधित वही पौराणिक वृतांत बता रह है।

पौराणिक वृतांत

पुराणों के अनुसार गया में एक राक्षस हुआ जिसका नाम था गयासुर। गयासुर को उसकी तपस्या के कारण वरदान मिला था कि जो भी उसे देखेगा या उसका स्पर्श करेगा उसे यमलोक नहीं जाना पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति सीधे विष्णुलोक जाएगा। इस वरदान के कारण यमलोक सुना होने लगा।

इससे परेशान होकर यमराज ने जब ब्रह्मा, विष्णु और शिव से यह कहा कि गयासुर के कारण अब पापी व्यक्ति भी बैकुंठ जाने लगा है इसलिए कोई उपाय कीजिए। यमराज की स्थित को समझते हुए ब्रह्मा जी ने गयासुर से कहा कि तुम परम पवित्र हो इसलिए देवता चाहते हैं कि हम आपकी पीठ पर यज्ञ करें।

प्रेत शिला

गयासुर इसके लिए तैयार हो गया। गयासुर के पीठ पर सभी देवता और गदा धारण कर विष्णु स्थित हो गए। गयासुर के शरीर को स्थिर करने के लिए इसकी पीठ पर एक बड़ा सा शिला भी रखा गया था। यह शिला आज प्रेत शिला कहलाता है।

गयासुर के इस समर्पण से विष्णु भगवान ने वरदान दिया कि अब से यह स्थान जहां तुम्हारे शरीर पर यज्ञ हुआ है वह गया के नाम से जाना जाएगा। यहां पर पिंडदान और श्राद्ध करने वाले को पुण्य और पिंडदान प्राप्त करने वाले को मुक्ति मिल जाएगी। यहां आकर आत्मा को भटकना नहीं पड़ेगा। ❑

दो तानाशाह

□ देवेन्द्र कुमार मिश्रा

''तुम, मानव अधिकारों के रक्षक। हिरोशिमा, नागासाकी कांड करने वाले, अफगान पर हमला करने वाले। दूसरों को आपस में लड़वाने वाले। हथियार हो या दवा, सब तो बेचते हो तुम व्यापारी। तानाशाह तो तुम हो सबसे बड़े। किसको छोड़ा तुमने। यदि मैं ये युद्ध जीतता और तुम मेरी जगह होते तो कोड़े लगवाता तुम्हें। टुकड़े-टुकड़े करवाता तुम्हारे। एक पल में ही किस्सा खत्म कर देता तुम्हारा।''

एक विशाल बन्द कमरे में दो तानाशाह बैठे हैं। बैठने में फर्क बहुत है। पहला तानाशाह आलीशान सोफे पर बैठा है। उसके पीछे दो सशस्त्र सुरक्षाकर्मी खड़े हैं। वह शानदार सूट-बूट में है। उसके चेहरे पर चमक है। ठीक वैसी ही चमक जैसी एक विजेता के चेहरे पर होती है। दूसरा तानाशाह एक कुर्सी पर बंधा है जंजीरों से। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई है। उसका चेहरा भयभीत नहीं है फिर भी चेहरे पर हार के निशान साफ झलक रहे हैं। कपड़े अस्त-व्यस्त हैं। उसके ठीक पी छे दो सशस्त्र सैनिक हैं जो कि ठीक उसके सिर को निशाना बनाये हुए हैं। इस प्रतीक्षा में कि जैसे ही कोई गड़बड़ी करे, वैसे हाथ-पैर लोहे की बेड़ियों से बंधे हैं, फिर भी सावधानी वश या यदि विजेता तानाशाह की आज्ञा हो तो सिर में मशीन गन की सारी गोलियां उतार दी जाये। दोनों तानाशाह आमने-सामने हैं। शायद विजेता तानाशाह ने कुछ कहने के लिए ये गुप्त मीटिंग रखी हो।

विजेता तानाशाह हंसते हुए, ''क्यों खानी पड़ी न मुंह की। हार गये। जानते थे कि मिट जाओगे। फिर भी तुमने हमारी नहीं मानी।''

हारा तानाशाह जो कि अब तानाशाह नहीं रहा। एक अपराधी की भांति चुपचाप सुन रहा था। पुनः विजेता ने कहा, ''कभी हम दोस्त हुआ करते थे। हमने तुम्हें लड़ने के लिए आधुनिक अस्त्र-शस्त्र दिये। तुम्हारा पीछे से हमेशा सपोर्ट किया। तुम्हें धन की मदद दी। तुम्हारे साथ व्यापारिक संबंध बनाये। तुम्हारे आस-पास के शक्तिशाली राष्ट्रों पर तुम्हारे पक्ष में दबाव बनाया। क्या नहीं किया तुम्हारे लिए...''

''कुछ नहीं किया तुमने'' हारा तानाशाह चीख पड़ा। आखिर वो भी तानाशाह रहा था पहले। ''तुमने केवल व्यापार किया। तुमने केवल खरीद-फरोख्त की। तुम व्यापारी

हो। तुम क्या किसी से दोस्ती करोगे और क्या किसी की मदद करोगे? तुम सिर्फ व्यापार करते हो।''

''हां तो क्या बुरा करता हूं? मेरे पास टेक्नोलॉजी है, विज्ञान है, धन है, शक्ति है। मुझे लोग तानाशाह नहीं कहते। मैं लोकतंत्रीय प्रणाली में विश्वास करता हूं। चुनाव करवाता हूं। जनता चुनती है मुझे।''

''डरते हैं लोग तुमसे। सब जानते हैं कि तुम बर्बर तानाशाह हो। तुम्हारे सामने लोग मजबूर हैं। भीख का कटोरा लिए खड़े हैं। इसलिए कुछ नहीं कहते। अन्यथा कौन नहीं जानता तुम्हें।''

''मैं केवल न्याय करता हूं मानव अधिकारों का रक्षक हूं मैं।''

''तुम, मानव अधिकारों के रक्षक। हिरोशिमा, नागासाकी कांड करने वाले, अफगान पर हमला करने वाले। दूसरों को आपस में लड़वाने वाले। हथियार हो या दवा, सब तो बेचते हो तुम व्यापारी। तानाशाह तो तुम हो सबसे बड़े। किसको छोड़ा तुमने। यदि मैं ये युद्ध जीतता और तुम मेरी जगह होते तो कोड़े लगवाता तुम्हें। टुकड़े-टुकड़े करवाता तुम्हारे। एक पल में

ही किस्सा खत्म कर देता तुम्हारा।''

विजेता तानाशाह के चेहरे पर पहले गुस्से के भाव आये। फिर मुस्कुराया और बोला, ''बस यही तो फर्क है तुममें और हममें। तुम फौरन फैसला सुनाकर तानाशाही का परिचय दे देते हो। अरे छोड़ने वाले तो तुम्हें हम भी नहीं। लेकिन हम लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं। बाकायदा मुकदमा चलाया जायेगा। अदालतें बैठायी जायेंगी। तुम्हें अपनी बात रखने का मौका दिया जायेगा। तुम्हें पैरवी के लिए वकील दिया जायेगा। महीनों सालों लगेंगे। तुम पल-पल तड़पोगे। तुम्हें मालूम होगा कि फैसला क्या होगा? क्या होगा सिवाय मौत के? लेकिन पूरी दुनिया को बताया जायेगा कि तुम एक तानाशाह हो। तुमने 150 से ऊपर लोगों की हत्या की। आरोप सिद्ध होंगे। फिर तुम्हें फांसी ''

''कौन डरता है मौत से'' चीख पड़ा हारा हुआ तानाशाह। ''हिम्मत है तो अभी मार डाल। मेरे ऊपर 150 लोगों की हत्या का आरोप। मैं अपने देश का राजा। चाहे जो करूं। तुम कौन होते हो हमारे आंतरिक मामले में दखल देने वाले। समूचे विश्व को अपने पक्ष में रखने वाले। क्या सम्पूर्ण विश्व नहीं जानता कि तुमने लाखों-करोड़ों लोगों की हत्यायें की है। हिरोशिमा हो, नागासाकी हो, अफगान हो या ईराक या.''

''बस-बस गिनती मत गिनाओ। मैं विजेता हूं चाहे जो करूं। मैंने तो तुम्हें केवल ये बताने के लिए बुलाया है कि तुम आज भी अपने देश के राजा होते। तानाशाह होते। राष्ट्रपति भी कह सकते हैं हा... हा... क्या फर्क पड़ता है? बस तुम्हें मुझसे हाथ मिलाकर रहना चाहिए। मेरी बात माननी चाहिए थी।''

''मैं अपने देश को तो कमजोर नहीं कर सकता था तुम्हारे व्यापार के लिए'' हारा तानाशाह बोला।

''तुमने दो गलतियां की, पहला कुवैत पर हमला करके। जो हमें सस्ते में हमारे

''बस-बस गिनती मत गिनाओ। मैं विजेता हूं चाहे जो करूं। मैंने तो तुम्हें केवल ये बताने के लिए बुलाया है कि तुम आज भी अपने देश के राजा होते। तानाशाह होते। राष्ट्रपति भी कह सकते हैं हा... हा... क्या फर्क पड़ता है? बस तुम्हें मुझसे हाथ मिलाकर रहना चाहिए। मेरी बात माननी चाहिए थी।''

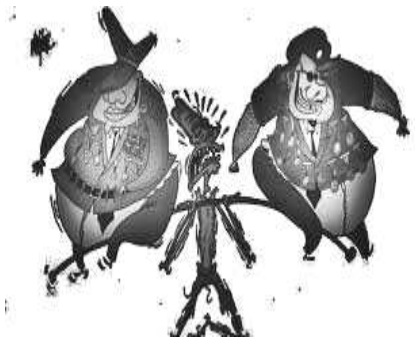

दामों में तेल बेच रहा था।''

''कुवैत पर हमला न करता तो हमारी अर्थव्यवस्था...''

''छोड़ो... ये खेल... तुमने तेल की मुंहमांगी कीमतें मांगी। हमें परेशानी हो रही थी। फिर जो हमें सस्ते में या यों कहे मुफ्त में तेल दे रहा था, उस पर हमला यानी हमारे व्यापार को चोट पहुंचाने की कोशिश...''

''इसलिए तुमने जैविक हथियारों की आड़ में हमारी तलाशी ली। जबकि तुम जानते थे कि...''

''हां मैं जानता था कि तुम्हारे पास ऐसे कोई विनाशक हथियार नहीं हैं। यदि होते तो पहले ही इस्तेमाल कर चुके होते मुझ पर। मैं तो चाहता था कि तुम निरीक्षण की अनुमति ही न देते। तो इस बहाने विश्व की रक्षा के लिए मैं तुम पर हमला करता। लेकिन तुमने अनुमति देकर मौका छीना मुझसे। अच्छे राजनीतिज्ञ भी हो तुम। लेकिन कब तक बचते। हमने तो ठान ही लिया था कि तेल के इस खेल में सारी दुनिया के सामने तुम्हें बर्बर तानाशाह घोषित करके पूरा-पूरा बर्बाद कर दूं। फिर अपनी मर्जी का शासक बिठाकर बाकायदा प्रजातंत्रीय प्रणाली से... सौदा करूं। धंधा करूं और तुम्हारी मौत के बहाने बाकी विश्व भी देखे कि हमारे खिलाफ जाने का नतीजा, और समझे कि अधिकार सिर्फ ताकतवर के हाथों में होता है।'' हारे हुए तानाशाह ने जो कुछ भी नहीं कर सकता था। क्रोध में थूक दिया विजेता पर। पीछे तैनात गार्ड हरकत में आते उससे पहले विजेता ने रोक दिया- ''नहीं... ये मरेगा लेकिन लोकतंत्रीय, अदालती, मानव अधिकार की सुनवाई के बाद। तब तक इसे तड़पने दो।''

''जाते-जाते मेरी भी सुनता जा।'' हारा हुआ शासक चीखा, ''मेरे शासन को तूने तानाशाही, बर्बरता का नाम देकर जो किया सो किया। लेकिन पूरे विश्व में जो तुम धमाचौकड़ी मचा रहे हो। अपनी ताकत का बेजा इस्तेमाल करके बर्बाद कर रहे हो मुल्क के मुल्क। याद रखना हर अति का अंत होता है। कल तुम अकेले पड़ जाओगे और पूरा का पूरा विश्व तुम्हारे खिलाफ। अकेले बचोगे और घेरकर मार दिये जाओगे।'' विजेता तानाशाह पल भर के लिए रूका और पलटकर बोला, ''पूरा विश्व मेरे खिलाफ एक होगा कैसे? सदियों से तो आपस में लड़ रहे हैं और लड़ते रहेंगे छोटी-छोटी बातों पर और हमेशा मदद मांगते रहते हैं। कभी रोटी, कभी हथियार कभी... भिखारी की क्या औकात हमसे लड़ने की।''

इतना कहकर विजेता व्यापारी तानाशाह कमरे के बाहर निकल गया। ❑

कालयवन को नहीं मार सकते थे श्री कृष्ण तब कैसे मरा यह म्लेच्छ प्रमुख?

अनिरुद्ध जोशी

यह जन्म से ब्राह्मण लेकिन कर्म से असुर था और अरब के पास यवन देश में रहता था। पुराणों में इसे म्लेच्छों का प्रमुख कहा गया है। कालयवन ऋषि शेशिरायण का पुत्र था। गर्ग गोत्रस के ऋषि शेशिरायण त्रिगत राज्य के कुलगुरु थे। उन्होंने भगवान शिव की तपस्या की और उनसे एक अजेय पुत्र की मांग की। शिव ने कहा- 'तुम्हारा पुत्र संसार में अजेय होगा। कोई अस्त्र-शस्त्र से हत्या नहीं होगी। सूर्यवंशी या चंद्रवंशी कोई योद्धा उसे परास्त नहीं कर पाएगा।

वरदान प्राप्ति के पश्चात ऋषि शेशिरायण एक झरने के पास से जा रहे थे कि उन्होंने एक स्त्री को जल नहाते हुए देखा, जो अप्सरा रम्भा थी। दोनों एक-दूसरे पर मोहित हो गए और उनका पुत्र कालयवन हुआ। 'रंभा' समय समाप्ति पर स्वर्गलोक वापस चली गई और अपना पुत्र ऋषि को सौंप गई।

काल जंग नामक एक क्रूर राजा मलीच देश पर राज करता था। उसे कोई संतान न थी जिसके कारण वह परेशान रहता था। उसका मंत्री उसे आनंदगिरि पर्वत के बाबा के पास ले गया। बाबा ने उसे बताया की वह ऋषि शेशिरायण से उनका पुत्र मांग ले।

ऋषि शेशिरायण ने बाबा के अनुग्रह पर पुत्र को काल जंग को दे दिया। इस प्रकार कालयवन यवन देश का राजा बना। उसके समान वीर कोई न था। एक बार उसने नारदजी से पूछा कि वह किससे युद्ध करे, जो उसके समान वीर हो। नारदजी ने उसे श्रीकृष्ण का नाम बताया।

राम के कुल के राजा शल्य ने जरासंध को यह सलाह दी कि वे कृष्ण को हराने के लिए कालयवन से दोस्ती करें। कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण के लिए सब तैयारियां कर लीं। दूसरी ओर जरासंध भी सेना लेकर निकल गया।

कालयवन की सेना ने मथुरा को घेर लिया। उसने मथुरा नरेश कृष्ण के नाम संदेश भेजा और कालयवन को युद्ध के लिए एक दिन का समय दिया। श्रीकृष्ण ने उत्तर में संदेश भेजा कि युद्ध केवल कृष्ण और कालयवन में हो, सेना को व्यर्थ क्यूं लड़ाएं। कालयवन ने स्वीकार कर लिया।

अक्रूरजी और बलरामजी ने कृष्ण को इसके लिए मना किया, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें कालयवन को शिव द्वारा दिए वरदान के बारे में बताया और यह भी कहा कि उसे कोई भी हरा नहीं सकता। श्रीकृष्ण ने यह भी बताया कि कालयवन राजा मुचुकुंद द्वारा मृत्यु को प्राप्त होगा।

एक बार इक्ष्वाकुवंशी मांधाता के पुत्र राजा मुचुकुंद देवताओं की सहायता के लिए दानवों से युद्ध करने देवलोक पहुंच गए थे। उन्होंने देवताओं का साथ देकर और दानवों का संहार किया जिसके कारण देवता युद्ध जीत गए, तब इन्द्र ने उन्हें वर मांगने को कहा। मुचुकुंद ने वापस पृथ्वीलोक जाने की इच्छा व्यक्त की, तब इन्द्र ने उन्हें बताया कि पृथ्वी और देवलोक में समय का बहुत अंतर है जिस कारण अब वह समय नहीं रहा। अब तक तो तुम्हारे सभी बंधु-बांधव मर चुके हैं। उनके वंश का भी कोई नहीं बचा।

यह जानकर मुचुकुंद बहुत दु:खी हुए और वर मांगा कि उन्हें कलियुग के अंत

राम के कुल के राजा शल्य ने जरासंध को यह सलाह दी कि वे कृष्ण को हराने के लिए कालयवन से दोस्ती करें। कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण के लिए सब तैयारियां कर लीं। दूसरी ओर जरासंध भी सेना लेकर निकल गया। कालयवन की सेना ने मथुरा को घेर लिया। उसने मथुरा नरेश कृष्ण के नाम संदेश भेजा और कालयवन को युद्ध के लिए एक दिन का समय दिया।

तक सोना है। तब इन्द्र ने मुचुकुंद को वरदान दिया कि किसी धरती के निर्जन स्थान पर जाकर सो जाएं और यदि कोई तुम्हें उठाएगा तो तुम्हारी दृष्टि पड़ते ही वह भस्म हो जाएगा। इसी वरदान का प्रयोग श्रीकृष्ण कालयवन को मृत्यु देने के लिए करना चाहते थे।

श्रीकृष्ण और कालयवन का संघर्ष जब कालयवन और कृष्ण में द्वंद्व युद्ध का जय हो गया तब कालयवन श्रीकृष्ण की ओर दौड़ा। श्रीकृष्ण तुरंत ही दूसरी ओर मुंह करके रणभूमि से भाग चले और कालयवन उन्हें पकडने के लिए उनके पीछे-पीछे दौडने लगा। श्रीकृष्ण लीला करते हुए भाग रहे थे, कालयवन पग-पग पर यही समझता था कि अब पकड़ा, तब पकड़ा। इस प्रकार भगवान बहुत दूर एक पहाड़ की गुफा में घुस गए। उनके पीछे कालयवन भी घुसा। वहां उसने एक दूसरे ही मनुष्य को सोते हुए देखा।

उसे देखकर कालयवन ने सोचा, मुझसे बचने के लिए श्रीकृष्ण इस तरह भेष बदलकर छुप गए हैं- 'देखो तो सही, मुझे मूर्ख बनाकर साधु बाबा बनकर सो रहा है।' उसने ऐसा कहकर उस सोए हुए व्यक्ति को कसकर एक लात मारी।

वह पुरुष बहुत दिनों से वहां सोया हुआ था। पैर की ठोकर लगने से वह उठ पड़ा और धीरे-धीरे उसने अपनी आंखें खोलीं। इधर- उधर देखने पर पास ही कालयवन खड़ा हुआ दिखाई दिया। वह पुरुष इस प्रकार ठोकर मारकर जगाए जाने से कुछ रुष्ट हो गया था। उसकी दृष्टि पड़ते ही कालयवन के शरीर में आग पैदा हो गई और वह क्षणभर में जलकर राख का ढेर हो गया। कालयवन को जो पुरुष गुफा में सोए मिले, वे इक्ष्वाकुवंशी महाराजा मांधाता के पुत्र राजा मुचुकुंद थे। इस तरह कालयवन का अंत हो गया।

❑

श्रीकृष्ण लीला करते हुए भाग रहे थे, कालयवन पग-पग पर यही समझता था कि अब पकड़ा, तब पकड़ा। इस प्रकार भगवान बहुत दूर एक पहाड़ की गुफा में घुस गए। उनके पीछे कालयवन भी घुसा। वहां उसने एक दूसरे ही मनुष्य को सोते हुए देखा। उसे देखकर कालयवन ने सोचा, मुझसे बचने के लिए श्रीकृष्ण इस तरह भेष बदलकर छुप गए हैं-

आश्चर्यजनक है यह पौधा, घड़ी के कांटे की तरह सरकती हैं पत्तियां.

गृहदोष हो या वास्तुदोष... इसे दूर करने के लिए लोग जाने क्या क्या उपाय करते हैं, लेकिन जानकारों की माने तो छिंदवाड़ा जिले के शत-प्रतिशत आदिवासी आबादी वाले पातालकोट के गांवों में एक ऐसा दिव्य पौधा पाया जाता है, जिसमें वास्तुदोष के निराकरण की सभी खूबियां मौजूद हैं। जानकार बताते हैं कि इसे घर पर रखने भर की जरुरत है। पौधो की खासियत है कि सूर्योदय से सूर्यास्त तक इस दिव्य पौधो की पत्तियां घड़ी के कांटे की तरह हर सेकंड घूमती रहती हैं। इसलिए स्थानीय आदिवासी इसे 'घड़ी कांटा पौधा' के नाम से पुकारते हैं। लम्बे समय से इस पौधों की खूबियां सुनाते आ रहे वनकल्याण आयुर्वेद संस्थान के वैद्य प्रीतम डोगरे को यह पौधा छिंदवाड़ा जिले के तामिया विकास ब्लॉक के पातालकोट में लाल घाटी के नीचे जड़ी-बूटियों की खोज के दौरान प्राप्त हुआ। डोगरे अब दिव्य पौधे को अपने स्थित आवास पर ले आए हैं। वे कहते हैं कि इसे झारिया जनजाति के बुजुर्ग तंत्र-मंत्र के साथ वशीकरण के लिए उपयोग में लाते हैं। लोगों की माने तो मानसिक रोगियों पर भी इसकी पत्ती या जड़ रामबाण दवा का काम करती हैं, जिसके चलते यह पौधा अब विलुप्त प्रजाति का हो गया है।

सामाजिक सरोकार और युवाओं की भूमिका

☐ उमाशंकर मिश्र

हमारा इतिहास एवं वर्तमान युवाओं की कीर्तिगाथाओं से भरा है। आखिर सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के बलिदान को कौन भुला सकता है। स्वामी विवेकानंद द्वारा अमेरिका में भरी गई हुंकार की गूंज को क्या भुलाया जा सकता है? युवावस्था में यदि गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव को सहकर चुप बैठ गए होते तो क्या स्वाधीनता संग्राम को बल मिल पाता?

जब शाम को करीब 4 बजे मंडला जिले के बिछिया ब्लॉक की उमरवाड़ा पंचायत के मोहगांव के बढ़ई टोला की रहने वाली सुनीता घर से करीब 100 मीटर की दूरी पर बरगद के पेड़ के नीचे बच्चे को लेकर बैठी थी और अन्य पांच महिलाएं पास में ही चकोड़ा भाजी तोड़ रही थीं। इतने में ही वन विभाग के 24 लोगों का जत्था बैगा एवं गोंड आदिवासियों को जातिगत संबोधनों से गरियाते हुए वहां पहुंच गया। उनमें दो महिला सिपाहिओं समेत रेंजर एवं डिप्टी रेंजर भी थे। उसी स्थान पर हाल ही में काट कर लाये गए कुछ बांस पड़े थे, जिसे वन विभाग के लोगों ने काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। सुनीता, सम्पत और लच्छी समेत जो भी लोग बाहर थे डर के मारे सब भागकर घर में छुप गए।

चकोड़ा भाजी तोड़ रही 6 महिलाएं सेववती, सुनीता, सुगवती, इंद्रवती, दीनवती एवं रेवती अफरा-तफरी में भाग नहीं पाई, जिन्हें वन विभाग के कर्मचारियों ने करीब एक किलोमीटर जंगल में दौड़ाकर पीछा किया। अंतत: उन महिलाओं ने एक घर में जाकर शरण ली। वहां भी वे लोग पहुंच गए और घर के मालिक से पूछताछ की तो उसने महिलाओं के वहां होने की बात से इंकार कर दिया। जनसंघर्ष मोर्चा से सम्बद्ध विवेक पवार इस मामले को गंभीरता से लेते हुए कहते हैं कि-'यदि वे महिलाएं वन विभाग के लोगों को मिल जाती तो वे न जाने कैसा बर्ताव उनके साथ करते।' सेववती बताती हैं कि वे लगातार जातिगत संबोधनों से गाली देते हुए हमारा पीछा कर रहे थे। बहरहाल कहानी अभी ख़त्म नहीं हुई थी। जब महिलाएं उन्हें नहीं मिली तो उन्होंने कुछ ही दूरी पर बैल चराने गए सुग्रीव और महेश की ओर रुख किया। गांव के अन्य करीब 25 मवेशी भी वहीं चर रहे थे। उन दोनों से पूछा गया- यहां क्या कर रहे हो? इतने में महेश को दो कर्मचारियों ने पकड़ लिया और लट्ठ, थप्पड़ एवं लात घूंसे से जमकर पिटाई की गई। वहां चर रहे मवेशियों को खदेड़ दिया गया, जिसके चलते सुग्रीव के बछड़े की अगले दिन मौत हो गई। इस बीच सुग्रीव ने दौड़कर बढ़ई टोला में महेश की पिटाई की सूचना गांव वालों को दे दी। इस पर गांव वालों का खून खौल गया, बच्चे, बूढ़े और जवान सभी निहत्थे ही वन विभाग के कर्मचारियों की ओर लपक पड़े। करीब 5 किलोमीटर तक जंगल में मोहगांव के करीब 50 लोगों ने वन विभाग के कर्मचारियों के अत्याचार का बदला लेने के लिए उनका पीछा किया। इस बीच गांव वालों का सामना कोर एरिया के गश्ती दल से हो गया। इससे पहले कि गांव वाले उन पर पिल पड़ते महेश और सुग्रीव ने उन्हें पहचानते हुए कहा कि ये वे लोग नहीं हैं। फिर गांव वाले आगे बढ़ गए और अंतत: उन्होंने एक डिप्टी रेंजर को पकड़ कर धुन दिया।

'इतना जनता क्यों आया हो, का काम है? क्यों नहीं आयेंगे साब, घर में जाय के मरवाओ सबरी जनता ला।' मोहगांव की बैगा आदिवासी महिला बनिहारोबाई ने दहाड़ते हुए बिछिया थाने में पुलिस अधिकारी की इस

बात के जवाब में कहा। यह सब बताते हुए बनिहारोबाई अत्यंत उत्तेजित हो जाती है और पास ही पड़े बांस के टुकड़ों को उठाकर इस तरह से लहराने लगती है मानो वन विभाग का कोई नुमाइंदा यदि सामने होता तो उसकी खैर नहीं थी। ऊपर दिये गए इन संदर्भों पर गौर करने की जरूरत है। जनजातीय लोगों के बारे में आम धारणा है कि नैसर्गिक तौर पर वे वनवासी हैं। यही नहीं उनके बारे में यह भी कहा जाता है कि आदिवासी बड़े ही रिजर्व और शांत स्वाभाव के होते हैं। लेकिन उपर्युक्त संदर्भ को देखें तो यहां आदिवासियों ने शोषणपूर्ण व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई है। कुछ समय पहले तक मोहगांव के आदिवासी भी अपनी जमात के अन्य लोगों की तरह दब्बू स्वाभाव के हुआ करते थे और वन विभाग की तमाम ज्यादतियों को चुपचाप सह लेते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। वे अपने अधिकारों को जानते हैं, वे जानते हैं कि सरकार और संविधान ने अब उन्हें जंगल में लघु वनोत्पादों के निस्तार की छूट दे दी है। यही नहीं वनाधिकार अधिनियम 2005 के आने के बाद पीढ़ियों से जंगल में निवास करने वाले वनवासियों के पट्टे की समस्या भी हल हो जानी चाहिए थी। लेकिन इसके बावजूद उन्हें जब तब सामंती व्यवस्था के अत्याचारों का शिकार होना पड़ता था। लेकिन वन विभाग के अत्याचारों के अलावा गांव के प्रति प्रशासनिक एवं पंचायत की उपेक्षा को लेकर भी सवाल करने आरंभ कर दिये हैं। हाल ही में घुघरी जनपद मुख्यालय पर दर्जनों सरपंच सचिवों की आदिवासियों ने जमकर धुनाई की।

यह सब किसी दैवीय चमत्कार से नहीं हुआ था, बल्कि इसके पीछे करीब 34 वर्षीय एक ऐसे युवा की प्रेरणा रही है जो खुद भी शारीरिक तौर पर अशक्त है। मंडला जिले के बिछिया ब्लॉक के विवेक पवार को सामाजिक सरोकार की सीख विरासत में मिली थी। उनकी मां भी एकता परिषद् नामक

15 वर्षों के संघर्ष में विवेक ने लोगों के बीच काम तो किया, लेकिन अन्य संगठनों की तरह कागजी अभिलेख दुरुस्त करने में उन्होंने समय नहीं खोया। इसके बावजूद अनेक संस्थाएं आज विवेक के सामाजिक सरोकारों को देखते हुए सहयोग के लिए आ खड़ी हुई हैं।

सामाजिक संगठन से जुड़ी थी। विक्लांग होते हुए भी विवेक ने वो कर दिखाया है जो बड़े-बड़े संगठनों के कार्यकर्ता भी नहीं कर पाते। आज बिछिया और बैहर ब्लॉक के दर्जनों गांवों के लोग विवेक की अगुवाई में अपने अधिकारों की मांग के लिए उनके साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। 15 वर्षों के संघर्ष में विवेक ने लोगों के बीच काम तो किया, लेकिन अन्य संगठनों की तरह कागजी अभिलेख दुरुस्त करने में उन्होंने समय नहीं खोया। इसके बावजूद अनेक संस्थाएं आज विवेक के सामाजिक सरोकारों को देखते हुए सहयोग के लिए आ खड़ी हुई हैं। बीएससी तक शिक्षित विवेक को उपन्यास लिखने और एक्ट का भी शौक था, लेकिन फिल्मी हीरो बनते बनते आज वे समाज के हीरो बन गए हैं। इस विवेक ने जनसंघर्ष मोर्चा नाम से अपना संगठन बनाया और हीन भावना से ग्रस्त आदिवासियों को उनके अधिकारों का बोध कराने में जुट गए। वे ग्रामीणों को इस बात के लिए जागरूक करते हैं कि ग्रामसभा के माध्यम से वे अपने अधिकारों की मांग कैसे कर सकते हैं। जरा सी बात होने पर घरों में दुबक कर बैठ जाया करने वाले आदिवासी अब कलैक्टर से लेकर एसपी तक बेधड़क पहुंच जाता है। एक समय छत्तीसगढ़ में शंकर गुहा नियोगी के साथ भी विवेक ने काम किया है, लेकिन नियोगी की मृत्यु के बाद साथ छूट गया। मध्यप्रदेश के मंडला और बालाघाट जिले के बाद आज छत्तीसगढ़ में भी जनसंघर्ष मोर्चा समाज के पिछड़े वर्गों की आवाज बनने जा रहा है। वर्षों तक संघर्ष के बाद शासन के अधिकारी लोग कानूनी अधिकारों को क्रियान्वित करने से पहले उसके प्रावधानों को पढ़ने के लिए बाध्य होने लगे हैं। निचले स्तर पर प्रशासनिक कर्मचारियों को अब इस बात का अहसास हो गया है कि उनकी गलत हरकत पर लोग अब तीखी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। शारीरिक तौर पर अक्षम और बैसाखियों के सहारे चलने वाले विवेक हजारों आदिवासियों एवं वंचितों की आवाज बन चुके हैं। समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रतिबद्धता की यह मात्रा एक उत्साही युवा में ही हो सकती है। तमाम रूकावटों के बावजूद सामंती प्रशासनिक व्यवस्था से लड़ते हुए विवेक पवार ने इस बात को साबित किया है।

आज जब युवाओं पर भौतिकवादी होने का आरोप लगाया जाता है, विवेक जैसे अनेक युवा सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में कार्य करते हुए मिसाल बन रहे हैं। एक ऐसा ही नाम है आलिम हाजी का। अप्रवासी भारतीय आलिम का जन्म एवं शिक्षा अमेरिका में हुई है, लेकिन उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र राजस्थान के झुंझनु जिले के छोटे से गांव बगड़ को चुना है।

आलिम के साथ करीब आधा दर्जन युवाओं की टीम ने बगड़ में देश के पहले महिला बीपीओ का आगाज किया है। ऑप्टीकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुके आलिम, कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र की डिग्री प्राप्त गगन राणा, अमेरिका की केस वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में स्नातक कार्तिक रमण, बेल्जियम में पली-बढ़ी और शिक्षित आशिनी कोठारी एवं बायोटेक्नॉलजी में स्नातक मुंबई के श्रोत कटेवा चाहते तो किसी भी कार्पोरेट कंपनी में नौकरी करके आराम की जिंदगी बसर कर सकते थे। आखिर क्या कारण था कि उन्होने गांवों की पगडंडियों पर चलना पसंद किया? बहरहाल जो भी हो, इन युवाओं द्वारा शुरु किए गए बीपीओ 'सोर्स फॉर चेंज' में बगड़ की करीब 40 महिलाएं कार्य कर रही हैं। यह बीपीओ देश विदेश के अपने ग्राहकों को डाटा एंट्री, डाटा मेन्टेनेंस, कान्टेक्ट वेरीफीकेशन जैसी सेवाएं देता है। महिलाओं को घर का काम भी करना पड़ता है, इस बात को ध्यान में रखते हुए 4 एवं 8 घंटों की दो शिफ्ट में काम करने की सहूलियत दी जाती है। संस्था के ग्राहकों में दवा निर्माता पीरामल ग्रुप, प्रथम एनजीओ, सीआईआई, राजस्थान सरकार और अमेरिका की मैरीलैंड यूनिवर्सिटी शामिल है। किसी नए प्रयोग को लेकर स्थानीय ग्रामीणों के मन में तरह तरह के सवाल उठना लाजमी है। बगड़ में सोर्स फॉर चेंज के संस्थापकों ने भी इसी तरह के सवालों का सामना किया, मसलन-'आप यहां क्यों आये है? क्या आपको सर्टिफिकेट मिलेगा? बगड़ गांव की महिलाओं को बीपीओ से जोड़ने के लिए आलिम और उनके साथियों को परंपरागत सामाजिक प्रतिरोधों का भी सामना करना पड़ा, लेकिन काफी जद्दोज़हद के बाद आज उन्होंने इस पर फतह हासिल कर ली है और उन्हें बगड़ के लोगों का प्यार एवं सम्मान भी मिलने लगा है।

वर्ष 2005 में जब सूचना का अधिकार अमल में आया तो शायद ही लोगों को इसके प्रभाव का अंदाजा रहा हो। लेकिन इस बीच समान्य कद काठी के सांवले से एक युवक ने इसके प्रभाव का आकलन कर लिया। फिर क्या था, आई.आई.टी. इंजीनियर इस युवा ने आईसीएस की नौकरी को गुडबॉय कह दिया और सूचना के अधिकार के बूते देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, प्रशासनिक उदासीनता और कालाबाजारी के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। इस मुहिम में दर्जनों स्वयंसेवी संस्थाओं को शामिल कर लिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय में सूचना के अधिकार के तहत हजारों अर्जियां देश भर से आने लगीं। नेताओं एवं सरकारी दफ्तरों में बैठे अधिकारियों समेत प्रभावशाली लोगों को सूचना का अधिकार दानव की भांति नज़र आने लगा। परिणाम यह हुआ कि इस कानून की धार कुंद किए जाने के प्रयास किए जाने लगे। लेकिन उस युवा की अगुवाई में देश भर के गैर सरकारी संगठन लामबंद हुए और सूचना के अधिकार की धार को बचाने के लिए संघर्ष छिड़ गया। बाद में उस उत्साही युवा को इस काम के लिए मैग्सेसे अवार्ड से भी नवाजा गया, जिसे हम अरविंद केजरीवाल के नाम से जानते हैं। अरविंद जैसे युवा आगे नहीं आते तो सूचना का अधिकार जो जनता की आवाज बना है, जिसके बूते जिले के कलैक्टर तक ग्रामीणों से मिलने चले आते हैं, जिसके प्रभाव से ग्राम पंचायतों के चेहरे में सुधार आ रहा है, कब का कूड़े की टोकरी में फेंका जा चुका होता। तब हम शायद मनमानी करने वाले अधिकारियों को सूचना के अधिकार के तहत जानकारी मांगने की तड़ी न दे पाते!

अरविंद जैसे युवा आगे नहीं आते तो सूचना का अधिकार जो जनता की आवाज बना है, जिसके बूते जिले के कलैक्टर तक ग्रामीणों से मिलने चले आते हैं, जिसके प्रभाव से ग्राम पंचायतों के चेहरे में सुधार आ रहा है, कब का कूड़े की टोकरी में फेंका जा चुका होता। तब हम शायद मनमानी करने वाले अधिकारियों को सूचना के अधिकार के तहत जानकारी मांगने की तड़ी न दे पाते!

समाज के लिए कुछ करने की चाहत रखने वालों युवाओं में ऐसा ही एक नाम शुभ्रा सक्सेना का है। वर्ष 2009 की प्रशासनिक सेवा में अव्वल रहने वाली शुभ्रा का कहना है कि-'मैं समाज में हाशिये पर पड़े लोगों के लिए कुछ करना चाहती हूं।' शुभ्रा सक्सेना शहर-गांव के बीच फैलती खाई, महिला एवं पुरुषों के बीच असमानता एवं दलितों के प्रति किए जाने वाले भेदभाव को लेकर चिंतित नज़र आती हैं। आज जब वे भारतीय प्रशासनिक सेवा का एक हिस्सा बन चुकी हैं तो ग्रामीण विकास के अपने सरोकारों को अमली जामा पहनाने के लिए वे कमर कस चुकी हैं।

देवास जिले की जनसाहस नामक संस्था से जुड़े आसिफ शेख और अहमदाबाद की गैरसरकारी संस्था नवसर्जन से सम्बद्ध मंजुला प्रदीप ऐसे ही उत्साही युवाओं की जमात का हिस्सा हैं, जिन्होंने समाज की बेहतरी का रास्ता चुना है। दोनों दलित मुद्दों को लेकर कार्य करते हैं। मैला प्रथा उन्मूलन, सामाजिक भेदभाव एवं दलित अत्याचार के अलावा आत्मनिर्भरता की कई कहानियों को इन्होंने अभिव्यक्ति दी है। वड़ोदरा का दिवेर गांव जो कभी पटेल सवर्णों की सामंती व्यवस्था के प्रभाव में था आज, वहां की पंचायत में दलितों का सिक्का चलता है। इसी तरह देवास जिले के अनेक गांवों में दलितों के हक की आवाज बनकर जनसाहस उभरा है और कई मामलों में प्रदेश सरकार को भी झुकना पड़ा है। आसिफ और

मंजुला जैसे युवा किसी युवा के लिए प्रेरणास्रोत हो सकते हैं।

आईआईएम और आईआईटी के अनेक छात्रों ने समय समय पर गांवों में जाकर वंचित समुदायों के बीच काम करने की प्रतिबद्धता जाहिर की है। कौशलेन्द्र ऐसे ही सैकड़ों छात्रों की जमात का हिस्सा हैं, जिन्होंने आकर्षक पैकेजों के लोभ को ठुकराकर अपने गृहराज्य बिहार के किसानों के बीच काम करने का निर्णय लिया है। आईआईएम से डिग्री लेने के बाद कौशलेन्द्र ने विस्तृत फील्ड वर्क किया, उन्होंने खेती की तकनीकों को समझा और अंततः 40 लाख रुपये कर्ज लेकर सब्जी का व्यापार आरंभ कर दिया। उनके इस प्रयास को कमतर नहीं आंकना चाहिए, क्योंकि उनके काम में एक मिशन का भाव निहित है और वे गरीब सब्जी उत्पादकों, वितरकों एवं मजदूरों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आज बिहार की अधिकतर आबादी रोजगार की तलाश में पलायन कर रही है ऐसे में कौशलेन्द्र राज्य में एक सप्लाई चेन तैयार करने में जुटे हैं, जिससे निचले स्तर के उत्पादकों एवं गरीब मजदूरों को फायदा पहुंचाया जा सके और खेती-किसानी की ओर लोगों का रुझान वापस लौट सके।

पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाली महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले की संस्था इको-प्रो के अध्यक्ष बंडू धोतरे की उम्र होगी करीब 30-32 साल। लेकिन सामान्य से दिखने वाले इस युवा ने दर्जनों स्वयंसेवी संस्थाओं को लामबंद कर चंद्रपुर जिले के 1750 हेक्टेयर में फैले ताडोबा अंधेरी बाघ अभ्यारण्य के बफर जोन को माइनिंग माफिया से बचाने के लिए आंदोलन छेड़ रखा है। उल्लेखनीय है अदानी ग्रुप लिमिटेड को चंद्रपुर जिले के ताडोबा रिजर्व फॉरेस्ट के बफर जोन में 2 कोल ब्लॉक आवंटित किए गए हैं। जिसके लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार के अनेक नेता एवं सरकारी मशीनरी भी कंपनी के पक्ष में लॉबिइंग करने में जुटे हैं। लेकिन देश के सबसे बड़े कोयला आयातक अदानी के रास्ते का कांटा बनकर उभरे हैं बंडू धोतरे। बंडू चाहते तो करोड़ो रुपये लेकर आंदोलन समाप्त कर सकते थे, लेकिन उन्होंने इसकी बजाय अपने गृह जिले के पर्यावरण, बायोडायवर्सिटी, जल एवं जंगल को तरजीह दी। इसके लिए बंडू दो बार आमरण अनशन पर भी बैठ चुके हैं। उनके इस आंदोलन से चंद्रपुर जिले की जनता जागरूक हुई है और अदानी की माइनिंग पर रोक लगाने की मांग करते हुए लोग सड़कों पर उतरने लगे हैं। अंततः केन्द्रीय मंत्री जयराम रमेश को माइनिंग पर रोक लगाने का आश्वासन देना पड़ा।

इस तरह देखा जाये तो हमारा इतिहास एवं वर्तमान युवाओं की कीर्तिगाथाओं से भरा है। आखिर सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के बलिदान को कौन भुला सकता है। स्वामी विवेकानंद द्वारा अमेरिका में भरी गई हुंकार की गूंज को क्या भुलाया जा सकता है? युवावस्था में यदि गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव को सहकर चुप बैठ गए होते तो क्या स्वाधीनता संग्राम को बल मिल पाता? कतई नहीं! भारतीय युवाओं का जयघोष ऐसे ही गूंजता रहेगा, जो भावी पीढ़ियों को हमेशा सामाजिक सरोकारों की सीख देगा। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में करीब 41 फीसदी आबादी युवाओं की है जो देश के विकास में परिवर्तनकारी भूमिका अदा कर सकती है। बशर्ते जरूरत होगी इन युवाओं को शिक्षा एवं रोजगार जैसे बुनियादी अधिकार मुहैया कराने की। बहरहाल इस ओर सरकार ने कदम बढ़ाया है और शिक्षा का अधिकार कानून पास हो चुका है। लेकिन आज जब शिक्षा कमोडिटी बन चुकी है, ऐसे में शैक्षिक परिवेश एवं उसके प्रभाव में व्यावहारिक समानता कैसे लाई जा सकेगी? यह सवाल अभी भी अनुत्तरित है। शायद किसी युवा को एक बार फिर इस सवाल का जवाब तलाशने और सरकार को एक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की याद दिलाने के लिए उठ खड़ा होना होगा।

एक बात राजनीति में युवाओं की भागीदारी से जुड़ी है। किसी भी समाज में परिवर्तन का मार्ग राजनीति से होकर जाता है। यह विडंबना है कि आज हमारा देश न केवल दुनिया के भ्रष्टतम देशों की जमात में शामिल है, बल्कि हमारे राजनीतिज्ञों ने ओछी राजनीति का परिचय देते हुए समय समय पर देश की अस्मिता को दांव पर लगाया है। आज हालात यह हो गए हैं कि कोई स्वच्छ छवि का व्यक्ति या फिर शिक्षित युवा राजनीति के दलदल में पैर नहीं रखना चाहता। लेकिन इस तरह से मुंह छिपाने से काम नहीं चलेगा।

सूचना समाज के दौर में अपने अधिकारों की जानकारी और उसकी मांग करने की सीख ग्रामीणों को देना, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, परिवहन एवं खाद्य सुरक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों पर सबका हक सुनिश्चित करने के लिए अभियान चलाना, समकालीन समाज के मुताबिक पिछड़े लोगों को तकनीक एवं कौशल आधारित उद्यमों से जोड़ना, ग्रामीण उत्पादों के प्रसंस्करण और विपणन के लिए जमीन तैयार करना, स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अवसर पैदा करने जैसे अनेक कार्य हैं। जिससे शिक्षित युवा जुड़कर ग्रामीणों एवं वंचित लोगों के जीवन में रोशनी भर सकते हैं। हाल ही में मैग्सेसे अवार्ड से सम्मानित दीप जोशी ने युवाओं की ताकत को काफी पहले ही पहचान लिया था। आज उनकी संस्था ''प्रदान'' सें आईआईटी एवं आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से शिक्षा ग्रहण कर चुके हजारों लोग जुड़े हैं। हमेशा के लिए नहीं, कुछ समय के लिए ही सही, लेकिन सामाजिक सरोकारों से जुड़ने की प्रतिबद्धता इन युवाओं ने दिखाई है। जिसका परिणाम यह हुआ कि ''प्रदान'' आज इस देश के तमाम गैर सरकारी संगठनों के लिए आदर्श बन चुकी है।

एक बात राजनीति में युवाओं की भागीदारी से जुड़ी है। किसी भी समाज में परिवर्तन का मार्ग राजनीति से होकर जाता है। यह विडंबना है कि आज हमारा देश न

कवल दुानया क भ्रष्टतम दशा का जमात म शामिल है, बल्कि हमारे राजनीतिज्ञों ने ओछी राजनीति का परिचय देते हुए समय समय पर देश की अस्मिता को दांव पर लगाया है। आज हालात यह हो गए हैं कि कोई स्वच्छ छवि का व्यक्ति या फिर शिक्षित युवा राजनीति के दलदल में पैर नहीं रखना चाहता। लेकिन इस तरह से मुंह छिपाने से काम नहीं चलेगा। आज दुनिया की साम्राज्यवादी ताकतें भारत को उभरती हुई ताकत के रूप में नहीं देखना चाहती। इसके लिए तमाम तरह के अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का सहारा लिया जाता है। विडंबना यह है कि हमारी सरकारें अमेरिकापरस्ती से बाज नहीं आती और देशहितों को ताक पर रखकर ताबड़तोड़ समझौते कर रही हैं। शिक्षित युवा राजनीतिज्ञों को आगे आना होगा, जिससे देश के प्रति की जाने वाली साजिशों का पदाफाश किया जा सक।

अंतिम बात चौथे खंबे से जुड़ी है, जिसे लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रहरी माना जाता रहा है। लेकिन यह बड़े दुख की बात है कि इन लोकसभा चुनावों में पैसे लेकर ख़बरे छापने की बातें सामने आई हैं। मीडिया में उत्साही और देशभक्त युवाओं की कमी नहीं है। आज हजारों मीडिया संस्थान मशीन की भांति पत्रकारों का उत्पादन कर रहे हैं। लेकिन वर्तमान युग की पत्रकारिता की चुनौतियां एवं मुद्दे आम नहीं रह गए हैं। दूसरे मीडिया संस्थानों में अनेक ऐसे लोग कुंडली मारकर बैठे रहते हैं, जो किसी लॉबी का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे में जब वे नौकरी छोड़ते हैं तो पूरी टीम खिसक जाती है और उसकी जगह दूसरी टीम प्रतिस्थापित हो जाती है। ऐसे में मीडिया संस्थान द्वारा उत्पादित नवांकुर पत्रकार के लिए जगह बनाना आसान नहीं होता। जो जगह बना भी लेते हैं, उनके लिए जीवनयापन के साथ-साथ नौकरी बचाना चुनौती बन जाता है। ऐसे में समाज के लिए कुछ करने का जज्बा मरने लगता है। ऐसे दर्जनों युवा पत्रकारों की पीड़ा को मैंने खुद देखा-सुना है। यह सवाल मैंने कई लोगों से उठाया, इतने चैनल, इतने मीडिया हाउस नित खुल रहे हैं, तो फिर इन युवाओं के समक्ष नौकरी के लाले क्यों हैं? या फिर जिन लोगों के पास नौकरी हैं भी, वे इतना असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं? जवाब मिला कि नौकरी की कमी नहीं है, कमी है आत्मविश्वास की, कमी है मुद्दों पर आधारित समझ की, कमी है भाषा दक्षता की, कमी है न्यूज सेंस की। आगे उन्होंने कहा कि कोर्स करके डिग्री तो हासिल की जा सकती है, लेकिन पत्रकारिता जिन कारणों से समाज में स्थान बनाती है, वे कारण युवाओं में विरले ही नज़र आते हैं और जिनमें काबिलियत है वे कभी पीछे नहीं रहते और समाज में परिवर्तनकारी भूमिका का सूत्रपात करते हैं। ■

कुछ समय के लिए रुको

एक लकड़हारा कुछ सालों से एक कंपनी में काम कर रहा था। लेकिन फिर भी उसकी तरक्की नहीं हुई थी। उसी कंपनी ने कुछ समय बाद एक लकड़हारे को नौकरी पर रखा और उसे एक साल के अंदर ही तरक्की मिल गयी। पहले लकड़हारे को बहुत ही बुरा लगा। इसलिए उसने इस बात का विरोध किया। जो करोंगे सो भरोंगे वह अपने मालिक के पास गया और अपनी समस्या उन्हें बता दी। उसके मालिक ने उससे कहा-तुम अभी भी उतने ही पेड़ काटते हो। जितने की कुछ साल पहले काटते थे। लेकिन वो दूसरा लकड़हारा तुमसे अधिक पेड़ काटता है। अगर तुम चाहते हो की तुम्हारी तरक्की हो। तो तुम्हे भी पहले से अधिक पेड़ काटने होंगे। लकड़हारे ने कहा-ठीक है और उसने अधिक देर तक काम करना शुरू कर दिया। लेकिन फिर भी वह अधिक पेड़ नहीं काट पाया। वह फिर से अपने मालिक के पास गया और उन्हें सारी बात बताई। उसके मालिक ने उससे कहा-तुम्हें मेरे पास नहीं बल्कि उस लकड़हारे के पास जाना चाहिए। क्योकि वो कुछ ऐसा जानता है जो हम दोनों नहीं जानते। जो खतरा आने पर आप को अकेला छोड़ दे ऐसे दोस्त से दूर रहो। वह लकड़हारा दूसरे लकड़हारे के पास गया और उससे पूछा-तुम इतने पेड़ कैसे काट लेते हो। उसने कहा-पेड़ काटते-काटते कुल्हाड़ी की धार खत्म हो जाती है। इसलिए मैं एक पेड़ काटने के बाद कुछ समय के लिए काम रोक देता हूँ। और अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करता हूँ। अब तुम अपने आप से पूछो-तुमने अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज कब की थी। वह लकड़हारा अब सारी बात समझ चुका था। उसने भी ऐसा ही किया। कुछ ही दिनों बाद वह भी अधिक पेड़ काटने लगा। अधिक पेड़ काटने के कारण एक साल के अंदर ही उसकी भी तरक्की हो गयी।

बगदाद को बसाया था भगदत्त ने?

साभार

भगवान, भगवती आदि शब्द भग उपसर्ग लगाकर बने हैं, उसी तरह भगदत्त भी बना। पौराणिक काल के एक राजा का नाम भगदत्त था जिसका अर्थ हुआ (भग) देवता से प्राप्त। पुरानी फारसी, ईरानी और अवेस्ता में यह भग लफ्ज बग या बेग के रूप में परिवर्तित हो गया। बग या बेग बाद में रसूखदार लोगों की उपाधि भी हो गई। मध्य एशिया के शक्तिशाली कबीलों की जातीय पहचान यह बेग शब्द बना। कुछ विद्वान इसमें उद्यान के अर्थ वाला बाग भी देखते हैं जिसकी व्याख्या समृद्ध भूमि, ऐश्वर्य भूमि के रूप में है। बगीचा इसका ही रूप है। बगराम, बगदाद, बागेवान जैसे शहरों के नामों के पीछे यही अर्थ छुपा है। बख्श का अर्थ भी अंश, खंड, भाग्य, हिस्सा, देने वाला होता है। मेसोपोटेमिया के उपजाऊ भाग में स्थित बगदाद अरब विश्व का एक प्रमुख नगर एवं इराक की राजधानी है। माना जाता है कि इसका नाम 600 ईसा पूर्व के बाबिल के एक ब्राह्मण राजा भागदत्त पर पड़ा है। हालांकि यह शोधा का विषय है। हालांकि यह नगर 4,000 वर्ष पहले से ही अस्तित्व में रहा है। यह शहर प्राचीन सिल्क रूट के प्रमुख शहरों में से एक है। नदी के किनारे स्थित यह शहर पश्चिमी यूरोप और सुदूर पूर्व के देशों के बीच, समुद्री मार्ग के आविष्कार के पहले कारवां मार्ग का प्रसिद्ध केंद्र था।

राजा भागदत्त से पहले एक ओर राजा हुए हैं जो प्राग्ज्योतिष (असम) देश के अधिपति नरकासुर के पुत्र और इंद्र के मित्र थे।

कुरुक्षेत्र के युद्ध में वह कौरव सेना की ओर से लड़े और अपने विशालकाय हाथी के साथ उसने बहुत से योद्धाओं का वध किया। अपने 'सौप्तिक' नामक हाथी पर उसने भीम को भी परास्त किया था।

भगदत्त के पास शक्ति अस्त्र और वैष्णव अस्त्र जैसे दिव्यास्त्र थे। उसके पुत्र का वध नकुल ने किया। 12वें दिन के युद्ध में उसके वैष्णव अस्त्र को श्रीकृष्ण द्वारा किल किया गया और फिर अर्जुन ने उसका वध किया।

एक बार भौमासुर ने इंद्र के कवच और कुंडल छीन लिए। इस पर कृष्ण ने क्रुद्ध होकर भौमासुर के 7 पुत्रों का वध कर डाला। भूमि ने कृष्ण से भगदत्त की रक्षा के लिए अभयदान मांगा।

भौमासुर की मृत्यु के पश्चात भगदत्त प्राग्ज्योतिष के अधिपति बने। भगदत्त ने अर्जुन, भीम और कर्ण के साथ युद्ध किया। हस्ति युद्ध में भगदत्त अत्यंत कुशल थे। कृतज्ञ और वज्रदत्त नाम के इनके दो पुत्र थे, इनमें कृतज्ञ की मृत्यु नकुल के हाथ से हुई। वज्रदत्त राजा होने पर अर्जुन से पराजित हुआ। ❑

प्रकृति के नियम हैपी थॉट

-सुरेश मेहरा-

- ☞ खाना जो हम खाते हैं, 24 घण्टे के अंदर शरीर से बाहर निकल जाना चाहिए, वरना हम बीमार हो जायेंगे।
- ☞ पानी जो हम पीते हैं, 04 घण्टे के अंदर शरीर से बाहर निकल जाना चाहिए, वरना हम बीमार हो जायेंगे।
- ☞ हवा जो हम सांस लेते हैं, कुछ सेकंड में ही वापस बाहर निकल जानी चाहिए, वरना हम मर ही जायेंगे।
- ☞ लेकिन नकारात्मक बातें, जैसे कि घृणा, गुस्सा, ईर्ष्या, असुरक्षा आदि आदि, जिनको हम अपने अंदर दिन, महीने और सालों तक रखे रहते हैं।
- ☞ यदि इन नकारात्मक विचारों को समय-समय पर अपने अंदर से नहीं निकालेंगे तो एक दिन निश्चित ही हम मानसिक रोगी बन जायेंगे।
- ☞ निर्णय आपका, क्योंकि शरीर है आपका विचार हैं आपके

हम बदलेंगे युग बदलेगा

एक राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ती के लिये आशा लगाये बैठा था

बृजेश सिंह

पर पुत्र नही हुआ। उसके सलाहकारों ने तांत्रिकों से सहयोग की बात बताई। सुझाव मिला कि किसी बच्चे की बलि दे दी जाये तो पुत्र प्राप्ती हो जायेगी। राजा ने राज्य में ये बात फैलाई कि जो अपना बच्चा देगा उसे बहुत सारे धन दिये जायेगे। एक परिवार में कई बच्चें थे, गरीबी भी थी, एक ऐसा बच्चा भी था जो ईश्वर पर आस्था रखता था तथा सन्तों के संग सत्संग में ज्यादा समय देता था। परिवार को लगा कि इसे राजा को दे दिया जाये क्योंकि ये कुछ काम भी नही करता है, हमारे किसी काम का भी नही। इससे राजा प्रसन्न होकर बहुत सारा धन देगा। ऐसा ही किया गया बच्चा राजा को दे दिया गया। राजा के तात्रिकों द्वारा बच्चे की बलि की तैयारी हो गई, राजा को भी बुलाया गया, बच्चे से पूछा गया कि तुम्हारी आखरी इच्छा क्या है?

क्योंकि आज तुम्हारा जीवन का अन्तिम दिन है।

बच्चे ने कहा कि ठीक है मेरे लिये रेत मगा दिया जाये, रेत आ गया। बच्चे ने रेत से चार ढ़ेर बनाये, एक-एक करके तीन रेत के ढ़ेर को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया और कहा कि अब जो करना है करे।ये सब देखकर तॉन्त्रिक डर गये बोले कि ये तुमने क्या किया है पहले बताओं। राजा ने भी पूछा तो बच्चे ने कहा कि पहली ढ़ेरी मेरे माता पिता की है, मेरी रक्षा करना उनका कर्तब्य था पर उन्होने पैसे के लिये मुझे बेच दिया। इसलिये मैने ये ढ़ेरी तोड़ी, दूसरा मेरे सगे-सम्बन्धियों का था, उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नही समझाया तीसरा आपका है राजा क्योंकि राज्य के सभी इंसानों की रक्षा करना राजा का ही काम होता है पर राजा ही मेरी बलि देना चाह रहा है तो ये ढ़ेरी भी मैने तोड़ दी। अब सिर्फ मेरे सतगुरु और ईश्वर पर मुझे भरोसा है इसलिये ये एक ढ़ेरी मैने छोड़ दी है। राजा ने सोचा कि पता नही बच्चे की बलि से बाद भी पुत्र प्राप्त हो या न हो क्यों ना इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना ले, इतना समझदार और ईश्वर भक्त बच्चा है। इससे अच्छा बच्चा कहा मिलेगा। राजा ने उस बच्चे को अपना बेटा बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया।

जो ईश्वर और सतगुरु पर यकीन रखते हैं, उनका बाल भी बाँका नहीं होता हैं, हर मुश्किल में एक का ही जो आसरा लेते है। उनका कहीं से किसी प्रकार का कोई अहित नही होता हैं।

❑

बेइज्जती का बदला लेने के लिए इस शख्स ने बना दी थी ये सुपर कार

साभार

दुनिया में बेहतरीन लग्जरी और स्पोर्ट्स कार बनाने वाली कंपनी लैंबॉर्गिनी के बारे में तो सभी जानते होंगे। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि आखिर इस कार की शुरुआत कैसी हुई थी? क्यों हुई थी और किसने इस सुपरकार को बनाया था। लैंबॉर्गिनी दुनिया की सबसे ज्यादा पावरफुल और स्टाइलिश कार है।

दुनिया में बेहतरीन लग्जरी और स्पोर्ट्स कार बनाने वाली कंपनी लैंबॉर्गिनी के बारे में तो सभी जानते होंगे। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि आखिर इस कार की शुरुआत कैसी हुई थी? क्यों हुई थी और किसने इस सुपरकार को बनाया था। लैंबॉर्गिनी दुनिया की सबसे ज्यादा पावरफुल और स्टाइलिश कार है। आइए जानते हैं कैसे इस कार शुरुआत हुई और कैसे बहुत कम समय में इस कार ने खुद दुनिया में खास बनाया।

फेरुचियो लैंबॉर्गिनी

लैंबॉर्गिनी बनाने वाले फेरुचियो लैंबॉर्गिनी का जन्म 28 अप्रैल, 1916 को इटली में हुआ था। फेरुचियो को बचपन से ही मशीनों को ठीक करना और उनके साथ नए-नए प्रयोग करना पसंद था। फेरुचियो इस ध्यान को देखते हुए एक टेक्निकल इंस्टीट्यूट में पढ़ने के लिए चले गए। पढ़ाई पूरी होने के बाद उनकी नौकरी Italian Royal Air Force में लग गई। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद उन्होंने एयरफोर्स की नौकरी छोड़कर ट्रैक्टर बनाने की एक छोटी सी कंपनी शुरू कर दी।

उनकी कंपनी ट्रैक्टर बनाती थी जो कि जो सेना के वाहनों को ढोने के काम करते थे। ट्रैक्टर के साथ-साथ उन्होंने एसी और हीटिंग सिस्टम बनाना भी शुरू कर दिया। इस तरह से फेरुचियो जल्द ही इटली के एक अमीर व्यक्ति बन गए। फेरुचियो को कारों को बहुत शौक था, इसलिए उन्होंने बहुत सी सुपरकार और लग्जरी कारें खरीदी।

यहां से शुरू हुआ सफर

फेरुचियो की सबसे ज्यादा पसंदीदा कार फेरारी 250 जीटी थी और इसी कारण उन्होंने लैंबॉर्गिनी जैसी सुपरकार का आविष्कार भी कर दिया। जब फेरुचियो को फेरारी चलाते वक्त उसमें क्लच की दिक्कत आने लगी तो उन्होंने इसकी शिकायत फेरारी के सर्विस सेंटर पर की, लेकिन किसी ने इस दिक्कत को दूर नहीं किया। बाद में फेरुचियो ने सीधे कार की शिकायत फेरारी के मालिक एंजो फेरारी से कर दी, लेकिन एंजो ने कार की परेशानी को हल करने की जगह फेरुचियो का मजाक उड़ाया और कहा कि कार

में दिक्कत नहीं है, बल्कि इसको चलाने वाले में दिक्कत है। साथ ही उन्होंने ये भी कहा की तुम ट्रैक्टर-बनाने वालों को कार की क्या समझ है। फेरुचियो ने अपनी इस बेइज्जती का बदला लेने के लिए फेरारी से बेहतर स्पोर्ट्स कार बनाने की ठान थी। फेरुचियो ने कार बनाने के लिए मेहनत करनी शुरू कर दी और 1963 में अगाता बोलोनीज में लैंबोर्गिनी स्पोर्ट्स कार का निर्माण कर दिया।

पहली कार, फाइटर बुल

1963 में लैंबॉर्गिनी ने अपनी पहली स्पोर्ट्स कार लैंबॉर्गिनी 350जीटीवी बाजार में उतारी। जिसको लोगों ने खूब पसंद किया। लैंबॉर्गिनी ने कार का लोगो सांड रखा और आने वाले समय में कई कारों को लड़ते हुए सांडों के नाम दिया। आज तक कारों का नाम ऐसे ही रखा जाता है। 1970 तक आते-आते लैंबॉर्गिनी ने कई बेहतरीन कारों को बाजार में उतार दिया। इस दौरान लैंबॉर्गिनी का ट्रेक्टर का व्यापार हलका होने लगा था। लैंबॉर्गिनी ने मियूरा और काउंटैक को बाजार में उतारा, जिन्हें दुनिया में काफी ज्यादा पसंद किया गया।

जब बिकी लैंबॉर्गिनी कंपनी

विश्व में 1974 के दौरान तेल संकट आया तो लैंबॉर्गिनी कार की बिक्री काफी कम हो गई, क्योंकि लैंबॉर्गिनी अधिक तेल की खपत किया करती थी, उस दौरान लोग ज्यादा माइलेज देने वाली कारों को चलाना पसंद करने लगे थे। इसके बाद फेरुचियो ने लैंबॉर्गिनी कंपनी को बेच दिया, लेकिन लोगों को उस दौरान अधिक तेल की खपत करने वाली कारें बिल्कुल पसंद नहीं आ रही थी तो लैंबॉर्गिनी कंपनी के मालिक बदलते गए और अंत में 1990 में फॉक्सवैगन ने इस कंपनी को खरीद लिया और वर्तमान में इसका संचालन फॉक्सवैगन ही कर रही है। 76 वर्ष की उम्र में 28 फरवरी, 1993 को लैंबॉर्गिनी फेरुचियो की मृत्यु हो गई।

वर्तमान में लैंबॉर्गिनी ये 2 कारें भारत में बिक रही हैं।

भारत में फिलहाल लैंबॉर्गिनी के 2 मॉडल उपलब्ध हैं।

1 लैंबॉर्गिनी अवेंटाडोर

2 लैंबॉर्गिनी हुराकेन

❑

अनमोल विचार

1. अवसर तो सभी को जिन्दगी में मिलते हैं, किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीके से इस्तेमाल कुछ ही कर पाते हैं। 2. इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएँ हैं-एक दुख और दूसरा श्रम। दुख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता। 3. जब हम ऐसा सोचते हैं की अपने स्वार्थ की पूर्ती में कोई आंच न आने दी जाय और दूसरों से अनुचित लाभ उठा लें तो वैसी ही आकांक्षा दूसरे भी हम से क्यों न करेंगे। 4. जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं- एक वे जो सोचते हैं पर करते नहीं, दूसरे जो करते हैं पर सोचते नहीं। 5.विचारों के अन्दर बहुत बड़ी शक्ति होती है। विचार आदमी को गिरा सकतें है और विचार ही आदमी को उठा सकतें है। आदमी कुछ नहीं हैं। 6. लक्ष्य के अनुरूप भाव उदय होता है तथा उसी स्तर का प्रभाव क्रिया में पैदा होता है। 7. लोभी मनुष्य की कामना कभी पूर्ण नहीं होती। 8. मानव के कार्य ही उसके विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है। 9. अव्यवस्थित मस्तिष्क वाला कोई भी व्यक्ति संसार में सफल नहीं हो सकता। 10.जीवन में सफलता पाने के लिए आत्मा विश्वास उतना ही जरूरी है, जितना जीने के लिए भोजन। कोई भी सफलता बिना आत्मा विश्वास के मिलना असंभव है।

व्रत त्योहार

ता.	व्रत एवं त्योहार

अप्रैल- 2018

3. चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 21/38
8. शीतला पूजा (बूढ़ा बासोड़ा)
12. बरुथिनी एकादशी व्रत (सर्वे.),श्री वल्लभाचार्य जयंती
13. प्रदोष व्रत
14. मेष संक्रान्ति, मास शिवरात्रि व्रत, वैशाखी पर्व (दिल्ली, पंजाब)
15. पितृकार्ये अमावस्या
16. देवकार्य व सोमवती अमावस्या
17. ऋषि पाराशर जयंती, शिवाजी जयंती,
18. श्री परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया, श्री बांके बिहारी चरण दर्शन (वृंदा.), बद्रीनाथ-केदारनाथ दर्शन प्रारंभ, (चारों धाम)
20. श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती, सूरदास जयंती
21. श्रीरामानुज जयन्ती
22. श्री गंगा सप्तमी
23. श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
24. श्री सीता नवमी (जानकी)
26. मोहिनी एकादशी व्रत (सर्वे.)
27. प्रदोष व्रत
28. नृसिंह जयन्ती
29. कूर्म जयन्ती, पूर्णिमा व्रत
30. बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान पूर्ण, देवयानी यात्रा सांभरलेक (राज.), पीपल पूजन

मई- 2018

2. वन विहार परिक्रमा (वृंदा.), नारद जयंती, शब्बेरात (मु.)
3. चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रा. 22/10
4. टैगोर जयन्ती
8. कालाष्टमी, दादू दयाल पुण्य नरेनाधाम (जयपुर)
11. अपरा एकादशी व्रत (सर्वे.)
13. प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
14. वृष संक्रान्ति रा. 28/25
15. देवपितृकार्य अमावस्या, श्री शनि जयंती, वट सावित्री व्रत
16. अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) प्रारंभ, श्री गिरिराज जी परिक्रमा प्रारंभ (गोवर्धन) पूरे अधिक मास
17. चंद्रदर्शन, रमजान (पाक रोजे) प्रारंभ
25. कमला एकादशी व्रत (सर्वे.)
26. प्रदोष व्रत
29. अधिक मास पूर्णिमा व्रत

सदस्यता फार्म

(यह फार्म भरकर डी.डी./मनी ऑर्डर के साथ भिजवाएं)

हां, मैं 'शाश्वत ज्योति' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/ चाहती हूं।

1 वर्ष 300 रुपये ☐

आजीवन 5000 रुपये ☐

रुपये (शब्दों में) .....

.....

रुपये के लिए 'डिवाईन श्रीराम इण्टरनेशनल चेरीटेबल ट्रस्ट, हरिद्वार (हेतु शाश्वत ज्योति)' के नाम से डी.डी./मनी ऑर्डर नम्बर .....

दिनांक ..... बैंक .....

..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

.....

शहर ..... राज्य .....

पिन कोड ..... फोन .....

फैक्स ..... मोबाइल .....

ई-मेल .....

नोट : एक से अधिक सदस्यता लेने के लिए आप इस फार्म की फोटो कॉपी करवा सकते हैं।

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन- 01334-262600, मोबाइल-09897034165
E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com

यहाँ से काटिये